।। श्रीहरिः।।

श्रीनवनीतप्रियाजी के घर की सेवा रीत पर आधारित...

सेवा प्रणालिका

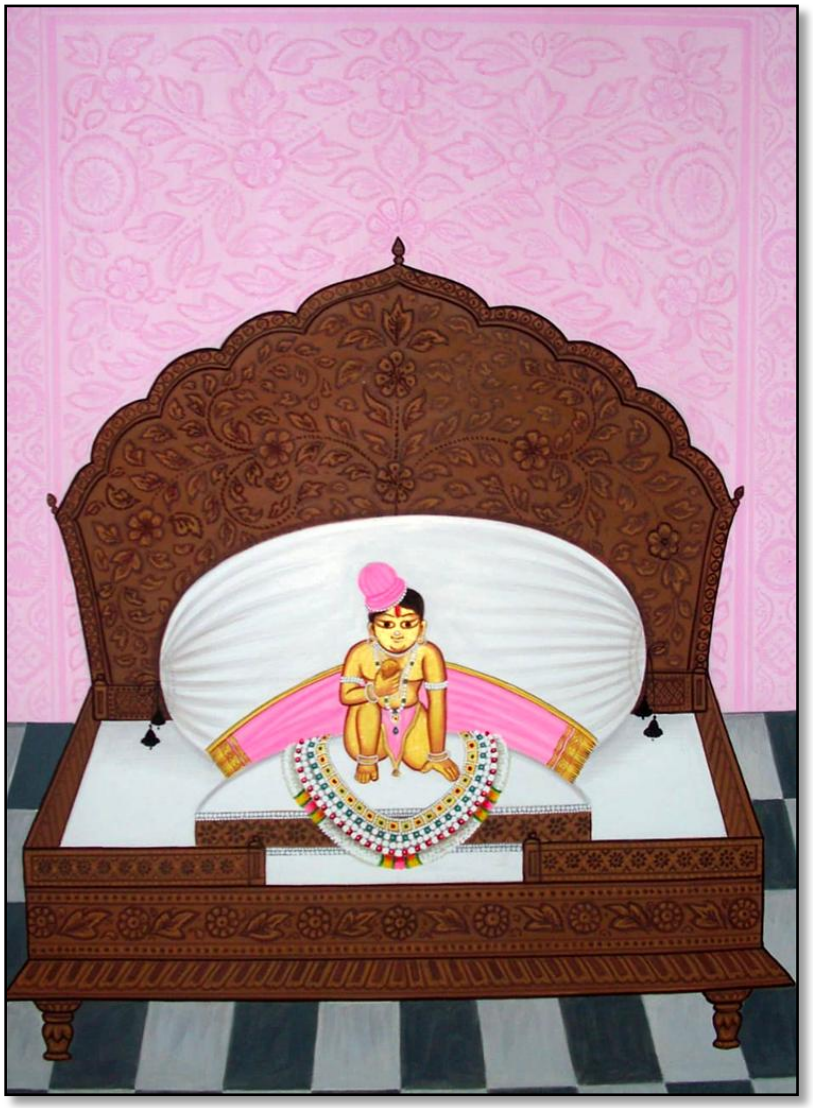

॥ मंगलानुशासन अनंतश्री विभूषित भगवद्प्रियाचार्यः
गोपीपतिरतिमार्ग प्रवर्तकः पुष्टिभक्तिप्रमाणीय त्रैलोक्यगुरुः सार्वभौम वैष्णवाचार्यः
परब्रह्म सिद्धांत वक्तु वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्यः शुद्धाद्वैत साकारब्रह्मवाद संस्थापकाचार्यः
वैश्वानरावतारः महाप्रभुः श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण महासंस्थानम वापीपुरम् ॥

卐 | भक्तिसेतुः | 卐

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी - नवमी

-: जन्माष्टमी - नन्दमहोत्सव :-

मंगला - श्रीप्रभु जागे बेग सो । जागते भये में बधाई गवे आज बडो दरबार । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें । मंगलभोग धरनो ।
वारा सेव के लड्डू को । भोग धरके पंचामृत की तैयारी करनी । भोग सरे आचमन मुखवस्त्र करनो । मंगला आरती होवे ।

पंचामृत :- दूध, दही , घी, बूरा, शहद, कंकू-पीताक्षत, तुलसीदल, ठंडो जल, समोयो गर्म जल, स्नान को पट्टा, शंख, सूखी हल्दी, अभ्यंग की सब तैयारी ।

सूखी हल्दी को अष्टदल मांडनो वापे थाल एवं पट्टा पधरावनो । पट्टा पर कंकू को अष्टदल एवं वापे लाल वस्त्र बिछावनो । श्री प्रभुन कूं सिंगार वडे करके पधरावने पीछे तिलक - अक्षत करनो । निवेदन मंत्र बोलते भये तुलसीदल समर्पित करने । शंख एवं सब डबरियान में तुलसी पत्र पधरावने । संकल्प करनो । फेर पंचामृत श्री आचार्यजी को स्मरण एवं नमन करके प्रारंभ करनो ।
प्रथम दूध फेर दही, घी, बूरा , शहद पीछे फेर दूध एवं छेल्ले ठण्डे जल सू करनो । पीछे अभ्यंग करावनो । अंगवस्त्र करिके फेर अत्तर समर्पित करनो । पीछे श्रंगार के पाट पर श्री कूं पधरावनो ।

श्रंगार - केसरी जामदानी को वागा धरनो । पीछे अंजन करनो । कमलपत्र होवें । फेर सिंगार धरने । कुह्ले चित्र की । पाँच को जोड । पान - तुर्रा हीरा के । मकराकृत कुण्डल । बडे फोंदनो । उत्सव के सब आभरण शीशफूल हीरा को अर्धचंद्र । तीन जोड को भारी सिंगार । कटला, त्रवल, बघनखा सब आवे । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । सिंगार होते भये सिंगार भोग पास में धरनो । प्रभुन कूं सिंघासन पर पधरावने । आरसी दिखाने । चून के दीवला की आरती प्रकटाके प्रभुन कू तिलक अक्षत दो बेर शलाका सूं करनो । पीछे बीरा दो कंकू मे बोर के श्रीप्रभुन के दक्षिण भाग में सिंहासन पर पधरावने । 2 श्रीफल भेंट समेत धरने । तुल्सीदल समर्पने । मुठियावार के आरती करनी ।
सब आपस में तिलक करें ।

राजभोग - आखो पाटिया । मनमनोर के लड्डुआ, बिलसारू, पापड, कचडिया, केसरी फेनी, खीर चोखा की डेढी, भुजेना, 5 भात, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड, कचरिया, वडी के शाक, केसरी सफेद फेनी, बडा की छाछ, सिखरनबडी, भुजेना 4 और रायता दाख को ।
दूधघर मे केसरी-सफेद :- खोपरापाक, बासौंधी, पेडा - बरफी, दोनों प्रकार के दही, मेवाबाटी, गूंजा तथा सब उत्सव की सामग्री धरें ।
भोग सरें आचमन मुखवस्त्र होवें ।
बीरी आरोगें । मालाजी धरें । सब जडाऊ साहित्य आवें । सब साज राजभोग को मंडे। पट चौपड को बिछे । नित्यवत सब क्रम होकर अनौसर होवें ।

उत्थापन - शयन - नित्यवत । शयनभोग धरके नन्दमहोत्सव को पलना साजनो

जागरण - (ये क्रम मंदिर में होवे) शयन पीछे राजभोग दर्शन वत साज मंडे। झुनझुना आदि सू खिलावे । जन्म समय के पंचामृत । महाभोग आवे । महाभोग सरे, आचमन मुखवस्त्र होय। महाभोग की आरती होय ।

<u>नन्दमहोत्सव</u> - पलना में प्रभु बिराजें ।
* नवमी कू सबेरे गोस्वामी बालक तथा नन्दरायजी संग बैठके छट्ठी को पूजन, वसोधारा करें। फेर नन्दमहोत्सव के लिये नन्दरायजी कू हाथ पकड के चौकी पर बिठावें । जसोदाजी कू भी हाथ पकड के पलना पास पधराने । जसोदाजी माला-पीताम्बर धरें, भेंट न्योछावर करें फिर पलना झुलावे बिराजें । सब गोस्वामी बालक, बहूजी बेटीजी जसोदाजी सू आज्ञा मांगके ठाकुरजी कू पीताम्बर धरें, भेंट न्यौछावर करें । नन्दरायजी कू दूर्वा की कलंगी धरायके तिलक, अक्षत करिके, चंदन और दूर्वा सू दही छांट के पूजन गोपी-ग्वाल करें । फेर नन्दमहोत्सव आरंभ होय !
नन्दमहोत्सव की आरती बाद गादीजी मे नन्दबाबा कू दण्डौत और जसोदाजी के चरणस्पर्श होवें । मांदल, गीतनवारी, झांझ बिदा होय जाएँ ।
फेर सेवा मंगलभोग सु प्रारंभ होय । सेवाक्रम नित्यवत चले।
* (नवमी :- श्रीगोकुलनाथजी तातजी के ज्येष्ठ लालजी श्रीकृष्णजीवनजी महाराज को उत्सव)
सामग्री- वारो खिचडिया के नग, आधो पाटिया, नित्यनेग ।

<u>भादों वद 10 - (नियम को श्रंगार)</u>
साज नयो जन्माष्टमी वालो , वस्त्र जन्माष्टमी वाले । श्रंगार जन्माष्टमी के ।
परचारगी को सिंगार श्रंगार मे दुग्दुगी के ठिकाने बगनखा धरें । बडे कंठला नहीं आवें। श्रंगार थोडो जन्माष्टमी सूं हल्को । अनोसर में कुह्ले रहे ।
सामग्री - बूंदी, मेवाभात, कंद तथा नित्यनेग ।

<u>भादों वद 11 - (रीत को सिंगार)</u>
साज नन्दमहोत्सव (चित्र वालो)
केसरी झालर की टोपी वस्त्र केसरी जन्माष्टमी के । वागा नहीं धरें । आभरण उत्सव के । फोंदना छोटे । श्रंगार हीरा माणिक के । कंठला गादी पर एक राधाष्टमी तक नित्य आवे ।
सामग्री - नित्यनेग । पंजीरी - माखन मिश्री की कटोरी आज सूं राधाष्टमी तक आवें ।

<u>भादों वद 12</u>
साज नन्दमहोत्सव (चित्र वालो)
पचरंगी लेहेरिया के वस्त्र, पन्ना के आभरण । बाबरी टोपी ।
(ति.श्रीदाऊजी (तृतीय) कृत नियम को नन्दभवन में पलना को मनोरथ । लालन चौतरा या निजमंदिर के बगीचा में पधारें)
सामग्री- नित्यनेग ।

भादों वद 13
साज फिरोजी
फिरोजी वस्त्र, गुलाबी मीना के आभरण , गोल पाग - फिरोजी कतरा चमकनो ।
सामग्री- नित्यनेग ।

भादों वद 14
श्रीकाका-वल्लभजी को उत्सव
साज पीलो मखमल को, वस्त्र पीली चुनरी के, कसुमल कुलह - जोड रुपेरी चमकना, जूही-वल्लभी-कमल धरें । जोडी माणिक । चोटी धरें । गादी हीरा की, पलंगडी सोना की, अधिकचा आवे। ठाडे वस्त्र मेघश्याम । पुखराज को कटला ।
सामग्री :- वारो फरती गोपाल वल्लभ बूँदी-जलेबी । आखो पाटिया ।
दहीवडा, डेढी खीर, हाँडी, मीठो शाक, मूँग की दाल, पकोडी की कढी, पापड, कचरिया, तिलवडी-ढेबरी ।

भादों वद 30
साज साज नन्दमहोत्सव (चित्र वालो)
कोयली रंग के वस्त्र, हीरा की टोपी बाबरी श्याम । हीरा के आभरण ।
सामग्री- नित्यनेग ।

भादों सुद 1
(श्रीराधाष्टमी की बधाई बैठे)
साज केसरी । केसरी वस्त्र , केसरी गोल पाग, कतरा एक चमकनो, पन्ना के आभरण । हलका श्रंगार । सामग्री नित्यनेग । ठाडे वस्त्र पोपटी ।

भादो सुद 2
साज लहरिया, राजाशाही लहरिया के वस्त्र , हीरा की टोपी - तीन फोन्दना वाली । श्रंगार मध्य को । हीरा की जोडी । सामग्री नित्यनेग ।

भादों सुद 3
साज - वस्त्र अमरसी, समला की टोपी (फिरोजा), आभरण फिरोजा के । सामग्री नित्यनेग ।

भादों सुद 4
(डंडा चौथ)
साज बाललीला को डांडिया को चित्रवालो ।
लाल चौफुली चुनरी के वस्त्र । ताकी टोपी । ठाडे स्वरुपन कू चुनरी की छज्जेदार पाग, लूम की कलंगी, लूम तुर्रा रुपेरी । सूथन पटुका । ठाडे वस्त्र पोपटी । आभरण तडतडी (हीरा के) ।
सामग्री :- बूंदी के लड्डू, चुरमा (सखडी मे) ।

भादों सुद 5
(श्रीचंद्रावलीजी को उत्सव)
साज बाललीला को डांडिया को चित्रवालो ।
वस्त्र पीले एकदाली चुनरी के । चुनरी की कुलह । कुलह पर 3 बादला के तुर्रा ।
(मतलब कुलह पर पान, पान पे 3 ज़री के तुर्रा) हीरा-पन्ना के आभरण । पन्ना की चोटी । पलंगडी पे अधिकचा आवे । ठाडे वस्त्र लाल ।
सामग्री :- मनोर के लड्डुआ, हाँडी , मंडला ।

भादों सुद 6
(बलदेवछठ)
साज लेहेरिया को । वस्त्र पचरंगी लहरिया के । छज्जेदार पाग, हीरा के आभरण, सादा चंद्रिका । कर्णफूल 4 । हलको श्रंगार । ठाडे वस्त्र सफेद । अनौसर में पाग पर शीशफूल रहे । राजभोग मे थाली की आरती ।
सामग्री :- हाँडी, बूंदी-जलेबी, बिलसारू, खीर, बडा की छाछ । मूंग की दाल, पकोडी की कढी । आधो पाटिया ।

भादों सुद 7
साज - वस्त्र कसुमल । गोल पाग, सादा मोरचंद्रिका बांकी , पन्ना के आभरण । सामग्री नित्यनेग । (विशेष : सफेदी वडी होजावे)

भादों सुद 8
(श्रीराधाष्टमी)
साज लाल मखमल जन्माष्टमी वालो ।
अभ्यंग, वस्त्र केसरी जामदानी के, वागा धरें , कुलह केसरी, 5 चंद्रिका को जोड, कमलपत्र होंय, कुण्डल मकराकृति, भारी श्रंगार । श्रंगार मिलमा भारी दुहेरा । कटला नहीं । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । गादी हीरा की , पलंगडी सोना की - अधिकचा आवे । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें ।

* गोपीवल्लभ धरिके श्रीभावनाजी सिद्ध होवें । केसरी साडी, लाल लहेंगा-चोली, जडाऊ के आभरण धरें ।
* राजभोग मे कुंजा-आबखोरा आवे
* माला तिलक के समय धरें सो उत्थापन समय वडी होवे ।
* भावनाजी को थाल आवे ।
* साँझ कू ढाढी-ढाढिन लाडिले लाल के सन्मुख नाचे ।
* कुलह पर ताईत धरके अनौसर होंय ।
सामग्री - बूंदी के लड्डुआ को वारा, एवं पंजीरी । आखो पाटिया ।

5 भात, छडियल दाल, पापड, कचरिया, तिनकुडा, वडी के शाक, बिल्सारू, मठडी, केसरी-सफेद फेनी, खीर चोखा की डेढी, बडा की छाछ, मैदा की पूडी, सिखरनबडी, भुजेना 4 और दूधघर मे खोपरापाक, बासौंधी, पेडा/बर्फी केसरी सफेद तथा सब उत्सव की सामग्री ।रायता दाख को ।
(विशेष : सब समय आरती थाली की एवं जमनाजल की झारी , साज सब जडाऊ ।
राजभोग आये पहले भावनाजी कू 2 माला धरें तथा बीडा धरनो कंकू मे बोरे भये ।
श्रीठाकुरजी कू तिलक पहले होय, फेर भावनाजी को टीकी, गुलाल, अबीर, चोवा, चंदन सू सूक्ष्म खेल होवे । चंदन की आरसी देखें फेर तिलक अक्षत होवें प्रभुन कू । फेर चून के दीवला की आरती, राई-नोंन न्योछावर होवे। फेर श्रीफल एवं भेंट करनी । पीछे थाल सने एवं राजभोग आवे ।
राजभोग सरवे पे भावनाजी के भी आचमन मुखवस्त्र होवें । बीरी संग आरोगें । श्रीभावनाजी को बडे करिके शैय्या मंदिर में पधरावें ।
फेर राजभोग दर्शन खुलें , रूपे के दिवला की आरती। बडी आरसी देखें ।

भादों सुद 9
(रीत को श्रंगार , परचारगी को)
साज - वस्त्र श्रंगार सब वडते । कुलह पर पान धरें, श्रीकंठ में बगनखा आवे । वागा धरें ।
सामग्री - सेव के लडुआ, मेवाभात ।
(विशेष : सांझ कू गादी तकिया पर सफेदी चढ जाए)

भादों सुद 10
साज / वस्त्र कसुमल, गोल पाग, चंद्रिका सादा बांकी, पन्ना के आभरण । हलको सिंगार ।
सामग्री - नित्यनेग ।

भादों सुद 11 (दान एकादशी - ठाकुरजी श्रीकुंवरलाडिलेलाल को पाटोत्सव)
साज - दान के चित्र को
कसुमल वस्त्र, माणक को मुकुट, जोडी माणक की बाकी सब आभरण हीरा-माणिक के, मयूराकृत कुण्डल, फोन्दना बडे भारी श्रंगार । चोटी नही धरें ।
पीताम्बर के उपरना आवें । ठाडे स्वरुप काछ्नी लाल तथा कोयली रंग की धरें, ठाडे वस्त्र सफेद।
* सब समय थाली की आरती, जमुनाजल की झारी ।
* राजभोग तथा संध्या आर्ति में ठाडो वेत्र धरें ।
* राजभोग में ठाकुरजी को तिलक होय । बडी आरसी देखें ।
* माला वडी नहीं होय । पलंगडी की माला वडी होय ।
सामग्री - आज दान की हांडी गोपिवल्लभ मे आरोगें मीठो, खट्टो, छोंक्यो दही की ।
तथा दान एकादशी सों आसो.वद.11 तांई दान की हांडी नित्य राजभोग मे आरोगें - 1 दूध की, 1 मीठे दही की ।
पाटोत्सव की सामग्री - मनोर के लडुआ को वारा, 5 भात, छडियल दाल, पकोडी की कढी, डेढी खीर केसरी, दही वडा, सिखरनवडी, आखो पाटिया हांडी तथा भोग उत्सव वत । रायता दाख को ।
(विशेष : दान एकादशी सों आसो.वद.11 तांई चोटी नहीं धरें)

भादों सुद 12
(वामन द्वादशी - श्रीगोकुलनाथजी तातजी महाराज को उत्सव)
साज केसरी । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें । पलंगडी के अधिकचा आवें ।
अभ्यंग, वस्त्र केसरी मलमल के, कुलह 3 चंद्रिका को जोड, पन्ना के पान तुर्रा, आभरण हीरा/पन्ना के मिलमा । कटला, जूही, वल्लभी, कमल धरें ।
झारीजी जमनाजल की भरें । कुलह धरके अनौसर होंय ।
ठाडे स्वरुप धोती उपरना पे कुलह जोड धरें , ठाडे वस्त्र सफेद ।
सामग्री - वारा सेव के लडुआ को । रायता दाख को, खोवा के गुंजा । दहीभात, मेवाभात, हांडी - जलेबी, तिनकुडा,मूंग की दाल, पकोडी की कढी व भोग उत्सव वत । आधा पाटिया ।
(विशेष - राजभोग मे खंड लगके पंचामृत होवें श्रीबालकृष्णजी के (पंचामृत के ठाकुरजी) । पंचामृत बाद श्रीठाकुरजी के दहिने आडी श्रीबालकृष्णजी को पधराय पीताम्बर,माला, तिलक करी तुल्सीजी समर्पनो । श्रीनवनीतप्रियाजी (ठाकुरजी) को तिलक नहीं होवें ।
उत्सवभोग फलहार को आवे, हांडी, मीठोशाक, दहीवडा, दोनों पना, लीला मेवा की छाब ।
उत्सव भोग सरके फेर राजभोग दर्शन खुलें, आरती थाली की रूपे के दिवला की ।
ठाकुरजी की माला वडी होय, पंचामृत के ठाकुरजी की माला उत्थापन मे वडी होय)

* अगर दान एकादशी एवं वामन द्वादशी भेले होय तो वस्त्र केसरी धरे एवं श्रंगार दान एकादशी को होय । पिछवाई दान की बंधे । अनौसर में कुलह धर के पोढें ।
* अगले दिन वामन द्वादशी को सब श्रंगार होवें श्रंगार धोती उपरना कुलह - 3 को जोड को होय, वस्त्र केसरी ही आवें । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें ।

भादों सुद 13
परचारगी को सिंगार । कुलह की जगह किरीट भी धरे कभी कभी ।
सामग्री - नित्यनेग ।

भादों सुद 14
साज / वस्त्र लाल एकदाली चुनरी के, गोल पाग, आभरण फिरोजा के । श्रंगार हलको ।
सामग्री - नित्यनेग

भादों सुद 15
(सांझी को प्रारंभ)
साज दान को । वस्त्र खसखसी, हीरा को मुकुट, आभरण हीरा/पन्ना के।
ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री नित्यनेग ।
(विशेष :- सांझ कू सांझी को पट्टा आवे । गेंद छडी दो-दो फूल की आवें)

आसो वद 1

साज धनक को । पीले वस्त्र, पीली गोल पाग, कतरा चमकनो, आभरण पन्ना के । श्रंगार हलको । सामग्री - नित्यनेग ।

आसो वद 2

साज गिरिराजजी वालो । कसुमल वस्त्र, कसुमल फेंटा, लोलकबंदी कर्णफूल, आभरण हीरा एवं नीलम के । चंद्रिका एवं बायां कतरा चमकने । श्रंगार मध्य को । सामग्री नित्यनेग ।

आसो वद 3

साज गिरिराजजी वालो । वस्त्र पीले, माणक को मुकुट, माणक के आभरण । श्रंगार भारी । कुण्डल मयूराकृत । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री नित्यनेग ।

आसो वद 4

साज लाल धनक को ।
वस्त्र फिरोजी, श्रंगार टोपी । हलको श्रंगार । आभरण मोती के । सामग्री नित्यनेग ।

आसो वद 5

(श्रीहरिरायजी महाप्रभुजी को उत्सव - रीत को सिंगार)

साज मोरवालो । वस्त्र केसरी (रुपेरी तुइ वारे), फिरोजा को मुकुट, फिरोजा के आभरण, मयुराकृत कुण्डल । चंद्रहार, पवित्रा, कमल धरें । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री - बूंदी-जलेबी, नित्यनेग ।

आसो वद 6

साज लाल एकदाली चुनरी को । पीले लेहेरिया के वस्त्र , पन्ना को मुकुट, पन्ना के आभरण, मयूराकृत कुण्डल । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री- नित्यनेग ।

आसो वद 7

साज-वस्त्र कसुमल धोरा के । श्रंगार टोपी । जोडी हीरा , हलका श्रंगार । सामग्री-नित्यनेग ।

आसो वद 8

(श्रीगोपीनाथजी के पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी को उत्सव)

साज-वस्त्र पीलो । नीलम को मुकुट, कुण्डल हीरा के । जोडी हीरा । नीलम के आभरण ।
पवित्रा, कुमुदनी (नीलकमल माला) धरें । भारी श्रंगार । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री-नित्यनेग ।

आसो वद 9

साज दान को ।
वस्त्र गुलाबी । श्रंगार जडाऊ को टिपारा , पन्ना के आभरण । ठाडे वस्त्र पोपटी ।
सामग्री-नित्यनेग ।

आसो वद 10

(श्रीमिथुनरायजी बावासाहब जन्मदिवस)

साज लाल धनक को । कसुमल वस्त्र (रुपेरी किनार के) फिरोजा को मुकुट । फिरोजा के आभरण । मयुराकृति कुण्डल । पवित्रा,कमल धरें । भारी श्रंगार । ठाडे वस्त्र सफेद ।
सामग्री - हांडी , जलेबी, मूंगकी दाल, पकोडी की कढी ।

आसो वद 11

दान के चित्र को साज ।
वस्त्र श्याम धोरा के, हीरा को मुकुट, हीरा मोति के आभरण । जूही ,वल्लभी , कमल धरें ।
भारी श्रंगार । मयूराकृत कुण्डल । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री - नित्यनेग ।

आसो वद 12

(श्रीआचार्यजी के बडे लालजी श्रीगोपीनाथजी को उत्सव)

साज-वस्त्र कसुमल । 5 चंद्रिका को जोड, पन्ना के आभरण । भारी श्रंगार । चोटी धरें ।
ठाडे स्वरुप - लाल धोती उपरना पे कुलह - 5 को जोड, ठाडे वस्त्र सफेद। कुलह धरके पोढें।
राजभोग आरती थाली की ।
सामग्री - आधा पाटिया, मनोर के लडुआ, हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

आसो वद 13

(श्रीगुसांईजी के तृतीय लालजी श्रीबालकृष्णजी को उत्सव)

साज-वस्त्र केसरी , पिछोडा । केसरी कुलह - जोड चमकनो सुनहरी । माणक के आभरण । श्रंगार भारी । कुण्डल मकराकृत । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । अनोसर मे कुलह धरके पोढे ।
सामग्री - हांडी, तुवर की दाल, पकोडी की कढी तथा नित्यनेग ।

आसो वद 14

साज (चौफुली चुनरी) ठकुरानी तीज वालो ।
पीले धोरा के वस्त्र, श्रंगार टोपी । हलका श्रंगार ।
सामग्री- कुर के गुंजा , नित्यनेग ।

आसो वद 30

(कोट की आरती - सांझी की समाप्ति)

साज महादान को चित्र को ।
वस्त्र श्याम धोरा के । किरीट मुकुट - कुण्डल सादा हीरा के । श्रंगार खांचापुर । चोटी नहीं धरें ।
ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री - नित्यनेग ।
विशेषः- सांझी के पट्टा पे चमक को कोट मंडे । शयन पीछे लाल छापा को चंदरवा बंधे ।

आसो सुद 1
(नवरात्री प्रारंभ - रीत को सिंगार)
साज लाल छापा को ।
अभ्यंग । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, अधिकचा आवे।
गादी हीरा की । वस्त्र लाल छापा के, कसुमल कुलह - 5 चंद्रिका को जोड, चोटी हीरा की ।
मकराकृत कुंडल । गादी को सिंगार दुहेरा । जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
अनोसर मे कुलह धरके पोढे। ठाडे वस्त्र सफेद ।
* आज सू वागा शुरु । वागा संध्या आरती पीछे बडो हो जाये ।
* ठाडे स्वरुप खुंले बन्ध को वागा धरें ।
* शैय्याजी पर छापा की चादर ओढें ।
सामग्री - आखो पाटिया, मनोहर के लडुआ, छाछबडा, हांडी, मूंग की दाल,पकोडी की कढी, तिनकुडा, बडी को शाक तथा भोग उत्सव वत । दशहारा तक दहीबडा आरोगें ।

आसो सुद 2
साज पीले छापा को । पीले छापा के वस्त्र, पीले खूंट को दुमाला । सेहरा ।
फिरोजा के सब जोडी- आभरण । फिरोजा के मकराकृत कुंडल । श्रंगार भारी । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । सामग्री - बाबर, खंडरा की कढी, नित्यनेग ।

आसो सुद 3
साज हरे छापा को झाड वालो ।
हरे छापा के वस्त्र । ग्वाल पगा, मोरशिखा सुनहरी चमकनी । माणिक की जोडी । कुंडल । ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री - बूंदी के लडुआ, सेंव के लडुआ, नित्यनेग ।

आसो सुद 4
साज चित्रकाम की ।
वस्त्र केसरी छापा के, गोल पाग - लूम की कलंगी, कर्णफूल 2, सिंगार खांचापुर ।
ठाडे वस्त्र पोपटी । जोडी पन्ना की । सामग्री - चूरमा, नित्यनेग ।

आसो सुद 5
साज श्याम छापा को । वस्त्र श्याम छापा के । गादी मोती की ।
श्रंगार गोटी पगा (मतलब मोती की कुलह पर पान के ठिकाने एक तुर्रा धरें) मोती को कतरा । जोडी आभरण सब मोती । चोटी , कुण्डल धरें । ठाडे वस्त्र लाल । सींप को कटला ।
सामग्री - पूरनपूडी तथा सखडी में बेसन की गोली को प्रकार होय ।

आसो सुद 6
साज-वस्त्र गुलाबी छापा के । गुलाबी छापा को टिपारा, कतरा चंद्रिका ज़री के । मध्य को सिंगार । श्रीकर्ण मे मत्स्याकृति कुंडल । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । सामग्री नित्यनेग ।

आसो सुद 7
(सरस्वती पूजन)
साज फिरोजी छापा को । वस्त्र फिरोजी छापा के । केसरी छापा की गोल पाग, कतरा एक चमकनो । हीरा के आभरण । श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र गुलाबी ।
सामग्री - पपची एवं सेव को आधापाटिया, नित्यनेग ।

आसो सुद 8
साज सफेद छापा को । सफेद छापा के वस्त्र । सुनहरी डांक को मुकुट । पन्ना-हीरा के मिलमा आभरण । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री - मनोहर के लड्डुआ, नित्यनेग ।

आसो सुद 9
साज लाल छापा । लाल छापा के वस्त्र । लाल गोल पाग, चंद्रिका। पन्ना के आभरण, श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र पीले । सामग्री - दहीथरा, नित्यनेग ।

आसो सुद 10
(दशहरा - श्रीगिरिधरजी के बडे लालजी श्रीमुरलीधरजी को उत्सव)
साज सफेद ज़री को ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें , अधिकचा आवें ।
गादी हीरा की । मंगला में सफेद छापा को उपरना ओढे । अभ्यंग । सफेद ज़री के वस्त्र ।
चीरा की पाग, सादी चंद्रिका । कर्णफूल 4 माणिक के । सिरपेच पटिया को । लूम माणिक की । श्रंगार भारी, चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें। जोडी माणिक। ठाडे स्वरुप तलवार कटार धरें , ठाडे वस्त्र हरे । पाट पर सतरंज बिछे । अनोसर में चीरा धरके पोढे ।
* निजतिबारी मे राजभोग समय आज सू नित्य गाय मंडे (गोपाष्टमी तक)
* अन्नकूट सामग्री (भट्टी पूजा) हेतु रसोई के मुखिया कू बीडा झिलाय आज्ञा देनी ।
* सांझ कू उत्थापन भोग धरके जवारा की कलंगी पीले रेशम के डोरा सूं बांधनी ।
तिलक की तैयारी करनी वामें कंकू, अक्षत, गुलाबजल, शलाका, बीडा 2 कंकू लगाय के एवं तुलसीदल राखने ।
* आज से मंगला निजमंदिर मे होंय । आरती भीतर सू होय ।
* आजसू शयन मे आडबन्द बन्द होय, वागा हमेशा रहे । पोढते समय वडो होय ।
* आज शयन मे 2 माला गुलबास की धरें । आज से शयन मे 2 फूलमाला धरें, माला को जोड बन्द होय ।
* शैय्याजी पर कारचौब के अधिकचा आवें । स़फेद जरी की चादर आवे ।

जवारा धरवे को क्रम - भोग सराने । खंड खिलोना सहित रहे । घंटानाद होय । तिलक अक्षत होय । पीछे चंद्रिका विजय करनी, और वहां जवारा की कलंगी धरावनी । थोड़े खुले जवारा चरणारविंद में पधरावने । तुलसीजी समर्पने । बीडा जेमनी आडी बंटा के पास धरने ।.....
श्रीमहाप्रभुजी कू तिलक होय, जवारा धरें । आरती चून के दीवला की, कुम्कुम के अष्टदल वाली ।

आरती भोग तथा माठ के उत्सव भोग संग धरने । उत्सव भोग में विशेष मे 10 माठ आवें । बाकी सब दूधघर की सामग्री भी आवे । भोग धरें पीछे दशहरा पूजन होवे । (आकासी दीप चढे कार्तिक सुद पूनम तक रहे) । संध्या आरती रसेले दीवला की, थाली की दशहरा मंडी भई होय ।
श्रंगार बडे भये पीछे वागा धरें ,चीरा पे ताईत धरें तथा जवारा की कलंगी नई।
सामग्री - आखो पाटिया, हांडी, खीर, बडा की छाछ, कन्द । मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत । दशहरा को गो.व. - खोवा के गुंजा । श्रीमुरलीधरजी के उत्सव को गो.व. बूंदी-सकलपारा को ।

* कन्द धरें पर सकरकन्द देव प्रबोधिनी सूं प्रारंभ होवे ।
* श्रीमुरलीधरजी को उत्सव अलग होय तो साज/वस्त्र सफेद ज़री के, श्रंगार चीरा पे कांच के जवारा धरें । आभरण पन्ना के । सामग्री - हांडी, बूंदी-सकलपारा । आखो पाटिया । तिनकुडा, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत । उत्सव साथ होवे तो सब सामग्री साथ ही आवे ।

<u>आसो सुद 11</u>
साज महारास को चित्रवारो।
* मंगला मे जरी के आत्मसुख धरके बिराजे आज सूं (फडका के वागा) ।
* रास के दिनों मे मुकुट धरें तब चोटी नहीं धरें ।
वस्त्र केसरी मलमल (रुपेरी तुइ वारे), श्रंगार डांक को मुकुट । मयुराकृति कुण्डल ।
आभरण सब माणिक के । भारी श्रंगार । ठाडे वस्त्र सफेद ।सामग्री - नित्यनेग ।

<u>आसो सुद 12</u>
साज महारास को चित्रवारो।
वस्त्र लाल ज़री के, पन्ना को मुकुट, पन्ना के आभरण । श्रंगार भारी । मयुराकृत कुण्डल ।
ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री - नित्यनेग ।

<u>आसो सुद 13</u>
साज श्याम ज़री को । वस्त्र श्याम ज़री के, चीरा पे जमाव को कतरा । हीरा की जोडी ।
श्रंगार मध्य को । ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - नित्यनेग ।

<u>आसो सुद 14</u>
साज सफेद ज़री, टिपकी तारा को ।
सफेद ज़री के वस्त्र । हीरा को मुकुट, मयुराकृत कुण्डल । हीरा की जोडी । ठाडे वस्त्र सफेद ।
शयन मे खिडकी की पाग धरके विराजें (श्याम खिडकी) । सामग्री - नित्यनेग ।

आसो सुद 15
(शरद पूर्णिमा)

साज/वस्त्र सफेद ज़री कारचौब के ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होंय, सफेद कारचौब के अधिकचा आवे ।
अभ्यंग । कमलपत्र होंय। गादी हीरा की । पूरे दिन झारी जमनाजल की ।
सफेद ज़री के वस्त्र । हीरा को मुकुट आवे । शीशफूल अर्धचंद्र हीरा को ।
जोडी हीरा, मकराकृत कुण्डल हीरा के । कस्तूरी की माला। भारी श्रंगार - जूही, वल्लभी, कमलमाला । गादी को श्रंगार दुहेरा ।
ठाडे स्वरुप :- मेघश्याम चोली, सूथन-काछनी सोनेरी-रूपेरी ज़री की, उपरना पीताम्बर के ओढे, लालन ओढनी के ऊपर पीताम्बर धरें । चोटी नहीं धरें ।
सांझ कू शरद की आरती पीछे श्रंगार विजय होके सफेद पाग (श्याम खिडकी) ताईत धरके पोढें । निज तिबारी मे पोढें । आभरण, सामग्री सब शैय्या के पास छाब मे पधरावने । अनौसर मे कमलपत्र रहें । पूरे दिन तथा शैयाजी मे नित की झारी जमनाजल की ।

* सांझ कू श्रंगार विजय नहीं होंय । शयनभोग धरके चौक खासा करनो । सब सफेद बिछात करावनी, शरद को साज आवे । सिंहासन, खंड पाट लगावनो । गुलाबदानी, चंदन की बरनी सब जडाऊ आवे । बीरा अधकि आवे । श्री कूं पधरावने, भोग पास मे धरने । झारीजी पर सफेद नेवरा आवें । मुकुट पर चांदनी आवे तब आरती होवे । न्योछावर राई लोन होवें ।

सामग्री - आखो पाटिया । हांडी, मनोहर के लड्डुआ तथा भोग उत्सव वत।
रात्री को शरद मे दूध की हांडी, खाजा, घेवर, बूरा भुरक्या, चोखा को मगज, चोखा की खीर, सिखरनबडी, छाछबडा, बिलसारू, फल सब तरह के, मेदा की पूरी, खरखरी, गूंजा एवं सब दूधघर की सामग्री ।

कार्तिक वद 1
(दूसरी शरद)

साज-वस्त्र, श्रंगार सब शरद पूर्णिमा के ही होवे । ओढनी के ऊपर पीताम्बर नहीं धरें ।
सांझ कू बेग शंखनाद होयके 5 बजे तक शयन होंय । आज संध्या आरती पीछे श्रंगार बडे होंय । शयन मे ठाकुरजी चौक मे रास चोंतरा पे बिराजें । अनोसर मे श्याम खिडकी की पाग धरे ।
* श्रीनवनीतप्रियाजी मे आज शरद के दर्शन होंय (शयन समय) । सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक वद 2

दशमी को श्रंगार -

वस्त्रानुसार पिछवाई झाड की ।
सफेद सुनहरी कारचौब के वस्त्र, चीरा पे लूम की कलंगी । पन्ना की जोडी । श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र लाल ।
* आरती आज से अन्नकूट तक शयन मे थाली की होय ।
सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक वद 3

साज पीली ज़री को ।
वस्त्र पीली ज़री के, पीलो दुमाला । चंद्रिका एवं कतरा सादा । आभरण हीरा मोती के ।
श्रंगार मध्य को । अनोसर मे पाग रहे । सामग्री- नित्यनेग । ठाडे वस्त्र श्याम ।
* ये श्रंगार होय जब सूं सांझ कूं शयन में गोवर्धन लीला गवें (अपने अपने टोल) ।

कार्तिक वद 4

श्रीकाकावल्लभजी के सप्तम पुत्र, श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव (द्वादशी को श्रंगार) -

साज वस्त्र, चीरा - पीली ज़री के । कर्णफूल 4 , पन्ना के आभरण, । श्रंगार मध्य को । चंद्रिका चमकनी सुनहरी । ठाडे वस्त्र हरे । अनोसर मे पाग रहे । सामग्री- मेवाभात, नित्यनेग ।

कार्तिक वद 5

(राते पियरे टिपारे को सिंगार)

साज - श्याम साटिन सफेद गाय वारो ।
लाल ज़री के वस्त्र । लाल ज़री के वस्त्र को टिपारा, पीली ज़री के तुर्रा । चंद्रिका कतरा सादा ।
फिरोजा के आभरण । कुण्डल मकाराकृत । श्रंगार भारी । ठाडे वस्त्र पीले । सामग्री- नित्यनेग ।
* राजभोग मे कीर्तन होय - मदनगोपाल गोवर्धन पूजत ।

कार्तिक वद 6

(धनतेरस को श्रंगार) -

साज वस्त्र - हरे ज़री सरी वारे । चीरा पे सादी चंद्रिका । माणक के आभरण । कर्णफूल चार ।
श्रंगार भारी - चंद्रहार, कली एवं कमलमाला धरें । ठाडे वस्त्र लाल । सामग्री - नित्यनेग ।

कार्तिक वद 7

साज-वस्त्र केसरी ज़री । मुकुट को श्रंगार । कुण्डल मयुराकृत । चोटी धरें । ठाडे वस्त्र सफेद ।
पन्ना के आभरण । सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक वद 8

(रूपचौदस के श्रंगार) -

साज वस्त्र लाल ज़री सरी वारे । चीरा पे सादी चंद्रिका । जोडी हीरा की , 4 कर्णफूल । जोडी हीरा, श्रंगार भारी - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । सामग्री-नित्यनेग ।

कार्तिक वद 9

(दिवाली के श्रंगार) -

साज-वस्त्र सफेद ज़री के टिपकी वारे । श्रंगार कुलह को, जोडी हीरा/माणिक मिलमा । मोपंख को जोड पांच को । मकराकृत कुण्डल । श्रंगार भारी - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । चोटी धरें । ठाडे वस्त्र अरगजी पीले । सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक वद 10

(आज सू तिलकायत के श्रंगार शुरु)

साज-वस्त्र सफेद ज़री कारचौब के । श्वेत चीरा पे लूम की कलंगी । श्रंगार हलको, जोडी पन्ना । अनोसर मे चीरा रहे । सामग्री- मनोर के लडुआ, नित्यनेग ।

* आज शयन मे कांच के बंगला मे बिराजे । न्योछावर होय ।
* आज से शयन मे लूम तुर्रा , ताईत धरके बिराजें ।
* आज से सफेदी उतरे सो कार्तिक सु. 3 कू चढे ।
* चौदस की दिवाली होय तो ये श्रंगार नवमी सू प्रारंभ होजाये ।
* आज राजभोग मे कांच को बंगला आवे । बिना गुम्बज को ।
* आज से भाई बीज तक चीरा अनोसर मे रहे । आज से शयन मे रोशनी होय ।
* आज से श्रीमहाप्रभुजी की पलंगडी सोने की और अधिकचा भाईबीज तक आवे ।

कार्तिक वद 11

(बडी सेवा)

साज-वस्त्र श्याम जरी सरी वारे । श्याम चीरा पे जमाव को कतरा । कर्णफूल 4 । हीरा की जोडी । श्रंगार खांचापुर । अनोसर में चीरा रहे। सामग्री- बूंदी के लडुआ, नित्यनेग ।

* राजभोग सू संध्या आरती 1 बंगला कांच को गुम्बज वालो आवे ।
* दिन मुहुर्त देख के अन्नकूट की रसोई में कढाई को मुहुर्त होवे ।
* शयन मे त्रवल के सिंगार होयके तिबारी मे हटडी होवे । न्योछावर होय ।

कार्तिक वद 12

(वाघ बारस)

साज-वस्त्र पीली ज़री । चीरा । सुनहरी चमकनी चंद्रिका । कर्णफूल 4 । पन्ना की जोडी । चंद्रहार, पवित्रा एवं कमलमाला धरें ।

* राजभोग मे चांदी को 1 बंगला आवे (बिना गुम्बज को)
* शयन मे बगीचा मे कांच की हटडी मे बिराजें, दीपदान होवें । न्योछावर होय ।

* टाटवाफीकी के तकिया की और सब खोली चढे ।
सामग्री- मेवाबाटी, नित्यनेग ।

कार्तिक वद 13
(धनतेरस)
साज-वस्त्र हरे ज़री सरी वारे । तीनों दिवालगिरि चंदरवा चढे ।
चीरा पे सादा चंद्रिका । कर्णफूल 4 । चंद्रहार, कली, कमलमाला धरें । भारी श्रंगार । अनोसर मे चीरा रहे । आरती मंगला से शयन तक थाली की ।
* राजभोग मे 3 बंगला चांदी के गुम्बज वाले आवे ।
* उत्थापन सू चौतरा पर कांच के बडे छज्जा मे सांगामाची पर बिराजें ।
* शयन मे लूम-तुर्रा धरके बिराजें, शयन मे रोशनी होय । न्योछावर होय ।
* शैय्या मे अधिकचा चढे ।
सामग्री - आधा पाटिया, फेनी, संजाब की खीर, छाछबडा, बिल्सारू, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, बडी को शाक तथा नित्यनेग ।

कार्तिक वद 14
(रूप चौदस)
साज लाल दिवाली वालो । गादी हीरा की । श्रीमहाप्रभुजी आभुषण धरें ।
सुनहरी फूरकसाई के वस्त्र, चीरा । सादी चंद्रिका । कर्णफूल 4 , हीरा की जोडी ।
सीसफूल पर हीरा को अर्धचन्द्र । उत्सव के भारी श्रंगार - जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें।
आरती मंगला से शयन तक थाली की । कुंजा आबकोरा सब जडाऊ साज आवे । सांझ कू सब क्रम चौतरा पर बडी सफेद कांच की हटडी मे होय । फूल के पडगा आवें ।
* आज मंगला बेग सो होवें ।
* अभ्यंग चून के 4 दीपक की रोशनी मे होय ।
* बडो अभ्यंग होवे । स्नान के पट्टा पर श्री कूं पधराके बीडा 2 धरके तिलक अक्षत प्रभु कूं करने । पीछे अक्षत बडे करके अभ्यंग कराने ।
* राजभोग मे 3 बंगला चांदी के ।
* आज से सब समय निजमंदिर मे बिराजें ।
* आरती मंगला से शयन तक थाली की ।
* भोग, संध्या, शयन तक सब क्रम हटडी मे होय । शयन आरती बाद श्रंगार बडे होय ।
* शयन आरती हटडी मे खिलोना सब जडाऊ । न्योछावर होय ।
* मूडाजी के वस्त्र लाल आवें ।
सामग्री- आखो पाटिया ,ठोड, मठडी, छाछबडा, संजाब की खीर, बिलसारू, मूंग की दाल , पकोडी की कढी, बडी के शाक तथा भोग उत्सव वत ।

कार्तिक वद अमावस्य
(दिपावली)

साज-वस्त्र सफेद फूरकसाई को । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, अधिकचा आवे । गादी जडाऊ की । श्री कूं अभ्यंग होवें । कमलपत्र । सफेद ज़री फुरकसाई के वस्त्र- वागा चाकदार, कुलह ऊपर 5 चंद्रिका को जोड । बडे फोंदना, तीन जोडी के भारी श्रंगार होवें । सीसफूल हीरा को, कुण्डल लाल मकराकृत । कस्तूरी की माला धरें । गादी के श्रंगार दुहेरा, चंद्रहार, कली, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । वाके ऊपर कंठला हमेल । चोटी माणिक की । वेणु वेत्र जडाऊ । ठाडे वस्त्र चंपई (पीले) ।

* सब साज खिलोना सोना/जडाऊ के, कुंजा आबकोरा आवें । पूरे दिन झारी जमनाजल की ।
* मंगला से शयन तक 3 बंगला - सोना चांदी के आवें । पूरे दिन आरती थाली की । अनोसर नित्यवत ।

सांझ की सेवा नित्यवत । श्रंगार विजय नहीं होंय (शयन भोग श्रंगार सहित आरोगें) । शयन भोग सराय श्रीठाकुरजी कू निजमंदिर सिंहासन पर पधराय माला और बीडा धरने । कुमकुम के अष्टदल की आरती होवे । छोटे स्वरुपन कू हटडी मे झारी, बीडा-बंटा सहित पधराने तथा श्रीठाकुरजी कू चकडोल मे पधरावने ।

* कानजगाई को प्रकार :-

श्रीठाकुरजी कू चकडोल मे पधरावने ।
दर्शन खुलें...श्री कूं पधरावते जानो ओर बीरी आरोगावते जानो । गोर्धनचौक पधारकर केसरी हांडी आरोगें । गाय कू प्रसाद खिलानो । गाय के कान मे कहनो के कल गोवर्धन पूजा है सो खेलवे आईयो । फिर श्री कूं बीरी आरोगावते भीतर पधरावने ।

* हटडी मे पधराय के दर्शन खोलनें।

2 बीडा आरोगें । हटडी मे सब साज जडाऊ साहित्य आवें । आरती, राईलोन-न्योछावर होवे । टेरा आवें । भीतर चौपड की आरती के लिये गादी सहित श्री कूं शैय्या मंदिर में शैय्याजी पे पधरावने । वेणु-वेत्र धरके आरसी देखें, भेट-न्योंछावर होय । आरती चौपड मंडी भई, चून के दिवला की चार मुठिया वार के होय । मोरपंख को जोड और श्रीअंग की मालाएं बडे करके वागा सहित पोढावने । श्रीमस्तक को सब श्रंगार रहे । श्रीअंग पे हांस, 1 त्रवल, 1 माला मोती की रहे ।
अनोसर मे सब विशेष सामग्री अधकि मे पास आवे ।

सामग्री - सेव के लडुआ, दिवला ।
हांडी, मीठो शाक, दूधघर को दिवला तथा दूधघर की सब सामग्री ।
आखो पाटिया, तिनकुडा, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, खीर की गागर - संजाब की । दहीबडा, बिलसारू, पापड-कचरिया, तिलवडी-ढेबरी तथा भोग उत्सववत ।

<u>कार्तिक सुद 1 (अन्नकूट)</u>

श्री कूं जगायके ओढनी ओढावनी । मंगलभोग आवे । भोग सरे पीछे थाली की आरती होवे । स्नान होय । कमल पत्र होंय । सिंगार सब दिवारी को आवे । बडे हमेल नहीं धरे । गोकर्ण लाल ज़री के धरें, चोटी आवे । आरसी देखें । राजभोग आवें । भोग सरायके बीडी आरोगे, माला धरें । सब साज मण्डे , राजभोग आरती थाली की होय ।

गोवर्धन पूजा को प्रकार :-

पीछे भीतर ही श्रीठाकुरजी तथा श्रीगिरिराजजी कू चकडोल मे पधरावने ।

पीछे पीतांबर श्रीठाकुरजी के बांई आडी ओढावनो माला के नीचे । श्रीगोवर्धन पूजन के कीर्तन होय । कीर्तन होते मे श्रीठाकुरजी बीरी आरोगते पधारें । आधी बीरी आरोगें। गोर्धनचौक पधारते ही दूध की हांडी आरोगे ।

श्रीगिरिराजजी कू गोवर्धन-पर्वत पर, लाल पीतांबर के आसन पे पधरावने । फिर दंडवत करिके श्रीगिरिराजजी कू तिलक, अक्षत, तुलसीजी समर्पनो । आचमन प्राणायम करनो,फिर संकल्प करके जल-अक्षत छोड देनो ।

प्रथम श्रीगिरिराजजी कू मानसीगंगा से स्नान करावने । फिर दूध और दही सू स्नान करावने । (छेल्ले 2 शंख फिरसू दूध सू स्नान होय), अरगजा सू स्नान करायके जल सू स्नान करावनो । फिर वही पर्वत पे पीतांबर के आसन पे पधरायके ऊपर सू पीतांबर ओढावनो । माला धरावनी । उपरना धरानो, झारीजी जमुनाजल की धरनी । कुनवारा भोग आवे , तुलसी समर्पनी । धूप-दीप-शंखोदक होय । समय होय भोग सरे, आचमन मुखवस्त्र होय । 2 बीडा धरने । आरती 3 खण्ड की होय । न्योछावर 2 रुपया होय । कुमकुम और हल्दी के थापा होय । परिक्रमा 4 होवे । फिर श्रीगिरिराजजी को संग पधरायके श्रीठाकुरजी बीडी आरोगावते अन्दर पधरावनें । टेरा आवें ।

भीतर कुमकुम के अष्टदल की आरती चून के दिवला की होवे । फूल उडे । राईलोन न्यौछावर होय । फिर श्रीठाकुरजी कू सिंहासन पर पधरायके शीतलभोग आवे । और अन्नकूट भोग साजने ।

अन्नकूट भोग धरवे को प्रकार :-

वर्षभर मे की सब सामग्री यथाशक्ति सो करनी । सबसू आगे दूधघर, पीछे अनसखडी और वाके पीछे सखडी भोग धरने । सखडी भोग के मध्य मे कोरी हल्दी को अष्टदल मांड के वापे छाब पधराके वामे कुंडा में पाटिया की सेव पधराके वाके ऊपर भात को कोट साजनो । कोट के ऊपर मध्य मे शिखर, आजू बाजू चार गूंजा आवे । चार गूंजा एक प्रभु सम्मुख मध्य मे एवं एक शिखर के पीछे एक और दो अगल बगल । पीछे तुलसी की माला कोट पर आवे । जल की अधकि की मथनिया प्रभु के पास शीतलभोग सरायके साजनी । और अन्नकूट के भोग धरने । चार घडी का समय (अंदाजन डेढ घंटा पक्के) । समय भये भोग सरावने । दर्शन खुलें ।

आरती सोने के दिवला की होय । आरती बाद शिखर और घी को चमचा वडो होय ।

श्रीठाकुरजी कू खुले दर्शन मे भीतर निजमंदिर पधरावने । समय होय तो अनौसर होय, नहीं तो चालू सेवा रहे । संध्या आरती होने के बाद श्रंगार बडे होवें । सुपेद ज़री को चीरा और ताईत धरें । शयनभोग आवें । शयन आरती थाली की होय । अनौसर मे सुपेद ज़री को चीरा और ताईत रहे ।

कार्तिक सुद 2
(भाईदूज)

साज लाल ज़री को । वस्त्र लाल ज़री लप्पा के ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होंय, अधिकचा लाल ज़री को आवे ।
अभ्यंग - अंजन होंय । लाल खीनखाप को वागा, ओढनी । ज़री को चीरा, सादी चंद्रिका ।
2 कर्णफूल, पन्ना की जोडी । श्रंगार हलको उत्सव को ।
गादी पर सब उत्सव की माला धरें, हार नहीं । अनौसर मे चीरा रहे ।
ठाडे स्वरुप के लाल खीनखाप को घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद ।
* राजभोग धरते समय झारी जमनाजल की आवे ।
* राजभोग धरते समय मालाजी धरें सो उत्थापन मे बडी होवे ।
* राजभोग की सामग्री प्रभु सन्मुख साजके कोर दाल सू साननो । पीछे हाथ धोयके सब स्वरुपन कू तिलक-अक्षत करनो । बीडा 2 कंकू लगायके धरने पीछे आरती चून के दिवला की चार मुठिया वारके करनी । न्योछावर पीछे तुलसी समर्प के भोग धरने ।

सामग्री - आधा पाटिया, आखे मूंग की खिचडी, बंध्यो दही, पापड, बिलसारू, छाछबडा, संजाब की खीर, बडी को शाक, दहीभात । मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

कार्तिक सुद 3

साज गिरिराजधारण की पिछवाई । सफेदी चढे ।
सफेद ज़री के वस्त्र, चीरा पे जमाव को कतरा । माणिक की जोडी, श्रंगार हलका ।
शयन मे पाग सादी । सामग्री - नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 4

साज गिरिराजजी वालो ।
वस्त्र पीली ज़री के, श्रंगार चीरा पे कतरा । जोडी हीरा की, हलका श्रंगार ।
अनोसर मे सादा पीली पाग धरें । सामग्री - नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 5
(लाभ पांचम)

साज-वस्त्र सफेद ज़री के । श्रंगार सफेद ज़री को टिपारा । बीच मे सफेद ज़री के गोकर्ण एवं सादी चंद्रिका । आजू बाजू सादा कतरा । जोडी पन्ना - मयुराकृत कुण्डल, चोटी धरें । भारी श्रंगार - चन्द्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । सामग्री - नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 6

साज-वस्त्र श्याम ज़री के । चीरा पे कतरा ज़री को । फिरोजा के आभरण, शृंगार हलको ।
सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 7

साज, वस्त्र हरे ज़री के । गोल चीरा पे सादा चंद्रिका । माणिक के आभरण, श्रंगार हलको ।
सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 8

(गोपाष्टमी)

साज श्याम साटन पर सफेद कसीदा की गाय ।
श्रीमहाप्रभुजी के पलंगडी सोना की, अधिकचा आवे ।
वस्त्र सुनहरी ज़री के । बडो हीरा को मुकुट । आभरण सब हीरा के, कुण्डल मकराकृत धरें ।
कस्तूरी की माला धरें । भारी श्रंगार दुहेरा - चंद्रहार, कली,जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
चोटी नहीं धरें । पट वाघ बकरी को मंडे । अनोसर मे लाल कुलह धरें ।
(ठाडे स्वरुप के सूथन लाल, मेघश्याम चोली, काछनी लाल-हरी, ठाडे वस्त्र सफेद एवं पीताम्बर को उपरना (रासपटुका की तरह धरें)।
सामग्री- हांडी । मनोर के लडुआ, खीर संजाब की, बिलसारू, छडियल दाल (मूंग की पीली), पकोडी की कढी, दहीभात, बडी के शाक, पापड-कचरिया ।

कार्तिक सुद 9

(अक्षय नवमी)

साज - बडी गायन वारी चित्रकाम की साज-पिछवाई ।
अन्नकूट के श्रंगार होवें । लाल ज़री के गोकर्ण । जोड पांच को । कटला नही धरें ।
* पलना समय पलना कूं मध्य मे पधरायके परिक्रमा देनी ।
* राजभोग सू संध्या आरती तुलसीजी की वनमाला आवे ।
* अनोसर मे केसरी कुलह धरें ।
सामग्री- हांडी । ठोड, मठडी, बूंदी के लडुआ, मीठे पेठा को बिलसारू, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

कार्तिक सुद 10

साज-वस्त्र लाल लिस्मा ज़री के । चीरा पे सादी चंद्रिका । श्रंगार हलको । सुनेरा के आभरण ।
श्रंगार हल्को । शयन मे पाग सादा लाल । सामग्री-नित्यनेग ।
* सफेदी बडी होय ।
* रजाई, गद्दल, आत्मसुख आदि शीतकालिक साहित्य की तैयारी करनी ।

कार्तिक सुद 11

(देव प्रबोधिनी एकादशी)

साज-वस्त्र सुनहरी फूरकसाई ज़री के । तीनों चंदरवा दिवालगिरि चढे ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होंय, अधिकचा आवे ।
अभ्यंग उबटन होय । कमलपत्र होंय । आत्मसुख लाल धरें । सुनहरी फूरकसाई ज़री के वस्त्र ।
कुलह को सिंगार, जोड 5 को । मकराकृति कुण्डल, भारी श्रंगार - कस्तूरी की माला धरें । सब

उत्सव के आभरण आवे - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला, कटला धरें । लाल सीसफूल हीरा को अर्धचंद्र धरें । छोटी लाल मणी लीली मणी की त्रवल श्रीअंग पर आवे, गादी पर त्रवल नही धरें । चोटी नहीं धरें ।
सामग्री - (राजभोग मे) पाटिया, बैंगन के शाक, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, पापड-कचरिया और भोग उत्सव वत ।

* झारीजी पर लाल पटवस्त्र आवें आजसूं नित्य (आच्छादन) ।
* सिंहासन के नीचे रुई की गादी बिछे ।
* लाल रुई को आत्मसुख वागा के भीतर नित्य आवे ।
* चोटी बन्द आज सू ।
* गुड की कटोरी राजभोग मे नित्य आवे ।
* मंडप मांडनो ।
* मण्डप सवेरे को होय तो ग्वाल मे डबरा आरोगायके पधरावें ।
* सांज कू मण्डप होय तो मण्डप को सब क्रम होयके शयनभोग आरोगवे पधारें ।

देवोत्थापन के समय की तैयारी -
साठा को मंडप बंधावनो । चार छाब तैयार करनी वामे प्रत्येक मे सांठा के टूक, बैंगन, शकरकन्द, बोर, सिंहाडा, चणा की भाजी पधरावनी । चारों छाब मण्डप के चारो कोना मे धरनी ।
गद्दल तैयार राखनो । अंगीठी प्रकटावनी । घी के 16 दिया जोडके रखने ।
श्रीठाकुरजी को मंडप मे पधरावने । झारीजी पधरावने । अब सावधानी सू तीन बिरिया श्रीठाकुरजी को चौकी सुद्धा उठावने पीछे दण्डवत करि छोटे ठाकुरजी कू स्नान के चांदी के पट्टा पर पधरायके तिलक करनो, बीडा 2 धरने । फिर संकल्प करी पंचामृत करावने, शुद्धस्नान कराने ।
छोटे ठाकुरजी कू श्रीठाकुरजी के जेमनी आडी पधरायके पीतांबर, माला-बीडा, तिलक करनो ।
ता पाछे फरगुल और गद्दल कू अंगीठी दिखायके धरने । झारीजी पर लाल आच्छादन धरनें ।
चंदन सू माला खिलानी एवं चरणार्विंद मे तुलसी समर्पे । टेरा आवे , भोग धरने ।
तुलसी पूजन करनो ।

मण्डप के भोग मे - जलेबी, सकलपारा, दहींबडा, शिखरनबडी, संधाना, बिलसारू, रतालू , फराल को सब आवे ।
सांठा के टूक, सांठा को रस, लीला मेवा, पना आवें । शंखोदक- धूपदीप करें ।
समय भये भोग सराय वेणु-वेत्र धराय (थाली मे मण्डप की) आरती करनी ।
राईनोन-न्योचावर उतरे । परिक्रमा 4 करनी ।
शयन मे राजभोग को सब साज मण्डे । वेणु-वेत्र धरके आरती थाली की होय । पेंडा बिछे, जागरण के दर्शन होंय । समय भये पे टेरा आवें जागरण के भोग धरने ।
(जागरण के भोग मे - बूंदी, जलेबी , दूधघर की बटेरी, दहीबडा, सिखरनबडी, संधाने की बटेरी, सांठा के टूक । तुलसीजी भोग मे आवे, शंखोदक-धूपदीप होय ।)

समय भये पे भोग सरे, बीडा धरें । साज मण्डें । वेणु-वेत्र धरके आरती थाली की होय । याही प्रकार तीनभोग आवें । चौथे भोग और मंगलभोग भेले आवें ।

कार्तिक सुद 12

(श्रीगुसांईजी के प्रथम लालजी महानुभाव श्रीगिरिधरजी को उत्सव)

साज, वस्त्र, श्रंगार सब वोही रहे । श्रीमहाप्रभुजी केसरी ओढनी ओढे ।
मंगला आरती होयके, माला को हेला होय । आरसी देखें । घईया-डबरा आरोगके पलना भीतर झुलें । गोपीवल्लभ / राजभोग भेले आवें ।
राजभोग मे दूधघर, अनसखडी , सखडी सब उत्सव वत । श्रीमहाप्रभुजी को भोग न्यारो आवे ।
भोग सरें पलंगडीजी के भी आचमन-मुखवस्त्र होवें । बीडा 4 धरें । फिर श्रीठाकुरजी के आचमन होवें ।
राजभोग मे तिलक होय । आरती चून के दीवला की आठ मुठिया वारी ।
श्रीमहाप्रभुजी के भी तिलक होय । बीडा धरें । आरती होय । राईनोन-व्यौछावर करें । बडी आरसी देखें । * (श्रीठाकुरजी की माला बडी होवे । श्रीमहाप्रभुजी की माला बडी नहीं होवे । उत्थापन मे बडी होय ।)
* पीछे सब आपस मे तिलक करें ।

सामग्री - बूंदी जलेबी । हांडी, केसरी सफेद - पेडा, बर्फी, खोपरापाक, बासोंदी, दही ।
मीठो शाक, खीर, पांच भात, दहीबडा, सिखरनबडी मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा तथा भोग उत्सव वत ।

कार्तिक सुद 13

साज लाल ज़री के । वस्त्र लाल ज़री के (एकादशी वारे),
चीरा, हीरा को सेहरा । आभरण सब हीरा के । मोती की चोटी, हीरा के मकराकृत कुण्डल,
श्रंगार भारी दुहेरा - चन्द्रहार, पवित्रा कमलमाला धरें ।
(ठाडे स्वरुप के लाल ज़री के घेरदार, पटुका केसरी, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) ।
* अनोसर मे सादा लाल पाग रहे । * सफेदी चढे ।
सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक सुद 14

साज पीले खीनखाप को साज ।
वस्त्र पीले खीनखाप के । श्रंगार चीरा पे गोलचंद्रिका । जोडी पन्ना की । हलको श्रंगार ।
ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री- नित्यनेग ।

कार्तिक सुद पूनम

सफेद ज़री को साज (रासवालो)।
वस्त्र सफेद ज़री के । श्रंगार किरीट मुकुट को । मयुराकृति कुण्डल, हीरा के आभरण ।

चोटी नही धरें । चन्द्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । ठाडे वस्त्र लाल। सामग्री- नित्यनेग ।

मागसर वद 1

लाल साटन को साज ।
लाल साटन के वस्त्र । लाल साटन को टोपा, उसपर पन्ना को टोप धरें ।
जोडी पन्ना, हलको श्रंगार । ठाडे वस्त्र सफेद । सामग्री- मनोर के लड्डुआ, नित्यनेग ।
* आज सू समस्त शीतकालिक सेवा अंगीठी, फर्गुल, गद्दल, शईया पे रजाई आदि सब शुरु होय (ठंड नही होय, तोभी ब्रजभावना-लीला भावना के हिसाब सू अंगीकार होवे) ।
* आजसू गोपीवल्लभ मे नित्य खिचडी-कढी आरोगें । उत्सव तथा जन्मदिन पर खिचडी के ठिकाने छोंको भात आवे ।

मागसर वद 2

साज हरो, वस्त्र हरे चाकदार । श्रंगार ग्वालपगा । जोडी माणिक । श्रीकर्ण मे लोलकबंदी धरें।
मध्य को सिंगार । ठाडे वस्त्र पीले । सामग्री- बूराभुरक्या, नित्यनेग ।

मागसर वद 3

साज-वस्त्र पतंगी । श्रंगार टोपा, जोडी फिरोजा । सामग्री - बूंदी के लड्डुआ, नित्यनेग ।

मागसर वद 4

(छः स्वरुप को उत्सव - श्रीप्रियाजी के मन्दिर में भयो)

लाल ज़री शीतकाल की भारी साज-पिछवाई ।
लाल लिस्माज़री के वस्त्र । लाल ज़री को बीच को दुमाला । चमकने रुपेरी कतरा-चंद्रिका ।
हीरा के आभरण । कुण्डल मकराकृत, भारी श्रंगार - चन्द्रहार, पवित्रा धरें । ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
पट बाघ बकरी को मंडे । अनोसर मे कसूमल पाग धरके पोढे ।
* आज सफेदी नहीं आवे गादी तकिया पर ।
सामग्री- हांडी, आधा पाटिया, मनोर के लड्डुआ, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत ।

मागसर वद 5

साज-वस्त्र गुलाबी ज़री के । ज़री को टोपा । जोडी पन्ना । ठाडे वस्त्र लाल । सामग्री - फेणी, नित्यनेग ।

मागसर वद 6

साज-वस्त्र फिरोजा । श्रंगार टोपा । जोडी माणिक । सामग्री- बूंदी के लड्डुआ ।

मागसर वद 7

साज पतंगी ।
वस्त्र पतंगी । श्रंगार हलको । पीली गोलपाग पर पीलो छोर (फेंटा) । ज़री की गोलचंद्रिका ।

हीरा के आभरण । पीलो गद्दल ।
(ठाडे स्वरुप के सब वस्त्र पतंगी, घेरदार वागा । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । और मोजा, कटिपटुका और पाग-फेंटा पीलो) सामग्री - मोहनथाल, नित्यनेग ।

मागसर वद 8
(श्रीगुसांईजी के द्वितीय लालजी श्रीगोविन्दरायजी को उत्सव)
साज लाल साटिन को ।
लाल साटिन के वस्त्र । माणक की कुलह । पन्ना को पान, हीरा के तुर्रा ।
जोड सोनेरी चमकनो । हीरा-पन्ना के मिलमा आभरण । श्रंगार भारी - चन्द्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । * अनोसर मे वस्त्र की लाल कुलह धरके पोढें ।
सामग्री- आधापाटिया, उपरेटा । हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सववत ।

मागसर वद 9
साज श्याम मोती को । वस्त्र श्याम मोती भरे भये । पाग और मोजाजी मोती भरे भए ।
मोती को कतरा । हलको श्रंगार । वेणु-वेत्र, कडा, गादी मोती की । ठाडे वस्त्र लाल ।
सामग्री - * खीर रोटी को मंगलभोग आरोगें ।
(घऊ और उडद की रोटी, सफेद मीठी खीर)
कूर के गुंजा, नित्यनेग ।

मागसर वद 10
(गो.श्रीउत्तमश्लोकजी महाराजश्री को उत्सव) - हरी घटा
गादी हरे मीना की । साज, वस्त्र, मोजाजी , पिछवाई, दिवालगिरि, ठाडे वस्त्र सब हरे दरयाई के ।
श्रीमहाप्रभुजी के अधिकचा हरे , शईयाजी पर हरे अधिकचा तथा रजाई हरी ।
श्रंगार पाग पर हरे रेशम को कतरा । आभरण पन्ना के । हलको श्रंगार ।
* सोना को पलना झूलें ।
सामग्री - आधा पाटिया, हांडी, हरी पूडी, डेढी खीर चोखा की केसरी । मूंगकी दाल, पकोडी की कढी, तथा भोग उत्सव वत । दूधघर, अनसखडी मे सब हरि सामग्री आवें ।
(हरियाली अमावस वत)

मागसर वद 11
साज गुलाबी ।
वस्त्र लाल ज़री लप्पा के । श्रंगार हीरा को जडाऊ टिपारा । मकराकृत कुण्डल ।
केसरी ज़री को रुमाल धरें । हीरा के सब आभरण । भारी श्रंगार ।
(ठाडे स्वरुप श्रीअंग पर लाल चाकदार वागा, लाल उपरना गाती को, और उसपर केसरी रुमाल धरें। ठाडे वस्त्र श्याम)
सामग्री - सकरपारा, शकरकंद को मगद , नित्यनेग ।

मागसर वद 12

(पेहली चौकी - नियम को सिंगार)

साज बैंगनी । वस्त्र बंगनी रंग के साटिन के । सुनहरी ज़री की फतवी धरें ।
चीरा पे सोनेरी लूम की कलंगी । हीरा के आभरण । श्रंगार हलको ।
* आज श्रीकंठ मे दुग्दुगी धरें । हांस नहीं धरें ।
* लालन श्रीअंग पे 1 माला धरें । ठाडे स्वरुप तिल्लडा धरें, ठाडे वस्त्र सफेद ।
* संध्या आरती मे चौक मे चांदी के बंगला मे बिराजें ।
* अनौसर मे सादा पाग धरिके पोढें ।
सामग्री - मंगलभोग मे तवापूडी आरोगें । राजभोग तथा पूरे दिन मठडी, नित्यनेग ।

मागसर वद 13

(श्रीगुसांईजी के सातवे लालजी श्रीघनश्यामजी को उत्सव)

साज लाल साटन को ।
लाल साटन के वस्त्र । पन्ना की कुलह - रूपेरी जोड चमकनो । भारी श्रंगार - चन्द्रहार, पवित्रा धरें ।
मकराकृत कुण्डल, आभरण सब पन्ना के । ठाडे वस्त्र पीले ।
सामग्री - आधो पाटिया, घेवर, हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, कचोरी , बाकी सब नित्यनेग ।

मागसर वद 14

साज-वस्त्र हरे खीनखाब । श्रंगार टोपा को । जोडी माणिक । सामग्री-नित्यनेग ।

मागसर वद अमावस्य

(श्याम घटा)

साज-वस्त्र श्याम बिना किनारी के ।
गादी, तकिया सब श्याम साटिन के । श्रंगार पाग पे हीरा को कतरा ।
हीरा के आभरण, श्रंगार हलको । माला तुलसी की धरें । ठाडे वस्त्र श्याम, घेरदार वागा ।
सामग्री - खोवा के गूंजा, नित्यनेग ।

मागसर सुद 1

(ऐछिक)
साज-वस्त्र कोयली । श्रंगार टोपा । आभरण सोनेला के । सामग्री - नित्यनेग ।

मागसर सुद 2

(चन्द्रघटा - दूज के चंदा को श्रंगार)

साज सब श्याम घटा को । श्री के वस्त्र, चीरा और गद्दल सफेद ज़री के ।
आभरण हीरा के । श्रंगार हलको । ठाडे स्वरुप सफेद घेरदार धरे, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
* पिछवाई में चांदी को चंद्रमा आवे ।

(पांच चंद्रमा को श्रंगार :- चीरा पे चंद्रमा को कतरा, सीस्फूल पे अर्धचंद्र, हांस, पिछ्वाई पे चंद्र और स्वयं आपश्री को मुखचंद्र)
राज्भोग मे - आधो मुख निलांबर सों ढाक्यो - यह कीर्तन होय । सामग्री - पपची, नित्यनेग ।

मागसर सुद 3
साज-वस्त्र सफेद साटिन । टोपा । जोडी पन्ना । सामग्री- मोहनथार, नित्यनेग ।

मागसर सुद 4
साज-वस्त्र लाल ज़री को । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी हीरा । श्रंगार हलका ।
सामग्री- चोरीठा को मगद, नित्यनेग ।

मागसर सुद 5
(श्रीजीवनजी महाराज उत्सव - दोहरा मंडान)
साज लाल शीतकाल को भारी । तकिया आधी सफेदी के धरें ।
वस्त्र लाल खीनखाब के । कुलह पे खूप को श्रंगार (मतलब कुलह-पान पे बिना पंख को मुकुट)
कुण्डल मकराकृत । भारी श्रंगार - जूही, कली, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
आभरण हीरा- माणिक मिलमा धरें । ठाडे स्वरुप चाकदार धरें, ठाडे वस्त्र केसरी ।
सामग्री - नित्य सू नेग दूनो भराय । आखो पाटिया, हांडी दोहरी, सेव के लडुआ, मेवाभात, दहीभात, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत ।
* सिर्फ राजभोग मे 2 आरती थाली की, बाकी सब समय दोहरी आरती नित्य की होय।
* आज झारी, बंटा, माला, बीडा, कडा, अंगीठी, आरती सब सेवा दोहरी होवें ।
* चौपड को पट लाल दुहेरे घर वालो आवे ।
* वेत्र गादी के दोई आडी आवें ।
* गेंद चौगान भी दोई आडी दुहेरा आवें ।
* अनोसर मे पाग धरके पोढें ।

मागसर सुद 6
(श्रीजीवनजी गादी बिराजे उत्सव)
साज लाल मखमल मोती वारो । गादी लाल मोती भरी भई ।
मोती टक्यो वागा और वस्त्र लाल मखमल के धरें । लाल मोती भरी पाग पे मोती को कतरा ।
जोडी मोती, हलको श्रंगार । ठाडे वस्त्र कत्थई ।
सामग्री - * बेंगनभात को मंगलभोग, राजभोग मे हांडी, रसेली बूंदी । सामग्री नित्यनेग ।

मागसर सुद 7
(श्रीगुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव)
साज - हरी साटन पे किनारी की झाड वालो ।
लाल रेशमी छापा के वस्त्र । माणक की जडाऊ कुलह । 5 मोरपंख को जोड ।

माणक के सब आभरण । श्रंगार भारी दुहेरा- चन्द्रहार,पवित्रा धरें । कुण्डल मकराकृत ।
ठाडे स्वरुप के चाकदार, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
सामग्री - आधा पाटिया, धास के लडुआ, संजाब की खीर, हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

मागसर सुद 8
(श्रीगोवर्धनेशलालजी महाराज कृत सात स्वरुप को उत्सव)
साज लाल साटन की केल के झाड वालो ।
लाल खीनखाप के वस्त्र । हीरा की कुलह । जोड सुनहरी चमकनो । हीरा के सब आभरण ।
कुण्डल मकराकृत, श्रंगार भारी दुहेरा - चन्द्रहार, जूही, वल्लभी, धरें । ठाडे वस्त्र हरे ।
हकीक को कटला । अनोसर मे केसरी कुलह धरके पोढे ।
सामग्री - आधा पाटिया, दहीथडा, हांडी, बासौंदी ,मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

मागसर सुद 9
(लाल घटा - श्रीगुसांईजी के उत्सव की बधाई बैठे)
साज, फर्गुल, गद्दल, गादी, तकिया, मोजाजी, रजाई, ठाडे वस्त्र सब लाल ।
वस्त्र लाल घेरदार । पाग पे लाल रेशम को कतरा । श्रंगार हलको । जोडी माणिक ।
सामग्री - मीठी कचोरी, लाखनशाही, नित्यनेग ।

मागसर सुद 10
साज-वस्त्र गुलाबी साटिन । श्रंगार टोपा । जोडी फिरोजा । सामग्री - फेनी, नित्यनेग ।

मागसर सुद 11
हरे डुमस (दुमाश) को साज ।
लाल खीनखाब के वस्त्र, श्रंगार किरीट मुकुट । कुण्डल मयूराकृत । पन्ना के आभरण । श्रंगार भारी । चन्द्रहार, पवित्रा धरें । ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, गाती को उपरना, ठाडे वस्त्र मेघस्याम ।
सामग्री - सकरपारा, सूरण को मगद, नित्यनेग।

मागसर सुद 12
(दूसरी चौकी -खीरबडा की चौकी)
साज हरी साटन लाल हासिया को ।
हरी साटन के वस्त्र बिना किनारी के । कसुमल गोल पाग, मोरपंख को दोहरो कतरा ।
श्रीअंग पे लाल दर्याई के बन्द धरें । जोडी हीरा । हलको सिंगार ।
* हांस नहीं धरें । लालन श्रीअंग पर 1 माला धरें ।
* ठाडे स्वरुप तिल्लडा धरें । घेरदार वागा । ठाडे वस्त्र सफेद ।
सामग्री - राजभोग तक खीरबडा आरोगें । शाम को ठौर आवे । नित्यनेग ।

मागसर सुद 13

साज-वस्त्र पीरे साटिन । श्रंगार टोपा । जोडी पन्ना की । सामग्री- मोहनथाल नित्यनेग ।

मागसर सुद 14

(अमरसी घटा)

साज, फर्गुल, गद्दल, गादी, तकिया, मोजाजी, रजाई, ठाडे वस्त्र सब अमरसी केसरी ।
वस्त्र अमरसी घेरदार । पाग पे अमरसी रेशम को कतरा । श्रंगार हलको ।
जोडी आभरण सब सोना के। सामग्री - चूरमा, नित्यनेग ।

मागसर सुद पूर्णिमा

(श्रीनाथजी मे छप्पनभोग नियम को)

साज - श्याम साटन पर ज़री की गाय वालो । पलंगडी सोने की, अधिकचा आवे ।
गादी हीरा की आवे । अभ्यंग होंय ।
लाल लिस्मा ज़री के वस्त्र और टिपारा । श्वेत ज़री के गोकर्ण ।
जोड सोनेरी चमकनो । हीरा के आभरण । श्रंगार भारी दुहेरा - चन्द्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
सामग्री - आधा पाटिया, चंद्रकला, लोंगभात, कांजी की चपटिया ।
हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी और भोग उत्सव वत ।

पौष वद 1

साज - लाल बदरून की जाल को साज ।
लाल साटन के वस्त्र । लाल साटन के टोपा पे हीरा के किरीट की टोपी ।
जोडी हीरा । श्रंगार खांचापुर । कुण्डल सादा हीरा के । चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
सामग्री - नित्यनेग ।

पौष वद 2

साज-वस्त्र गुलाबी साटिन । श्रंगार टोपा । जोडी पन्ना । सामग्री- पाटिया के लड्डू, नित्यनेग ।

पौष वद 3

(श्रीमन्मथरायजी कृत छप्पनभोग को उत्सव, वि.सं.2064 - वापी)

साज श्याम साटन पर सोनेरी ज़री की गाय ।
वस्त्र सोनेरी ज़री के, श्रंगार जडाऊ टिपारा हीरा को । सोनेरी जोड चमकनो । सोनेरी ज़री के गोकर्ण । हीरा के मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी दुहेरा- चन्द्रहार, जूही, पवित्रा, कमलमाला धरें ।
(ठाडे स्वरुपन के सोनेरी चाकदार, ठाडे वस्त्र मेघश्याम)
सामग्री - हांडी, जलेबी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत ।

पौष वद 4
(पीली घटा)
साज, फर्गुल, गद्दल, गादी, तकिया, मोजाजी, रजाई, ठाडे वस्त्र सब पीले ।
वस्त्र पीले घेरदार । पाग पे पीले रेशम को कतरा । श्रंगार हलको । जोडी सुनेला की ।
सामग्री - बूंदी के लडुआ, नित्यनेग ।

पौष वद 5
(ऐछिक)
साज-वस्त्र पोपटी । श्रंगार टोपा । जोडी माणिक । सामग्री - मोहनथार, नित्यनेग ।

पौष वद 6
(गो.श्रीनीरजकुमारजी महाराजश्री को जन्मदिवस - गुलाबी घटा)

साज, फर्गुल, गद्दल, गादी, तकिया, मोजाजी, रजाई, ठाडे वस्त्र सब गुलाबी साटिन के ।
वस्त्र गुलाबी चाकदार । हीरा को किरीट मुकुट । हीरा के सब आभरण । कुण्डल मकराकृत ।
श्रंगार खांचापुर । चंद्रहार, पवित्रा धरें ।
सामग्री - * शीतकाल सखडी को बडो मंगलभोग आज आरोगें । जामे 5 धान की रोटी (गेहूं-बाजरा-मैदा-मूंग-अडद-चना) बैंगन भरता, भरता, भरता के गूंजा, संभारिया को शाक, बेंगन चना को शाक, चकती बेंगन की, मेवाभात, तिलवडी, ढेबरी, पापड कचरिया, घी, गुड की कटोरी ये सब मंगलभोग मे आवे ।
* आधा पाटिया, हांडी, जलेबी, छुट्टे बूंदी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी तथा भोग उत्सव वत ।
विशेष : - गिन्नी के पलना झूलें (गुलाबी पलना पे सोना की गिन्नी बांधके झूलें) ।
* शयन मे श्रीहस्त मे गुलाबी मीना को कमल धरें ।

पौष वद 7
(श्रीगुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र - श्रीकल्याणरायजी को उत्सव)
साज-वस्त्र, फर्गुल, गद्दल सब पक्षीभांत साटन के। श्रंगार लाल पाग पे पक्षी को कतरा ।
1 हार 2 माला । फिरोजी मीना को चिरैया को हार आवे , माला पक्षी के पदक वारी ।
जोडी फिरोजा, श्रंगार हलका । ठाडे वस्त्र मेघश्याम खीनखाब। सामग्री - मेवाबाटी, नित्यनेग ।

पौष वद 8
साज लाल साटन हरे हासिया को ।
वस्त्र लाल साटन के, कसूमल पाग । सादी चंद्रिका,जोडी पन्ना । श्रंगार हलको। ठाडे वस्त्र पीले ।
* सफेदी बडी होजाए । सामग्री- मगद, नित्यनेग ।

पौष वद 9

(प्रभुचरण श्रीगुसांईजी को उत्सव)

साज, चंदरवा, दिवालगिरि - लाल मखमल टाटबन्धी को (जन्माष्टमी वारो) ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, अधिकचा आवे । गादी जडाऊ की । बेगि मंगला होंय ।
बडो अभ्यंग, अंजन, कमलपत्र होंय। आत्मसुख केसरी आवे । ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
पीली साटन के वस्त्र, जन्माष्टमीवत तीन जोडी को भारी श्रंगार होय ।
कुण्डल मकराकृत, कटला धरें । पांच चंद्रिका को जोड, सभी उत्सव माला आवें ।
सांझ कूं अनोसर मे कुलह पर ताईत रहे ।
* आज सूं मंगलभोग मे सुहाग-सौंठ शुरु होय ।
* आज राजभोग मे पलंगडीजी के भोग न्यारे आवें । दूधघर, अनसखडी, सखडी सब उत्सव वत ।
* आज सूं शयन मे नारंगी के दिवला शुरु होंय । श्रीनाथजी के पाटोत्सव तक जुडें।
* राजभोग दर्शन मे तिलक होवे । 2 बीडा धरें । आरती होय । पलंगडीजी कू भी तिलक आरती होय । भेंट होय ।
* राजभोग दर्शन मे बडी आरसी देखें । श्रीठाकुरजी की माला बडी होय, पलंगडीजी की नहीं होय, उत्थापन मे होय ।
* कुंजा, आबखोरा, आरसी सोना जडाऊ की आवें ।
सामग्री - आखो वारा बूंदी-जलेबी को । डेढ पाटिया केसरी । हांडी, दहीबडा, शिखरनबडी, केसरी सफेद - बसौंदी, दूधघर को सब साज उत्सव वत, मूंग की दाल पकोडी की कढी, तिनकुडा तथा सखडी भोग उत्सव वत ।

पौष वद 10

(परचारगी को सिंगार)

सब साज सिंगार उत्सव वत । हीरा को पान आवे । बगनखा धरें । बडे हमेल-कटला नहीं धरें ।
* कुंजा आबखोरा नहीं आवें । * सांझ कू सफेदी चढे । सामग्री - ठोड - मठडी , नित्यनेग ।

पौष वद 11

(तिलकायत श्रीगोविन्दजी महाराज को उत्सव)

साज-वस्त्र सफेद खीनखाब को । पन्ना की कुलह, पन्ना के आभरण । चाकदार , ठाडे वस्त्र लाल ।
जोड सादा पांच चंद्रिका को । मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी ।
अनोसर मे कसूमल गोल पाग धरें । सामग्री - बूंदी-जलेबी को वारा, नित्यनेग ।

पौष वद 12

(चौकी)

साज-वस्त्र हरे खीनखाप के । हीरा को टिपारा, हीरा की जोडी । कतरा चंद्रिका सादा ।
चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल । कुण्डल मयुराकृत । श्रंगार खांचापुर ।
सामग्री - मंगलभोग मे खरमंडा की चौकी, नित्यनेग ।

पौष वद 13

(श्रीगोकुलनाथजी घोटावारे को उत्सव)

साज गुलाबी साटिन । वस्त्र गुलाबी रुपेरी किनारी के । श्रंगार पाग कतरा । जोडी माणिक । श्रंगार हलको । घेरदार वागा धरें, ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - जलेबी, नित्यनेग ।

पौष वद 14

(पीतांबर को चोलना)

साज श्याम जरी सोनेरी हांसिया वारो । वस्त्र केसरी, सोनेरी किनारी के ।
श्रंगार पाग पर जरी को (जमाव) कतरा । 4 कर्णफूल, श्रंगार हलको । जोडी पन्ना ।
(ठाडे स्वरुप के सूथन लाल ज़री को धरें, वाघा केसरी, ठाडे वस्त्र मेघश्याम)
सामग्री - सेव के लड्डुआ, नित्यनेग ।

पौष वद अमावस्य

साज श्याम - शीतकालिक भारी काम वारी पिछवाई।
वस्त्र केसरी खीनखाप के ।
लाल खीनखाब की फतवी (ज़री फूल की) । छज्जेदार पाग पे सोनेरी लूम-तुर्रा ।
कर्णफूल, हलको श्रंगार । जोडी हीरा की । (ठाडे स्वरुपन के घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र हरे) ।
* राजभोग और संध्या आरती मे कनक कमल (सोना की कमल छडी) श्रीहस्त मे धरें ।
सामग्री - बेसन को मगद, नित्यनेग ।

पौष सुद 1

साज-वस्त्र सोसनी खीनखाप । गोल पाग-कतरा, जोडी माणिक । श्रंगार हलको ।
सामग्री- माखनबडा, नित्यनेग ।

पौष सुद 2

साज वस्त्र मयूरपंखी (महेंदी रंग) के ।
श्रंगार टोपा । जोडी फिरोजा की । सामग्री - मूंग को मगद, नित्यनेग ।

पौष सुद 3

साज-वस्त्र बादामी । श्रंगार टोपा, जोडी पन्ना की । सामग्री- दहीथडा, नित्यनेग ।

पौष सुद 4

साज-वस्त्र पतंगी खीनखाप के । श्रंगार टोपा, जोडी फिरोजा । सामग्री - बूराभुरक्या, नित्यनेग ।

पौष सुद 5

अभ्यंग होवें । साज-वस्त्र जामली । श्रंगार टोपा । जोडी हीरा । सामग्री - मठडी, नित्यनेग ।

पौष सुद 6

साज केसरी बदरून की जाल को ।
पीले साटन के वस्त्र । हीरा की श्याम बाबरी टोपी धरें । श्रंगार खांचापुर । 2 कर्णफूल ।
(ठाडे स्वरुप घेरदार वागा धरें , ठाडे वस्त्र कत्थई) सामग्री - नारंगी भात, नित्यनेग ।

पौष सुद 7

साज-वस्त्र सोसनी साटन के । श्रंगार टोपा, जोडी हीरा । सामग्री - बूंदी को मोहनथार, नित्यनेग

पौष सुद 8

साज पीलो , श्याम हांसिया को ।
वस्त्र पीले । श्रंगार - दरयाई खूंट को दुमाला । उसपे मोरशिखा धरें । ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र श्याम । फिरोजा के आभरण । श्रंगार मध्य को । सामग्री - चूरमा, नित्यनेग ।

पौष सुद 9

साज-वस्त्र तपकीरी । श्रंगार टोपा , जोडी पन्ना की । सामग्री- नित्यनेग ।

पौष सुद 10

(श्रीकल्याणरायजी महाराजश्री (कन्नी बावा) को उत्सव)

साज लाल बदरून की जाल को ।
वस्त्र लाल बदरून के । श्रंगार कुलह सी पाग (बीच पे हीरा की कलगी, आजू बाजू तुर्रा हीरा के)
रुपेरी चमकनी चंद्रिका, मकराकृत कुण्डल । भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । जोडी हीरा ।
ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र केसरी । सामग्री - तवापूडी, मूंग की दाल, नित्यनेग ।

पौष सुद 11

साज-वस्त्र जांबली खीनखाप । श्रंगार टिपारा हीरा को । मयुराकृत कुण्डल ।
भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । श्रीअंग पर केसरी रुमाल धरें । जोडी माणिक ।
ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - नित्यनेग ।

पौष सुद 12

(चौकी)

साज-वस्त्र श्याम खीनखाप के । जडाव हीरा को ग्वाल पगा । सादी चंद्रिका ।
मयुराकृति कुण्डल । भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल । सामग्री - मंगलभोग मे मांडा की चौकी, नित्यनेग ।

पौष सुद 13

साज लाल, हरे हांसिया को ।
वस्त्र लाल साटन के , हरो टोपा । श्रीमस्तक पर दुरंगी पाग (लाल-हरी) ।

कतरा सुरंग-दुरंग । हलको श्रंगार, जोडी हीरा । सामग्री - गुड खांड को चूरमा, नित्यनेग ।
घेरदार वागा , ठाडे वस्त्र हरे ।

<u>पौष सुद 14</u>
साज-वस्त्र लाल फुलवार साटन को । श्रीमस्तक पर श्याम मीना को दुमाला । जोडी नीलम ।
हीरा की कलगी । चंद्रिका-बांया कतरा धरें । हलको श्रंगार । नीलम की माला सब आवे ।
सामग्री - नित्यनेग ।

<u>पौष सुद पूर्णिमा</u>
साज रथयात्रा वारो ।
वस्त्र सफेद खीनखाप के । श्रंगार किरीट मुकुट को । मत्स्याकृति कुण्डल । श्रंगार खांचापुर ।
(ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) । जोडी हीरा । सामग्री - खोवा, नित्यनेग ।

संक्रांति को क्रम -

भोगी को उत्सव -
(भोगी को उत्सव संक्रांति के अगले दिन मान्यो जाय है)

श्रीमहाप्रभुजी की पलंगडी सोने की, अधिकचा आवे । ठाकुरजी की गादी नित्य की (सोना की) ।
अभ्यंग होय । साज-वस्त्र लाल छींट को । श्रंगार पाग पे सादी चंद्रिका । 4 कर्णफूल ।
मध्य को श्रंगार - चंद्रहार , कली,पवित्रा धरें । जोडी हीरा । चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद ।
सामग्री - गोपीवल्लभ मे चिल्ला को थाल आवे । राजभोग मे हांडी, बूंदी, खरखरी, मूंग की दाल,
पकोडी की कढी ।

<u>मकर संक्रांति को उत्सव -</u>
साज वस्त्र लाल छींट के । गोल पाग । मोरपंख और ज़री की लूम की कलंगी । श्रंगार हलको ।
जोडी हीरा । घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद । * नई गेंद धरनी ।
सामग्री - आधा पाटिया ।
* जो संक्रांति सबेरे बैठे तो राजभोग मे ठूमर आरोगें ।
* तिलवाभोग के संग हांडी, मीठो शाक, दूधघर की सामग्री आवें ।
* राजभोग मे आखे मूंग की खिचडी, सातधान की खिचडी, चूरमा, मूंग की दाल ,पकोडी की कढी

<u>महा वद 1</u>
साज हरे साटिन को । वस्त्र हरी साटन के किनारी के । माणक को खूंप ।
माणिक के आभरण । श्रंगार मध्य को - चंद्रहार, पवित्रा धरें । सामग्री- गुड की बूंदी के लडुआ,
नित्यनेग ।

महा वद 2
साज-वस्त्र फिरोजी छींट । श्रंगार टोपा । जोडी हीरा । सामग्री-पाटिया के लड्डुआ, नित्यनेग ।

महा वद 3
साज-वस्त्र गुलाबी साटिन । श्रंगार टोपा, जोडी फिरोजा । सामग्री-मोहनथाल, नित्यनेग ।

महा वद 4
साज-वस्त्र श्याम छींट । श्रंगार टोपा । जोडी हीरा । सामग्री - चूरमा, नित्यनेग ।

महा वद 5 - (बसंत के आगम को सिंगार)
साज सफेद साटन पर लाल चिडिया । वस्त्र सफेद टिपकी वाले । वसंत पंचमीवत श्रंगार ।
जोडी माणिक । ठाडे वस्त्र लाल । सामग्री - मनोहर के लड्डुआ, नित्यनेग ।

महा वद 6
साज लाल । वस्त्र लाल मखमल मोती भरे भये । श्रंगार टोपा मोती टक्यो भयो ।
आभरण मोती के । सामग्री- थेपला, नित्यनेग ।

महा वद 7
साज-वस्त्र लाल-सफेद छींट के । श्रंगार टोपा, जोडी फिरोजा ।
सामग्री- बूंदी को मोहनथाल, नित्यनेग ।

महा वद 8
(श्रीबडे दाऊजी महाराज को उत्सव - जिनने श्रीजी कूं ब्रज सू मेवाड पधराए)
पलंगडीजी सोना की, अधिकचा आवे । ठाकुरजी की गादी हीरा की । तकिया अडधी सफेदी वारे ।
साज-वस्त्र लाल बडे खीनखाप (केसरी अस्तर वाले)। श्रंगार हीरा की कुलह । जोड सोनेरी चमकनो धरें । हीरा के आभरण - मकराकृत कुण्डल - भारी दुहेरा श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें।
हकीक को कटला धरें । (ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम)
अनोसर मे कसूमल कुलह धरें । सामग्री - हांडी, जलेबी, नित्यनेग ।

महा वद 9
साज वस्त्र फिरोजी छींट के । श्रंगार टोपा, जोडी माणिक । सामग्री- बूंदी के लड्डुआ, नित्यनेग ।

महा वद 10
साज-वस्त्र सोनेरी ज़री के । सोनेरी चीरा, कतरा सोनेरी सादा । आभरण सब सोना के ।
हलको श्रंगार । शयन तक सोनेरी ज़री की पाग धरें । अनोसर मे केसरी पाग धरके पोढें ।
ठाडे वस्त्र हलके पीले । (शयन मे :- फूली फूली डोले सोने के सदन...यह कीर्तन होय) ।
सामग्री - सेव के लड्डुआ, नित्यनेग ।

महा वद 11

साज-वस्त्र फिरोजी खीनखाप । फिरोजी जरी को टिपारा । चंद्रिका - गोकर्ण धरें ।
कुण्डल मयुराकृति । ठाडे स्वरुप के चाकदार, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा आवे । सामग्री - शकरकंद को मगद, नित्यनेग ।

महा वद 12

(डोल के आगम को श्रंगार)

साज लाल साटन पे सफेद चिडिया । वस्त्र लाल साटन के टिपकी वारे । डोलवत श्रंगार ।
माणक की जोडी । सामग्री - खाजा, नित्यनेग ।

महा वद 13

साज-वस्त्र केसरी छींट । श्रंगार टोपा । जोडी हीरा । सामग्री - गुड के कुर के गुंजा, नित्यनेग ।

महा वद 14

साज-वस्त्र गुलाबी साटिन के । श्रंगार टोपा, जोडी पन्ना । सामग्री - पुवा, नित्यनेग ।

महा वद अमावस्य

साज-वस्त्र श्याम ज़री । चीरा पे हीरा को कतरा । श्रंगार खांचापुर । जोडी हीरा ।
ठाडे स्वरुप के चाकदार, ठाडे वस्त्र कत्थई । सामग्री - गुड की तवापूरी, नित्यनेग ।
(* आज से पांच दिन ज़री आवे)

माघ सुद 1

साज-वस्त्र लाल ज़री के । लाल चीरा पे सेहरा को सिंगार होय । सिंगार भारी- चंद्रहार,कली, पवित्रा धरें। आभरण फिरोजा के - मयुराकृति कुण्डल । ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र पीले ।
सामग्री - सीरा, नित्यनेग ।

माघ सुद 2

साज वस्त्र पीले ज़री के । श्रंगार पाग पे दोहरो कतरा । जोडी पन्ना - श्रंगार खांचापुर।
सामग्री- मालपुवा, नित्यनेग ।

माघ सुद 3

साज-वस्त्र हरे ज़री के । श्रंगार जडाऊ टिपारा - चंद्रिका, कतरा सादा । मकराकृत कुण्डल ।
जोडी माणिक, श्रंगार भारी - चंद्रहार, कली, पवित्रा धरें । सामग्री - मनोहर के लडुआ, नित्यनेग ।

माघ सुद 4

(श्रीमुकुन्दरायजी को पाटोत्सव)

साज-वस्त्र सफेद फरूखशाही ज़री के । हीरा को किरीट मुकुट ।
मकराकृत कुण्डल ।श्रंगार भारी दुहेरा - चंद्रहार, कली, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
आभरण सब हीरा के ।
सामग्री- मंगलभोग मे गुडकल की सामग्री आवे । मठडी को वारा, नित्यनेग ।
* संध्या आरती पीछे चंदरवा, पिछवाई सब सफेद बंधावने । गादी तकिया सब फागुन के निकलवावें । बसंत पंचमी के वस्त्र को जोड नयो सिद्ध करवावनो ।

माघ सुद 5

(बसंत पंचमी)

श्रीमहाप्रभुजी के वेस्टन सफेद चढे । शईयाजी को साज बदले ।
फरगुल गद्दल हरी साटन के । टोपा हर्यो साटन को आवे ।
साज-वस्त्र सफेद सोनेरी किनार के । आत्मसुख श्रीअंग के गुलाबी (श्याम अस्तर वालो) ।
उबटन-अभ्यंग होवे ।
श्याम बाहर खिडकी की पाग । सफेद वागा । आभरण लाल मीना के । 4 कर्णफूल,
सादी चंद्रिका । श्रंगार मध्य के, चंद्रहार धरें । सीसफूल पे आंबा को मोर धरें । अनोसर मे पाग रहे ।
(ठाडे स्वरुप के घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल)

सामग्री : आखो पाटिया । सेव के लडुआ, मनोर के लडुआ को वारा ।
खीर की गागर चोखा की, छाछबडा, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड कचरिया, तिलवडी, ढेबरी ।
उत्सव की सामग्री :- सेव के लडुआ, मठडी, गुंजा, छुट्टी बूंदी,सकरपारा । दहीबडा, शिखरनबडी, गुंजा मेवा, कच्चे-पक्के संधाना ।

विशेष :- * 40 दिन तक फूल के गेंद छडी आवें । * आंबा के 2 मोर पीठक के तकिया पर आवें ।
* 40 दिन खेल के समय पीतांबर धरें ।
* खेल को थाल साजनो - पहिले चंदन, फिर गुलाल, फिर अबीर पीछे चोवा सूं खेलें ।
* श्रीकूं खिलायके पिछ्वाई, सिंहासन, खंड चंदन एवं गुलाल सो खिलावनो । पीछे चंदरवा खेले। पीछे बसंत खिलावनो । फिर गुलाल-अबीर उडावनो । पीछे उपरना उठावने । फिर उत्सव भोग दूधघर-अनसखडी को आवे ।
* खेल को थाल शईया मंदिर मे रहे (चोवा की कटोरी नहीं) ।
समय भये भोग सराय, बीडा बंटा मे पधराय, झारीजी भरके खंड-पात मांडनो । आरसी दिखाय आरती करनी । माला बडी होय, अनोसर करें नित्यवत।
* बसंत कू संध्या आरती पीछे उठाय लेनो ।
* आजसे शयन मे 1 त्रवल और लूम तुर्रा डोल तांई धरें। * आजसे 40 दिन हांस बन्द ।

* आज से 40 दिन खेल के समय'खेल भोग' (मेवा, मिठाई, कतूला) श्री के पास वस्त्र ढांपके धरनो ।
* आज बसंत अलापचारी सु डंडा रोपण ताई सब समय राग बसंत ही गबै । पलना मे राग को बंधन नही है, अन्य रागन की छूट है ।

बसंत को प्रकार :- बसंत कलश कू पीलो उपरना लपेटनो । राजभोग धरके बसंत को अधिवासन होवें । बसंत कू संध्या आरती पीछे उठाय लेनो ।

माघ सुद 6
साज सफेद । फर्गुल-गद्दल लाल साटिन के ।
गुलाबी जामदानी के वस्त्र । कुलह पर जोड रुपेरी चमकनो । आभरन लाल-हरे मीना के । श्रंगार मध्य को, चंद्रहार आवे । मकराकृत कुण्डल । (ठाडे स्वरुप के चाकदार, ठाडे वस्त्र हरे) ।
सामग्री - वारो खिचडिया को (दूधघर अनसखडी के नग कि) । लडुआ, मठडी, नित्यनेग ।

माघ सुद 7
साज सफेद । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र वागा सफेद । गुलाबी फतवी धरें । गुलाबी गोल पाग, कतरा मोरपंख को सादा ।
हरे मीना के आभरण, श्रंगार हलको ।
(ठाडे स्वरुप के सफेद घेरदार वागा, गुलाबी फतवी और ठाडे वस्त्र श्याम)
सामग्री- बूंदी के लडुआ, नित्यनेग ।

माघ सुद 8
साज सफेद । फर्गुल गद्दल लाल साटिन के ।
वस्त्र सफेद । सफेद टिपारा, गुलाबी गोकर्ण, बीच मे चंद्रिका । जोडी लाल-हरे मीना की ।
कुण्डल मयुराकृत, श्रंगार मध्य को । चंद्रहार धरें ।
(ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र हरे)
सामग्री - पुवा, नित्यनेग ।

माघ सुद 9
साज सफेद । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र सफेद, श्रंगार पाग - कतरा । जोडी लाल मीना की, कर्णफूल सादा ।
(ठाडे स्वरुप के घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र हरे) सामग्री - सेव के लडुआ, नित्यनेग ।

माघ सुद 10
साज सफेद । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के ।
वस्त्र सफेद, वागा पे लाल दरयाई के बंद धरें । श्रंगार लाल खिडकी की पाग, लूम की कलंगी ।
जोडी हरे मीना की, श्रंगार हलको । सामग्री - दुधपुवा, नित्यनेग ।

माघ सुद 11

साज सफेद । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र पीले चाकदार वागा । श्रंगार पाग को, पीलो फेंटा। जोडी लाल-हरे मीना की ।
श्रंगार मध्य को । ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री - मोहनथार, नित्यनेग ।

माघ सुद 12

साज सफेद । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के
वस्त्र, वाघा सफेद । श्याम खिडकी की पाग, जमाव कतरा । लाल मीना के आभरण, श्रंगार हलको ।
ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - गुड की तवापुडी, नित्यनेग ।

माघ सुद 13

साज सफेद । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र अरगजी (हलके केसरी) चाकदार वागा । श्रंगार केसरी खूंट के दुमाला पे मीना को सेहरा ।
लाल मीना के आभरण, सिंगार भारी । आज गादी के श्रंगार ऊपर चंपकली धरें ।
कुण्डल मकराकृत । अक्काजी की माला आवे । ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
(श्रंगार दर्शन मे 'भामिनि चंपे की कली' यह कीर्तन होय) । सामग्री - छुट्टी बूंदी, नित्यनेग ।
शयन मे दुमाला रहे, अनोसर मे सादा अरगजी पाग धरके पोढे ।

माघ सुद 14

साज सफेद । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के ।
वस्त्र सफेद । श्रंगार पाग-कतरा । श्रंगार हलको, जोडी हरे मीना की । सामग्री- नित्यनेग ।
ठाडे वस्त्र लाल ।

माघ सुद पूर्णिमा
(डंडा रोपण को उत्सव)

साज - चंदन की चौकडी वालो । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
गादी मोहरा चंदन के चौकडी मंडी भई ।
वस्त्र सफेद । श्याम बाहर खिडकी की पाग । कतरा सादा मोरपिछ को ।
2 कर्णफूल । सोना के आभरण, श्रंगार हलको । चोवा की चोली होय ।
(ठाडे स्वरुप के घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल)
सामग्री - मीठी कचोरी, हांडी, बिलसारू और सब सामग्री उत्सव की ।
* आजसे खेल समय कपोल मंडे ।
* पोटली आवे, पिचकारी आवें ।
* डंडा रोपन सू 2 राग खुलें । सवेरे बिलावल, सांझ कू गौरी ।

फागुन वद 1

साज- चंदन की चौकडी वालो । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के ।
वस्त्र गुलाबी । श्रंगार पाग-जमाव को कतरा । श्रंगार मध्य को,जोडी सोना ।
ठाडे स्वरुप के चाकदार, ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री - बूंदी के लड्डुआ, नित्यनेग ।
* आज सू सोना के सिंगार प्रारंभ ।

फागुन वद 2

(गुलाल की चोली)

साज- चंदन की चौकडी वालो । फर्गुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र हरे (बिना किनारी के) । हरी पाग लाल खिडकी की, लाल दोहरो कतरा ।
गुलाल की चोली, जोडी सोना - श्रंगार हलका । ठाडे स्वरुप के मोजाजी और कटि पटुका लाल, ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।
(* जा दिन चोली होय वक्षस्थल खेले नहीं ।)

फागुन वद 3

साज- चंदन की चौकडी वालो । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के ।
वस्त्र सफेद । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी सोना, श्रंगार हलका । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 4

साज- चंदन की चौकडी वालो । फरगुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र सफेद । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी सोना, श्रंगार हलका । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 5

साज- चंदन की चौकडी वालो । फरगुल-गद्दल लाल साटिन के ।
गुलाबी वस्त्र चाकदार, श्रंगार सोने के सेहरा को । मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी - चंद्रहार धरें ।
जोडी सोना की । अक्काजी की माला धरें । ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 6

साज- चंदन की चौकडी वालो । फरगुल-गद्दल हरे साटिन के ।
वस्त्र सफेद । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी सोना, हलका श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 7

(श्रीनाथजी को पाटोत्सव)

* आज सू वसंती छींट के वस्त्र शुरु ।
साज नयो केसरी चढे । गादी, तकिया, पेंडा सब केसरी मलमल बिना किनारी के ।
फरगुल-गद्दल हरे साटिन के । मंगला मे फरगुल आवे, श्रंगार सू ओढनी धरें ।
(श्रंगार सू लालन के फरगुल और ठाडे स्वरुपन के मोजाजी बडे होजावें) ठाडे वस्त्र सफेद ।

दोहेरो अभ्यंग ।
वस्त्र केसरी चाकदार, बिना किनारी के । श्रंगार कुलह केसरी, 3 मोरपंख को जोड ।
मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी । जोडी आभरण फिरोजी मीना के।अक्काजी की माला धरें ।
चोटी आवे । चोवा की चोली होय ।
* राजभोग धरते समय भोग मंदिर मे -
श्रीनाथजी ठाकुरजी के दक्षिण मे न्यारी गादी पे बिराजें । श्रीनाथजी को थाल, सामग्री सब न्यारी आवे । श्रीनाथजी के पीछे 1 तकिया बडो, गद्दल केसरी, दोहरी तुई वालो उपरना आवे ।
श्रीनाथजी कू न्यारी गादी पे पधराय - गुंजा माला दोहरी आवे तथा फूलमाला धरें । ठाकुरजी के पास बिराजती श्रीजी की वेणुजी श्रीनाथजी के दक्षिण में बिराजे । और श्रीनाथजी को खेल होवे ।
शंख,घंटा,झालर बजे। फेर श्रीनाथजी को तिलक होवे, बीडा धरें। आरती-राईनोन न्योछावर होय ।
श्रीजी कू भेंट होय । फिर राजभोग नित्य प्रमाणे धरनें।
* ठाकुरजी आज पलना मे खेलें (आजसू छुटभैयान के घरन मे पलना मे खेल शुरु होय)
* भीतर तिलक- खेल सब श्रीजी को होय, ठाकुरजी को नहीं ।
* श्रीठाकुरजी माला राजभोग मे बाहिर धरें, भीतर नहीं । सो उत्थापन मे बडी होय ।
* आज सू छोगा-छडी राजभोग मे आवे ।
* आज राजभोग दर्शन मे गादी, साज सब भारी खेले । आरती बाद 1 रसिया सन्मुख मे गबै ।
* आज के बाद शयन मे नारंगी के दीवला बन्द ।
* आज सू कीर्तन मे सब राग खुलें ।
* आज सू बैठे रसिया रतनचौक मे नित्य गबैं ।

उत्सव भोग : आखो पाटिया केसरी । वारा मनोहर के लडुआ को । खीर संजाप की दूनी ।
हांडी, मीठो शाक, चलनी मेवा की छाब, लीला मेवा । ठोर, मठडी, खरमंडा, सूरजमंडा।
माखन-मिश्री, दही दोनों । केसरी - पेडा, बर्फी, बसौंधी, खोवा मलाई पूरी, कच्चे पक्के संधाना । पांच भात, बाटी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया, तिलवडी-ढेबरी, भाका भुकी तथा भोग उत्सववत । * आज फलफूल-दूधघर को थाल खेल को सिद्ध होय ।

<u>फागुन वद 8</u>
साज रंग छापेलो (फागुन को)।
आज सू गादी चित्री वाली आवे ।
वस्त्र पतंगी । मुकुट-काछनी को सिंगार । कुण्डल मयूराकृत । आभरण-मुकुट सब सोना के ।
श्रंगार भारी- अक्काजी की माला आवे । अनोसर मे पतंगी पाग धरें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुप चोली श्याम धरें, काछनी पतंगी और ठाडे वस्त्र सफेद)।

<u>फागुन वद 9</u>
साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र सफेद । श्रंगार फेंटा को , चंद्रिका और बायों कतरा आवे ।
सोना के आभरण । श्रंगार मध्य को । ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 10

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र सफेद मलमल । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी सोना की । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
श्रंगार हलको (ठाडे वस्त्र पीले) ।

फागुन वद 11

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र अरगजी (हलके केसरी) । श्रंगार मुकुट काछनी- कुण्डल मयुराकृत । श्रंगार भारी-अक्काजी की माला आवे । आभरण-मुकुट सब सोना के । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुप चोली श्याम धरें, काछनी अरगजी (हलके केसरी) और ठाडे वस्त्र सफेद) ।
अनोसर मे अरगजी पाग धरें ।

फागुन वद 12

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
अबीर की चोली ।
वस्त्र पतंगी (बिना किनारी के), पतंगी पाग सफेद खिडकी की । सफेद दोहरो कतरा ।
हरे मीना के आभरण, श्रंगार हलको । (ठाडे वस्त्र हरे) सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 13
(शिवरात्री के श्रंगार)

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र लाल (बसंती छांट के) चोवा की चोली ।
श्रंगार सोना को मुकुट, जोडी सोने की । मयुराकृत कुण्डल - श्रंगार भारी । चोटी नही धरें ।
(ठाडे स्वरुप के श्याम चोली, काछनी-पटुका लाल, ठाडे वस्त्र सफेद)
* गादी पे मोहरा वाघंबर के चित्र वालो धरें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद 14

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र अरगजी (हलके केसरी) । सोना को सेहरा । खूंट के दुमाला दरयाई । अक्काजी की माला।
चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम, पटुका अन्तवास को । मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन वद अमावस्य

साज रंग छापेलो (फागुन को)।
वस्त्र श्याम (चोवा के वस्त्र) घेरदार । गोल पाग, चमकनी चंद्रिका गोल । सोना के आभरण, श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र हरे । सामग्री - बेडमी, नित्यनेग ।

फागुन सुद 1

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र गुलाबी, गुलाबी ग्वाल पगा, चंद्रिका धरें । श्रीकर्ण मे लोलकबंदी कर्णफूल ।
जोडी सोना की, श्रंगार मध्य को - चंद्रहार, अक्काजी की माला धरें ।
(चाकदार वागा, ठाडो वस्त्र श्याम) । सामग्री- लुचई, नित्यनेग

फागुन सुद 2

(चन्दन की चोली)

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र सफेद (बिना किनारी के) । सफेद पाग केसरी खिडकी की, केसरी दोहरो कतरा ।
चन्दन की चोली । लाल मीना के आभरण, श्रंगार हलको । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।
(* जा दिन चोली होय वक्षस्थल खेले नहीं ।)

फागुन सुद 3

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र सफेद । पाग सफेद (ज़री की खिडकी), सुनहरी कतरा । जोडी सोना श्रंगार हलको ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन सुद 4

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र सफेद । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी सोना, श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन सुद 5

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र सफेद । सफेद वस्त्र को टिपारा, कतरा चंद्रिका चमकने । सोने के आभरण । मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी- अक्काजी की माला । सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

फागुन सुद 6

साज सफेद, लाल चिडिया (छापेलो) ।
वस्त्र गुलाबी वसंती छींट के । गोल पाग, कतरा । श्याम मीना के आभरण , श्रंगार हलको ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन सुद 7

(श्रीमथुराधीशजी को पाटोत्सव)

साज सफेद मलमल । गादी पे मोहरा अंगूर के चित्रो भयो ।
पतंगी वस्त्र । सोना को सेहरा । सोना के सब आभरण, श्रंगार भारी- अक्काजी की माला ।

पाग पर अंगूर की लूम और गादी पर गठीली हमेल धरें । सामग्री - राजभोग मे अंगूर की सब सामग्री आवें, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुप के वागा चाकदार, पटुका अन्तवास को और ठाडे वस्त्र मेघश्याम) ।
* आज फलफूल-दूधघर को थाल खेल को सिद्ध होय ।
* राजभोग मे गुलाल कुण्ड आवे, भारी खेल होय ।
* शयन मे त्रवल, सोना की पाग धरें । लूम तुर्रा सोनेरी ।
* अनोसर मे सादा पतंगी पाग धरके पोढें ।

फागुन सुद 8
(होलाष्टक)
साज-वस्त्र सफेद । श्रंगार सफेद पाग (सोनेरी खिडकी), कतरा जरी को । जोडी सोना ।
श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

फागुन सुद 9
(बगीचा मे पधारें)
साज सफेद मलमल । वस्त्र सफेद (केसर छापे भये) । श्रंगार मुकुट मीनाकारी को ।
आभरण फिरोजी मीना । मयुराकृत कुण्डल, भारी श्रंगार- अक्काजी की माला।
चोवा की चोली । (ठाडे स्वरुप श्याम चोली धरें, काछनी सफेद केसर छपी,रास पटुका और ठाडे वस्त्र सफेद)

बगीचा को प्रकार :-
राजभोग धरके बगीचा को अधिवासन होय । बगीचा निज तिबारी अथवा गोवर्धन चौक मे बंधे ।
राजभोग सराके बगीचा मे पधारे । पगमण्डा मंडे । फूल को मुकुट धरनो, मालाजी धरने ।
भोग आवें । यथासमय भोग सराय आचमन मुखवस्त्र करके दर्शन खुले ।
बीरी पीछे भारी खेल करावनो । गुलाल अबीर उडे ।
आरती-राईनोन, न्योछावर-उपरना बालभोगिया कू जाए । ठाकुरजी खुले मे भीतर पधारें ।
* ठाकुरजी बगीचा मे चौंतरा पे बिराजें । बगीचा मे फुंवारा चले ।
* बगीचा बाद राजभोग आरती नित्यवत भीतर निजमंदिर मे सिंहासन पे होय ।
* राजभोग और संध्या भोग दोनो समय फूल को मुकुट आवे ।
* आज से नित्य आरती बाद बैठे रसिया सन्मुख मे चौक मे गबैं ।
सामग्री - आधो पाटिया, कुर के गुंजा, मनोहर के लडुआ, दूधघर, अनसखडी, सखडी की सब सामग्री उत्सव वत । * आज फलफूल-दूधघर को थाल खेल को सिद्ध होय ।

फागुन सुद 10
साज-वस्त्र सफेद डोरिया के किनारी वाले । छज्जेदार किनारी को चीरा । लूम की कलंगी ।
लाल मीना की जोडी, श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र हरे। सामग्री- मनोर के लडुआ, नित्यनेग ।
* आज सूं गारी गावें ।

फागुन सुद 11
(कुंज एकादशी)
साज सफेद मलमल । वस्त्र केसरी डोरिया के किनारी के वस्त्र ।
श्रंगार मुकुट काछनी- मकराकृत कुण्डल । श्रंगार भारी, जोडी आभरण लाल सफेद मीना के। अक्काजी की माला। चोवा की चोली ।
(ठाडे स्वरुप श्याम चोली धरें, काछनी श्याम-केसरी, उपरना केसरी गाती को, ठाडे वस्त्र सफेद)
* कुंज बंधे राजभोग मे फूल को मुकुट धरें ।
सामग्री - आधो पाटिया, सकरपारा, केसरी घेवर । गुलाब को सीरा और दूधघर-अनसखडी, सखडी की सब सामग्री उत्सव की ।

फागुन सुद 12
साज सफेद मलमल । वस्त्र सफेद वसंती छींट के । गोल पाग, दुहेरो कतरा । श्रंगार हलको । जोडी हरे मीना की । ठाडे वस्त्र केसरी । सामग्री- नित्यनेग ।

फागुन सुद 13
(बगीचा)
* मंगला सू शयन तक श्रीठाकुरजी बगीचा मे बिराजें ।
साज-वस्त्र गुलाबी । श्रंगार गुलाबी मीना को मुकुट-काछनी । जोडी लाल मीना की, बाकी सब गुलाबी माना - लाल मीना के मिलमा । श्रंगार भारी।
चोवा की चोली । अक्काजी की माला आवे ।
(ठाडे स्वरुप श्याम चोली धरें, काछनी-सूथन-पटुका गुलाबी, ठाडे वस्त्र सफेद)
अनोसर मे गुलाबी पाग धरके पोढें । सामग्री- मनोहर के लडुआ, नित्यनेग ।
* राजभोग खेल (बगीचा मे) सामग्री सिंहासन के पास आवे ।
* सामग्री अनोसर में शईया के पास अन्दर सजे ।
* भारी खेल होय, अबीर, चोवा, कंकू सू भी खेलें ।
* अबीर-गुलाल उडे पीछे उठाव होय । साज मण्डे, राजभोग आरती थाली की होय । न्योछावर होवे ।

फागुन सुद 14
साज सफेद । वस्त्र केसर के बूटा वारे । पाग पे कतरा मच्छाकृति का । जोडी फिरोजी मीना । श्रंगार हलको । ठाडे वस्त्र लाल । सामग्री- बाटी, नित्यनेग ।

फागुन सुद पूर्णिमा
(होली को उत्सव)
अभ्यंग-उबटना होवे । सफेद वस्त्र किनारी के । पाग श्याम खिडकी की, सादी चंद्रिका । 4 कर्णफूल, भारी श्रंगार । चोवा की चोली । सफेद घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल ।

सामग्री- आखो पाटिया । पूरे दिन सेव के लड्डुआ आरोगें । हांडी, दूधघर के मलडा, पुवा, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा ।
* अति भारी खेल होय ।
* होरी प्रदीपन बाद ठाडो वेत्र धरें, श्रीप्रभुन की दाढी रंगे । गुलाल उडे । आरती होय ।
* गुलाल उडे तब अरस परस भी दाढी रंगे । * कीर्तनिया गारी सुनावें ।
* अनोसर पीछे निजमंदिर आदि की सब गुलाल निकालनी ।

चैत्र वद 1

(डोल को उत्सव)

अभ्यंग-उबटना होवे ।
* डोल के दिन कपोलमंडन, पिचकारी एवं पोटली नहीं आवे ।
साज सफेद । सफेद जामदानी के वस्त्र बिना किनारी के । सफेद छज्जेदार पाग, सादी चंद्रिका । कर्णफूल 4, श्रंगार भारी । जोडी लाल-हरे मीना की । सफेद घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र लाल ।

सामग्री- ठोड, मठडी को वारा । सब उत्सव की सामग्री ।
पहेला, दूसरा तथा तीसरा भोग :- बूंदी, सकलपारा, दहींबडा, सिखरनबडी, संधाना, दुधघर की बटेरी, आम ।
चौथा भोग :- बूंदी, सकलपारा, दहींबडा, सिखरनबडी, संधाना, दुधघर की बटेरी, लीलामेवा की छाब, आम के चार टोकरा, दूधघर का साज, दूधघर अनसखडी की सब सामग्री आवे ।

* पहलो भोग राजभोग संग आवे ।
* राजभोग आरती भीतर होय । कीर्तनिया 1 बिना समाज के गावे ।
* फिर डोल को अधिवासन होय । फेर श्रीठाकुरजी कू पधरावें, माला वोही रही आवे ।
* झालर घंटा बजते मे डोल मे पधरावने। सूक्ष्म खेल होय,गुलाल अबीर उडे,फेर दूसरो भोग आवे * समय पे भोग सरें, दर्शन खुलें । बीरी आरोगें । भारी खेलें, अबीर गुलाल उडे ।
* तीसरो भोग और दर्शन भी याही प्रकार सू करनो ।
* चौथो भोग धरते समय झारी जमना जल की आवे । आम के टोकरा आवें ।
भोग सरें - 2 बीडा बडे, 2 छोटे सिखोरी मे आवें ।
* चौथे भोग के दर्शन खुलें, बीरी आरोगें । भारी खेलें, अबीर-गुलाल उडे । छेल्ले फूल उडे ।
वेणु-वेत्र धरके आरती थाली की होय । राईनोन-न्योछावर होवे । चार परिक्रमा करनी ।
प्रसादी उपरना, श्रीजी की गुंजा गो.बालकन कू धरायके खिलावने । तथा एक दूसरे कू खिलावने ।
* खुले दर्शन मे भीतर निजतिबारी मे पधारें । भीतर पधारे बाद राईनोन होवे । महाराजश्री कू श्रीठाकुरजी के धरे भये प्रसादी माला बीडा वडे करिके धराने ।
* शीतलभोग धरने ।

* समोये जल मे अंगवस्त्र भिजोयके श्रीअंग सूं सब गुलाल विजय करनी ।
* पीछे जडाऊ गादी पर प्रभून कूं पधरायके ल़ाल जरी के आत्मसुख / वस्त्र धरनो ।

* लालन कू पुडाचीन पगडा, ठाडे स्वरुपन के लाल चीरा, सादी चंद्रिका धरें ।
* 2 लाल, 2 लीली मणी की माला, पवित्रा, गुंजा, वेणुजी यह सब श्रंगार आवें । जोडी मीना की रहे ।
पीछे अनोसर तक नित्यक्रम पहोंचनो ।

चैत्र वद 2
(द्वितीया पाट को उत्सव)
साज लाल ज़री को । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, लाल ज़री को अधिकचा आवे ।
अभ्यंग । लाल लिस्मा ज़री के वस्त्र । चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम ।
हीरा की कुलह, चमकनो जोड सुन्हेरी धरें । हीरा की चोटी धरें ।
मकराकृत कुण्डल, हीरा की जोडी, भारी श्रंगार दुहेरा - जूही, कली, वल्लभी, कमलमाला आवे ।
अनोसर में कसुमल कुलह धरके पोढें ।
* राजभोग मे गुलाब की मण्डली आवे ।
* आज सूं अंगीठी बंद ।
* गर्मी विशेष होय तो ज़री पांच दिन ही धरें, फेर रंगीन वस्त्र धरें ।
* कभी द्वितीया पाटोत्सव एकम या कभी दूज कू आगे पीछे भी आवे है ।
सामग्री - आधो पाटिया, वारा खीचडिया के नग । मेवाभात, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, सब उत्सव की सामग्री ।

चैत्र वद 3 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र हरे ज़री को । श्रंगार चीरा पाग-गोल चंद्रिका चमकनी । जोडी माणिक । श्रंगार मध्य को ।
अनोसर मे सादा पाग धरें । घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र पतंगी । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 4
साज वस्त्र केसरी ज़री के । श्रंगार जडाउ टिपारा को, चंद्रिका और कतरा ज़री के धरें ।
(चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र श्याम) । श्रंगार खांचापुर, पवित्रा धरें । मयुराकृत कुण्डल ।
अनोसर मे केसरी सादा पाग धरके पोढें ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 5
(रंग पंचमी)
साज-वस्त्र लाल ज़री के । श्रंगार मुकुट-काछनी । जोडी फिरोजा की ।
मयुराकृत कुण्डल, भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें ।
(ठाडे स्वरुप मेघश्याम चोली धरें, काछनी लाल, रासपटुका व ठाडे वस्त्र सफेद)
लाल पाग धरके पोढें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 6 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र फिरोजी ज़री के । श्रंगार चीरा पाग-कतरा । हल्को श्रंगार । आभरण गुलाबी मीना के । ठाडे वस्त्र लाल । अनोसर मे सादा पाग धरके पोढें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 7
साज- संध्या आरती के भाव की (चित्रकाम की), गोचारण की । गादी सोना की गोप-गाय वारी। वस्त्र- लाल (सलीदार ज़री तास के), श्रंगार लाल खूंट को दुमाला,मध्य मे सोनेरी भीमसेनी तुर्रा, मकराकृत कुण्डल, जोडी, सिरपेच, कलगी, सीसफूल और गादी के हार सब हीरा के, माला सब पन्ना की धरें । श्रंगार मध्य को - चंद्रहार, कली और छोटी कमलमाला धरें ।
(ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) चोटी नहीं धरें ।
अनोसर मे लाल सादा पाग धरके पोढें ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 8 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र कत्थई (तपकीरी), श्रंगार ग्वाल पगा । मोरशिखा ज़री की धरें । लोलकबंधी कर्णफूल । श्रंगार खांचापुर, जोडी हीरा । चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र श्याम । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 9 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र मेघश्याम । श्रंगार चीरा पाग-कतरा । श्रंगार हलको । आभरण हीरा-मोती के । अनोसर मे सादा पाग धरके पोढें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 10 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र पीली ज़री । श्रंगार पीलो फेंटा ज़री को, गोल चंद्रिका । हलको श्रंगार, जोडी पन्ना । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 11
साज सफेद ज़री । वस्त्र फिरोजी । डांक को मुकुट, मयुराकृति कुण्डल । माणिक के आभरण, श्रंगार भारी- चंद्रहार, पवित्रा धरें। सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुप मेघश्याम चोली धरें, रासपटुका-काछनी फिरोजी व ठाडे वस्त्र सफेद)
सादा पाग धरिके पोढें ।

चैत्र वद 12 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र पतंगी ज़री के । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी हीरा । हलके श्रंगार ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 13 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र लाल ज़री के । लाल दुमाला पे जडाऊ को सेहरा । जोडी आभरण सब फिरोजा के । कुण्डल मकराकृत, भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । (ठाडे स्वरुपन के चाकदार वागा, पटुका अंतवास को और ठाडे वस्त्र मेघश्याम) । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद 14 - श्रंगार ऐछिक
साज-वस्त्र हरे जरी-सली वारे । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी माणिक । हलको श्रंगार ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र वद अमावस्य
साज-वस्त्र श्याम । हीरा को किरीट मुकुट । आभरण सब हीरा के । मयुराकृत कुण्डल ।
श्रंगार खांचापुर - पवित्रा धरें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र सुद 1
(संवत्सर उत्सव)
* आज सू मंगला/शयन मे उपरना धरें ।
अभ्यंग-अंजन होंय ।
साज-वस्त्र लाल छापा । कसूमल कुलह, पांच चंद्रिका को जोड (हीरा के पान पे)। चोटी धरें ।
मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी दुहेरा - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । हीरा की जोडी ।
(ठाडे स्वरुप के लाल छापा को चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) ।
* आज बीरी आरोगते समय मिश्री-लीमडा पास मे धरनो । (अलग सू भोग नहीं आवे नीम कों)
* खेंचमा पंखा चढे, राजभोग मे गुलाब की फूल मंडली में बिराजें ।
* आज राजभोग दर्शन मे आरती बाद बडी आरसी देखें, फेर माला बडी होय ।
* पंडयाजी टिप्पणी-पंचांग बांचै, फेर श्रीमहाप्रभुजी की माला बडी होवे ।
* आज पूरे दिन आरती थाली की ।
* आज सूं श्रंगार बडे होवें तब वागा बडो होजाए ।
* शयन मे आधो माला को जोड शुरु होवे ।

सामग्री - आखो पाटिया । मनोहर के लडुआ, बडा की छाछ, बिल्सारू, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया, सब उत्सव की सामग्री।

चैत्र सुद 2
साज श्याम छापा के । श्याम छापा के वस्त्र । लाल खूंट को दुमाला । फिरोजा के आभरण ।
श्रंगार मध्य के । चंद्रिका 1 श्रीमस्तक पर धरें (कलगी पे) ।
(ठाडे स्वरुप के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र पीले) । सामग्री- नित्यनेग ।

चैत्र सुद 3
(प्रथम गणगौर)
साज गणगौर के चित्र वालो ।
चौफुली चूंदडी के वस्त्र लाल । छज्जेदार पाग, लूम की कलंगी धरें । त्रवल के विशेष श्रंगार होय ।
हीरा के आभरण, श्रंगार हलको । सीस्फूल पे लूम-तुरी धरें । (चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र पोपटी)
सामग्री- मिठाई के थाल आवें । नित्यनेग ।

चैत्र सुद 4
(द्वितीय गणगौर)
साज गणगौर के चित्र वालो ।
पचरंगी लहरिया के वस्त्र । पाग, चमकनो कतरा । हीरी-पन्ना के आभरण । 4 कर्णफूल ।
श्रंगार हलको । (चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद) सामग्री- मिठाई के थाल आवें । नित्यनेग ।

चैत्र सुद 5
(तृतीय गणगौर)
साज-वस्त्र गुलाबी । पन्ना को इकनगा मुकुट,पन्ना की जोडी । भारी श्रंगार- चंद्रहार, पवित्रा धरें।
कुण्डल मयुराकृत । (ठाडे स्वरुप के चोली, काछनी गुलाबी और ठाडे वस्त्र सफेद) ।
सामग्री- बूंदी की मिठाई के थाल, नित्यनेग ।
* गुलाब की फूलमण्डली होवे राजभोग मे ।

चैत्र सुद 6
(श्रीगुसांईजी के छठे लालजी श्रीयदुनाथजी को उत्सव)
साज-वस्त्र केसरी छापा । श्रंगार कुलह, जोड चमकनो सोनेरी । कुण्डल मकाराकृत, चोटी धरें ।
श्रंगार भारी - चंद्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । जोडी माणिक ।
(ठाडे स्वरुपन के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम)
सामग्री- आधो पाटिया । दूध की हांडी, दूधघर के मलडा, नित्यनेग ।

चैत्र सुद 7
साज / वस्त्र श्याम चूंदडी । श्रंगार पाग पे सोनेरी जमाव (नागफनी जैसो) कतरा।
श्रंगार खांचापुर । जोडी हीरा की । (ठाडे स्वरुपन के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र गुलाबी)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र सुद 8
साज-वस्त्र लाल छापा । गोल पाग, सादी चंद्रिका । श्रंगार हलको, पन्ना के आभरण ।
(घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र पीले) सामग्री- नित्यनेग ।

चैत्र सुद 9
(रामनवमी)

साज पीलो मखमल । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होंय, अधिकचा आवे ।
अभ्यंग-उबटना होय । अंजन, कमलपत्र होवें ।
वस्त्र केसरी डोरिया के । केसरी कुलह, पांच चंद्रिका को जोड (हीरा के पान पे धरे)।
जोडी माणिक, बाकी सब हीरा को । कुण्डल मयुराकृत, बगनखा, चोटी हीरा की धरें ।
श्रंगार भारी दुहेरा- जूही, कली, चंद्रहार, वल्लभी,कमलमाला धरें। कस्तूरी की माला आवे ।
(ठाडे स्वरुपन के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद) ।
* आज सू मंगला मे उपरना तथा शयन मे आडबन्ध धरें ।
* मंगला सु शयन तक सब आरती थाली की होंय ।
* कुंजा, आबखोरा, गेंद छडी सब साज (सोना) उत्सव को ।
* राजभोग में गुलाब की फूलमंडली ।
* राजभोग में छोटे बालकृष्णजी के पंचामृत होवें । पंचामृत पीछे उनकु पीताम्बर, माला, तिलक-अक्षत, तुलसीजी समर्पनी, (तिलक-बीडा सब स्वरुपन कू होय) पीछे उत्सव भोग आवें ।
* उत्सव भोग सरायके राजभोग आरती थाली की । राईनोन, न्योछावर होय ।
* ठाकुरजी की माला बडी नहीं होय, सिर्फ श्रीमहाप्रभुजी की होय ।
(सबनकी माला उत्थापन मे बडी होय)
सामग्री- आखो पाटिया । हांडी, ठोड-मठडी, मेवाबाटी, बडे की छाछ, खीर चोखा की, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया सब उत्सव की सामग्री ।

चैत्र सुद 10
साज रामलीला के चित्र को ।
परचारगी के श्रंगार । सामग्री- बूंदी के लडुआ, नित्यनेग ।

चैत्र सुद 11
(श्रीमहाप्रभुजी के उत्सव की बधाई बैठे)
साज केसरी । वस्त्र केसरी डोरिया के । टोपी केसरी झालर की (कुंजा टोपी) । कर्णफूल 4 ।
माणिक की जोडी । श्रंगार खांचापुर । (ठाडे स्वरुपन के घेरदार वागा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) ।
* श्रंगार मे आज से टोपी प्रारंभ होवे । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र सुद 12
साज-वस्त्र हरा-सफेद लहेरिया । श्रंगार पाग- कतरा (टिपारा जैसो कतरा) । जोडी गुलाबी मीना की, श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग

चैत्र सुद 13
साज-वस्त्र लाल लहेरिया । श्रंगार टोपी । जोडी पन्ना, श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग

चैत्र सुद 14
साज वस्त्र हरे लहेरिया । श्रंगार पाग-कतरा । जोडी फिरोजा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

चैत्र सुद पूर्णिमा

साज रास पंचाध्यायी वालो । वस्त्र गुलाबी मलमल रुपेरी किनारी के ।
डांक को मुकुट। कुण्डल मकराकृत, भारी श्रंगार- चंद्रहार,पवित्रा, कुमुदनी (नीलकमल माला धरें)
जोडी आभरण हीरा के । (ठाडे स्वरुपन के रासपटुका-काछनी गुलाबी, ठाडे वस्त्र सफेद) ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख वद 1

साज नेट । वस्त्र रंगीन लहेरिया के धरें ।
श्रंगार टोपी, जोडी माणिक । हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख वद 2

साज नेट । वस्त्र लहेरिया । श्रंगार टोपी, जोडी पन्ना । हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग

वैशाख वद 3

साज नेट । वस्त्र लहेरिया । श्रंगार टोपी, जोडी फिरोजा । हलको श्रंगार ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग

वैशाख वद 4

साज नेट । वस्त्र लहेरिया । श्रंगार टोपी, जोडी हीरा । हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख वद 5 - (श्रीआचार्यजी के उत्सव के आगम श्रंगार)

साज-वस्त्र केसरी । श्रंगार - कुलह- 5 को जोड, जोडी हीरा । मकाराकृत कुण्डल,चोटी मोती की ।
भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । (ठाडे स्वरुप चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख वद 6

साज नेट, वस्त्र लहेरिया। श्रंगार टोपी, जोडी पन्ना । श्रंगार हलको । सामग्री-लुचई, नित्यनेग

वैशाख वद 7

साज-वस्त्र केसरी नेट । श्रंगार टोपी, जोडी फिरोजा । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग

वैशाख वद 8

साज नेट । वस्त्र लहेरिया । श्रंगार टोपी, जोडी माणिक । श्रंगार हलको। सामग्री- लुचई, नित्यनेग

वैशाख वद 9

साज-वस्त्र कसूमल । गोल पाग, सादी चंद्रिका । श्रंगार हलको, सुनेरा की जोडी ।

वैशाख वद 10

(श्रीनवनीतप्रियाजी के मंदिर में पांच स्वरुप पधारे सो उत्सव- ति.श्रीगोवर्धनलालजी ने पधराए)
साज- श्याम साटिन पर सफेद कसीदा की गाय ।
वस्त्र कसूमल रुपेरी किनारी के । झीने मोती को मुकुट । हीरा-मोती के आभरण ।
कुण्डल हीरा के मकराकृत, भारी श्रंगार- चंद्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें ।
सामग्री- आमरस की बूंदी के लडुआ, बिल्सारू, नित्यनेग ।

वैशाख वद 11

(श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी को उत्सव)

* गादी तकियान पर आधी सफेदी बिछे ।
* निजमंदिर मे धुरी हल्दी को चौक मंडे ।

साज- लाल टाटबन्धी को (जन्माष्टमी वारो) । दीवालगिरी, तीनों चंदरवा ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, अधिकचा आवें । श्रीठाकुरजी के अभ्यंग उबटना, अंजन-कमलपत्र होंय । वागा-वस्त्र केसरी मलमल रुपेरी किनारी के ।
(ठाडे स्वरुपन के चाकदार वागा, ठाडे वस्त्र सफेद) ।
कुलह किनारी के चित्र की । पांच चंद्रिका को जोड (तीन पखडा के कलगी पे धरें)।
कस्तूरी की माला आवे, श्रंगार भारी दुहेरा- उत्सव माला सब जन्माष्टमी वत श्रंगार । कटला धरें । जोडी माणक बाकी सब हीरा को । मिलमा आभरण धरें । माणक के मकराकृत कुण्डल, जडाव चोटी आवे । दुग्दुगी धरें । अनोसर में कुलह, ताईत धरके पोढें ।

* राजभोग दर्शन मे जडाऊ कुंजा, आबखोरा सब साज (सोना) उत्सव को आवे ।
* खंड-पाट-चौकी मांडनो, वेणु-वेत्र धराय, आरसी दिखावनी...झालर घंटा बजे श्रीठाकुरजी को तिलक अक्षत करके बीडा जेमनी आडी धरने । आरती करनी ।
* फेर श्रीमहाप्रभुजी कू तिलक-अक्षत होय, आरती होय । राईनोन न्योछावर एक साथ श्रीठाकुरजी कू ही होंय । फेर बडी आरसी देखें ।
* श्रीठाकुरजी की माला बडी होय, श्रीमहाप्रभुजी की माला बडी नहीं होय (उत्थापन मे होय)।
* पूरे दिन थाली की आरती रसेले दिवला की होय । राजभोग आरती चून के दिवला की 8 मुठिया वारी । * राजभोग आरती बाद आपस मे तिलक करनो ।
* शय्याजी में आज से सांकल चढे । उत्थापन भोग बाद नीचे उतरे ।
* मूढाजी को साज बदले, अधिकचा सब टाटबंधी को आवे ।

सामग्री- वारो बूंदी जलेबी को । आखो पाटिया । पांच भात, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया तथा दूध्घर-अनसखडी-सखडी मे सब उत्सव की सामग्री ।
राजभोग आरोगवे को क्रम श्रीगिरिधरजी उत्सव वत ।

वैशाख वद 12

परचारगी को सिंगार । साज-वस्त्र सब वोही रहे । हीरा को पान, बगनखा धरें ।
चोटी मोती की धरें (ठाडे स्वरुप के पिछोडा और ठाडे वस्त्र सफेद)

* आज सो वागा बंद होजाए ।
* भोग आरती और शयन मे चंदन के बंगला मे बिराजें । फेर मंगला श्रंगार बंगला में होवे ।

सामग्री- बूंदी के लड्डुआ, नित्यनेग ।

वैशाख वद 13

साज-वस्त्र वडते । केसरी झालर की टोपी (कुन्जा टोपी), कर्णफूल 4 । श्रंगार खांचापुर ।
पवित्रा धरें । छोटो कंठला आवे । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुप के धोती उपरना अंतवास को, पाग गोल चंद्रिका, ठाडे वस्त्र पोपटी)

वैशाख वद 14

(ऐच्छिक)
साज- गुलाबी मलमल को । वस्त्र गुलाबी लहेरिया, श्रंगार टोपी । जोडी पन्ना - हलको श्रंगार ।
(ठाडे स्वरुप के पाग-पिछोडा, ठाडो वस्त्र कत्थई) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख वद अमावस्य

(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र श्याम चूंदडी (गृहबंधन को) । श्रंगार किरीट की टोपी, कर्णफूल सादा । श्रंगार हलको ।
(ठाडे स्वरुपन के पिछोडा तथा ठाडो वस्त्र हलको श्याम) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 1

साज सफेद कसीदा को । वस्त्र सफेद मलमल लाल कसीदा के ।
श्रंगार डांक को मुकुट । कुण्डल मयुराकृति, श्रंगार भारी । जोडी हीरा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग
(ठाडे स्वरुपन के लाल मलमल की काछनी, रास पटुका तथा ठाडे वस्त्र सफेद)
* आज के बाद मुकुट के श्रंगार अषाढ (शुक्ल एकादशी) तक बंद ।

वैशाख सुद 2

(श्रीमन्मथरायजी गादी बिराजे उत्सव)

साज-वस्त्र कसूमल । गोल पाग, सादी चंद्रिका । पन्ना के आभरण, श्रंगार हलको ।
(ठाडे स्वरुपन के धोती-उपरना तथा ठाडे वस्त्र पीले)
* आज सूं कार्तिक सुद 10मी ताई कमल अंगीकार होंय। श्रीहस्त अथवा तकिया पे ।
* शयन आरती मे कमल पे बिराजें, अधकि के बीडा पास मे आवें ।
* उष्णकालिक सेवा की तैयारी करनी ।

वैशाख सुद 3

(अक्षय तृतीया)

साज चन्दनी छापा को । चंदरवा, टेरा, पंखा सफेद बंधवावने। अधिकचा चन्दनिया आवें ।
* आज सू शय्या, पलंगडी, निजमन्दिर के द्वार,शयन के पाट-सांगामाची सब चंदन काष्ठ के आवे।
* आज सूं गादी मोती की आवे (नित्य मे श्याम मोहरा वाली, उत्सव पे मेहरून मोहरा वाली)।

अभ्यंग । वस्त्र सफेद मलमल के केसर-चंदन की छापा के कोर के । सफेद कुलह-चन्दन छापा की, 3 चंद्रिका को जोड (मोती की तीन पंखडा की कलगी पे धरें)। जोडी मोती, श्रंगार भारी । कुण्डल मकराकृति हीरा के । आज हांस नहीं धरें - चोटी नहीं धरें । दुग्दुगी धरें हीरा की ।
अनोसर में कुलह धरके पोढें । (ठाडे स्वरुप पिछोडा धरें, ठाडे वस्त्र अरगजी केसरी)
चन्दन धरिवे को प्रकार :-
* राजभोग सरे बाद गुलाबदानी-2, चंदन की बरनी,माटी के कुंजा,पंखा सब को अधिवासन होवे ।
* कुंजा-करवडी, गुलाबदानी-बरनी यथास्थान पधराय पीछे दर्शन खुलें ।
* झालर घंटा शंखनाद होते भये में श्रीठाकुरजी कूं चंदन धरावनो ।
* वक्षस्थल में, दोनों श्रीहस्त में, दोनों चरणार्विंद मे धरावें ।
* तुलसी समर्पनी फेर पंखा करने । पीछे उत्सव भोग धरने ।
* समय भये भोग सराय थाली की आरती करनी ।
* आज सू माला को जोड पूरो ।
* कसूमल, गहरे पीले, लहरिया, चुंदडी, हरे, श्याम वस्त्र आज सूं नहीं धरें ।
* तकिया की पट्टी आज से बन्द ।
सामग्री -आखो पाटिया । सतुआ को वारा । मनोर के लडुआ, सब उत्सव की सामग्री ।
मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया, दही-बडा । खीर दूनी ।
उत्सव भोग मे :- हांडी । सुका मेवा, चलनी मेवा, मूंग की अंकुरी, मूंग की दाल, चना की दाल ।
मीठो शाक, चीरोंजी के नग, बीज चारोली के लडुआ, आम की बर्फी, आम का सीरा । दो पना ।
सतुआ के लडुआ । दही भात एवं दूधघर को साज सामग्री ।

वैशाख सुद 4
(श्रीगोवर्धनेशजी महाराज उत्सव)
परचारगी को सिंगार । सब वस्त्र-श्रंगार वडतो । 3 को जोड मोती के पान पे आवे,
दुग्दुगी के ठिकाने बगनखा सींप को धरें ।
सामग्री- आधो पाटिया । हांडी - जलेबी । मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

वैशाख सुद 5
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र गुलाबी । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
* आज से हांस, बगनखा बंद । आज से तीन माला (छोटी) श्रीअंग पे आवे ।
* आज सू लालन टोपी धरें तो ठाडे स्वरुप धोती उपरना धरें, लालन पाग धरें तो पिछोडा धरनो।
* आज से सफेद गुंजा श्रंगारी की इच्छा पे ले सकें ।

वैशाख सुद 6
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र हलके बदामी । श्रंगार फेंटा । जोडी मोती । श्रंगार हलको, कर्णफूल मोती के ।
(ठाडे स्वरुप फेंटा-सूथन पटुका धरें, ठाडे वस्त्र सफेद) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 7
(श्रीलाल-गिरिधरजी को उत्सव)
साज-वस्त्र केसरी डोरिया के । केसरी खिडकी की पाग, लूम की कलंगी । हीरा की जोडी ।
श्रंगार हलको । सामग्री-सिखरनभात, नित्यनेग ।
* आज सूं ठाडे वस्त्र धरने बन्द ।
* आज सूं फुवारा, जल की हौज, छिडकाव प्रारंभ ।

वैशाख सुद 8
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी मोती । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 9
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 10
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी मोती । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 11
(ऐच्छिक)
साज केसरी नेट, वस्त्र अरगजी मलमल । श्रंगार मोती को सेहरा, जोडी मोती । श्रंगार भारी । चोटी मोती की । (ठाडे स्वरुप पिछोडा धरें, पटुका अंतवास को आवे) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 12
साज-वस्त्र गुलाबी मलमल के । गोल पाग, सादी चंद्रिका । जोडी मोती, श्रंगार हलको ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

वैशाख सुद 13
(बडा मन्दिर - श्रीबालकृष्णलालजी को पाटोत्सव)
गादी मेहरून मोती की । पलंगडी चांदी की, वापे केसरी अधिकचा आवे ।
साज- केसरी नेट (फूलवाला) । वस्त्र केसरी (रुपेरी तुईवाले) ।
श्रंगार केसरी छज्जेदार पाग, लूम की कलंगी । कर्णफूल 4, श्रंगार खांचापुर ।
आभरण फिरोजा के, पवित्रा धरें ।
सामग्री- आधो पाटिया । हांडी, जलेबी, दहीबडा, दहीभात-अमरस भात, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया ।

वैशाख सुद 14
(नृसिंह चतुर्दशी)
अभ्यंग । गादी मेहरून मोती की । पलंगडी चांदी की, वापे केसरी अधिकचा आवे ।
साज-वस्त्र केसरी मलमल रुपेरी किनारी के । श्रंगार केसरी कुलह, तीन चंद्रिका को जोड (3 पखडा की कलगी पे धरें)। जोडी हीरा, बाकी सब मोती को । मकराकृति कुण्डल हीरा के । पिछोडा, श्रंगार भारी । * आज बगनखा अवश्य धरें (सो पोढती वक्त बडो होय)। कटला नहीं धरें । अनोसर मे कुलह धरिके पोढें ।
सामग्री- वारा ठोड-मठडी को । आधा पाटिया । मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया, सब उत्सव की सामग्री ।
उत्सव भोग मे : फराल के व्यंजन, विविध प्रकार के पना, लीला मेवा की छाब, दूधघर की सब सामग्री भोग आवे । शंखोदक, धूप-दीप होय । झारी नई भराय ।
* आज सू श्रीयमुनाजी को थाल शुरु ।
* आज पट बाघ-बकरी को मंडे ।
* शयनभोग सराय के श्रीठाकुरजी कू चौक मे फूलमंडली होवे । माला धरें । झारी भरें । चन्दन की बरनी, बीडा धरें । पंचामृत की तैयारी कर राखनी ।
* चांदी के चकला ऊपर कुमकुम को अष्टदल करिके शालिग्रामजी कू पधरायके दर्शन खुलें ।
* प्राणायाम करिके संकल्प करनो । तिलक करी तुलसी समर्पनी । बीडा 2 धरने । पंचामृत, शुद्धस्नान कराय श्रीठाकुरजी के जेमनी आडी पधरायके - पीताम्बर, माला धरने । तिलक करनो, बीडा धरने । (अन्य स्वरुपन को तिलक नहीं होवें, सिर्फ माला खेले चंदन सू) तुलसी सबन कू समर्पनी । टेरा आवे ।
* श्रीठाकुरजी के श्रंगार चौक मे बडे होवें । शीतलभोग पास रहे । कुलह, ताईत, बगनखा, कर्णफूल और नकवेसर इतनो श्रंगार रहे ।
* उत्सवभोग सराय शयन के दर्शन खुलें । आरती थाली की होय, रसेले दीवला की ।
* कुलह पर ताईत रहे बाकी बगनखा आदि सब श्रंगार बडे करके सानंद पोढाने ।
* आज सू अनोसर शय्या में पना चालू होय ।
* नृसिंह जयंती के बाद उष्णकाल के अभ्यंग लेने । इतवार, मंगलवार नहीं होंय । शनिवार को होवें हैं ।

वैशाख सुद पूर्णिमा
(श्रीमाधवरायजी महाराज को उत्सव)
साज बदामी । गादी मेहरून मोती की । पलंगडी चांदी की, वापे केसरी अधिकचा आवे ।
वस्त्र नृसिंह जयंती वारे । परचारगी के श्रंगार - कुलह पे 3 चंद्रिका को जोड (मोती के पान पे धरें) (शयन आरती मे फेंटा-परदनी धरें, अनोसर में फेंटा रहे) ।
सामग्री- हांडी, जलेबी, आधा पाटिया । मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया, सब उत्सव की सामग्री ।

जेठ वद 1

साज-वस्त्र सफेद मलमल । फेंटा । कतरा सादा मोरपंख को । मोती की जोडी, हलको श्रंगार । (ठाडे स्वरुपन के फेंटा और आडबंध धरनो)

* आज सू लालन श्रंगार मे टोपी धरें तो ठाडे स्वरुप आडबंध धरें । लालन पाग धरें, तो पिछोडा धरनो । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 2

(चार स्वरुप श्रीनवनीतप्रियाजी के मंदिर में बिराजे सो उत्सव - श्रीदाऊजी महाराज ने पधराये)

(तथा श्रीगोकुलनाथजी महाराज गादी बिराजे उत्सव)

गादी श्याम मोहरा की मोती भरी भई । पलंगडी चंदन की, अधिकचा आवे ।

साज-वस्त्र चंदनी, रुपेरी किनारी के। चंदनी फेंटा, कुण्डल मकराकृत । हीरा की जोडी ।

चंद्रिका बांया कतरा मोरपंख के सादा आवें । श्रंगार खांचापुर, पवित्रा धरें ।

(ठाडे स्वरुपन के फेंटा और पिछोडा) अनोसर में फेंटा रहे । सामग्री- मनोर के लड्डुआ, नित्यनेग

जेठ वद 3

(ऐच्छिक)

साज- नेट, वस्त्र जामदानी । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 4

* आज उष्णकाल को पहिलो अभ्यंग - गोपीवल्लभ मे शिखरनभात को डबरा आरोगें ।

साज-वस्त्र नेट / जामदानी । श्रंगार हीरा की टोपी । जोडी हीरा, एक हार दो माला ।

लालन 2 माला श्रीअंग पर झीनी धरें । ठाडे स्वरुप परदनी धरें, मोती को तिल्लडा ।

सामग्री- राजभोग मे लुचई, और सब नित्यनेग । शयन मे - मीठी रोटी ।

जेठ वद 5

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी मोती । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 6

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 7

(चंदन चोली)

साज-वस्त्र अरगजी मलमल (बिना किनारी के) श्रंगार पाग, मोती को दोहरो कतरा ।

जोडी मोती, श्रंगार हलको । वेणुजी मोती की ।
* राजभोग सरे बाद सब श्रंगार बडे करिके चन्दन सू चोली बनानी, भीनो पिछोडा धरें । वापे फिर सब श्रंगार फूलन के धरें । अब वेणु वेत्र सोना के। श्रीहस्त और चरण मे भी छोटी गोली धरनी ।
* अधकि भोग आवें, शंखोदक-धूप-दीप होय ।
* फेर राजभोग आरती थाली की चांदी के दीवला की होय । संध्या आरती पीछे फूल के श्रंगार तथा चन्दन चोली बडी होवे । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 8
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 9
(यह श्रंगार जेठ वद मे लेनो निश्चित है, दिन निश्चित नहीं है, आगे पीछे ले सकें)
साज-पिछवाई सफेद कमल की ।
मोती की परदनी / आडबंध, मोती की पाग, कतरा मोती को । जोडी मोती,हलको श्रंगार ।
सामग्री-लुचई, नित्यनेग । (देख्यो री हरि नंगम नंगा...यह कीर्तन गबै)

जेठ वद 10
साज-वस्त्र धोयलो (हल्के श्याम-सफेद के बीच को रंग)
श्याम खिडकी की पाग, सफेद मोरपंख को दोहरो कतरा (सुपेद खण्डेला)। श्रीअंग पे 2 माला झीनी, और 3री माला के ठिकाने जनोई धरें। ठाडे स्वरुप आडबंध धरें । जोडी पडा, हलके श्रंगार । सफेद गुंजा ।
* आज शयनभोग आयवे सु पेहेले शीतलस्नान होवें । शीतलस्नान के बाद शयनभोग आवें ।
* शयनभोग मे सतुआ के लड्डुआ, घोरिया सतुआ, दहीभात विशेष आवे ।

जेठ वद 11
साज-पिछ्वाई कदलीवन (चित्रकाम की) वस्त्र अरगजी (बिना किनारी के) ।
अरगजी गोल पाग-कतरा,धोती उपरना। जोडी पडा, हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ वद 12
(श्रीदीक्षितजी महाराज को उत्सव)
साज-वस्त्र केसरी मलमल (रुपेरी किनारी को) श्रंगार पाग, मोती को जमाव कतरा ।
पिछोडा (पटुका राजाशाही)। जोडी मोती की, हलको श्रंगार ।
सामग्री-हांडी-जलेबी, सखडी मे मेवाभात, पीलोभात, सब उत्सव की सामग्री ।

जेठ वद 13
(पीत पिछोरी को सिंगार)

साज सफेद नेट । वस्त्र सफेद धोती, उपरना केसरी । श्रंगार केसरी लटपटी पाग, गोल चंद्रिका मोती की। जोडी पडा, हलका श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
* उत्थापन मे केसरी ओढनी और उपरना बडे करके गुलाबी ओढनी/उपरना धराके दर्शन खोलने।
* भोग के दर्शन मे - पीत पिछोरी कहां जु बिसारी....यह कीर्तन गबै ।

जेठ वद 14
(श्रीगोविन्दरायजी बावा साहब को जन्मदिन)
* दूसरो अभ्यंग - गोपी वल्लभ मे दहीभात को डबरा आरोगें ।
साज-वस्त्र अरगजी केसरी, किनारी के । श्रंगार केसरी दुमाला, मोती को सेहरा ।
धोती उपरना, पटुका अंतवास को धरें । जोडी मोती, भारी श्रंगार- मोती को चंद्रहार, पवित्रा धरें।
मोती की चोटी ठाकुरजी के जेमनी आडी आवे । सामग्री- हांडी, जलेबी । अमरसभात, पीलोभात, सखडी मे सब उत्सव की सामग्री । शयन मे - मीठी रोटी ।

जेठ वद अमावस्य
साज- सफेद कमल को । वस्त्र एवं फेंटा सफेद । कतरा मोरपंख को सादा । श्रंगार हलको ।
हीरा की जोडी । अनोसर में फेंटा रहे । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
* निजमंदिर आदि मे जल भरें । उत्थापन सूं श्रीप्रभु तिबारी में बिराजें ।

जेठ सुद 1
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी । जोडी पडा, हलको श्रंगार । सामग्री, लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 2
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी । जोडी मोती, हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 3
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी । जोडी पडा, हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 4
* तीसरो अभ्यंग - गोपीवल्लभ मे शिखरनभात को डबरा आरोगें ।
साज नेट अथवा जामदानी । वस्त्र सफेद मलमल चंदन की किनारी के । पिछोडा आवे ।
श्रंगार सफेद कुलह चंदन छापा की (छोर नहीं आवें)। जोडी हीरा-मोती के मिलमा आभरण धरें ।

सफेद तीन चंद्रिका को जोड (मोती के पान पे) श्रंगार मध्य को, मोती को चंद्रहार, पवित्रा, कुमुदनी धरें । कुण्डल मकराकृत हीरा के धरें । सींप को कटला ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग । शयन मे - मीठी रोटी ।

जेठ सुद 5
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र गुलाबी (बिना किनारी के)। श्रंगार गुलाबी फेंटा-परदनी, गोल चंद्रिका मोती की ।
जोडी पडा, श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 6
(ऐच्छिक)
साज-सफेद नेट । वस्त्र गुलाबी (बिना किनारी के) । श्रंगार टिपारा मोती को । कतरा-चंद्रिका मोती के । हलको श्रंगार । जोडी मोती की (जाली) । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 7
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र शरबती । श्रंगार पगा (चिन्मा पगा, मतलब छोटो पगा को श्रंगार) । जोडी पडा ।
आडबंध धरें । हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 8
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र नेट । श्रंगार टोपी । जोडी मोती, हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 9
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र गुलाबी । श्रंगार पाग-परदनी, सादी चंद्रिका । जोडी मोती, श्रंगार हलको ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

जेठ सुद 10
(गंगा दशमी)
गादी मेहरून मोती भरी भई ।
साज- कमलवालो (फिरोजी जमीन पर गुलाबी कमल वारो)
वस्त्र- अरगजी (बिना किनारी के) । पिछोडा धरें । श्रंगार केसरी पाग श्याम खिडकी की ।
लूम की कलंगी । जोडी हीरा, श्रंगार हलको । श्रीअंग पे 2 माला आवे, हांस धरें ।
अनोसर मे पाग धरके पोढें ।
* गोपीवल्लभ भोग धरिके भावनाजी सिद्ध होवें । भावनाजी मोती के आभूषण,गुंजा धरें । वस्त्र सारी अरगजी आवे।
* राजभोग आरोगते समय भोगमंदिर मे भावनाजी कू पधरायके 2 माला फूल की आवें । उनकू

2 बीडा धरें, पास मे झारी, फूल को कुंजा, सुहाग को थाल बिराजे । बहू-बेटी मांग भरें और भोग आवें । (श्रीठाकुरजी कू फूल की माला भीतर भोगमंदिर मे नहीं धरें) ।
* राजभोग सरें आचमन मुखवस्त्र होंय, बडो बीडा ठाकुरजी-भावनाजी संग आरोगें । चनपसी मुखिया-भीतरिया भावनाजी के चरणस्पर्श करें । फूल के मालाजी बडे होके शय्या मंदिर मे चौकी पे बिराजें । (संध्या आरती के बाद शय्या मंदिर मे भावनाजी के श्रंगार बडे होंय)।
* राजभोग आरती के लिये निजमंदिर-निजतिबारी में जल भराय । गुलाबजल तथा जमुनाजल पधरानो । (आज जमुनाजी को थाल अलग सु नहीं आवे)।
* श्रीठाकुरजी निजमंदिर मे पधारके फूलमालाजी धरें, चंदन की बरनी, माटी के कुंजा, गुलाबदानी धरें, झारी बंटा राजभोग को सब साज आवे । आरती थाली की होय (चांदी के दीवला की)।
* शयन में चौक मे जल भराय । बडी नाव मे फूलमण्डली में बिराजें। शयन खुलें ।
सामग्री- हांडी, आम को सीरा, आम की बरफी, बीज चारोली के लड्डुआ, मीठो शाक, भुंजो मेवा, चालनी मेवा, लीला मेवा सब तरह के, पना ।
सतुआ की डबरिया । मीठे खाजा, दोनों तरह की सुहारी, दहीभात, सिखरनभात, सादा सीरा, मठडी तथा सब उत्सव की सामग्री ।

<u>जेठ सुद 11</u>
(ऐच्छिक)
साज वडतो, वस्त्र गुलाबी (रुपेरी किनारी के) । धोती-उपरना (पटुका राजाशाही धरें) ।
श्रंगार मोती को खूंप (बिना पंख को मुकुट) । जोडी मोती, श्रंगार मध्य के । श्रीकर्ण मे मयुराकृति कुण्डल सींप के । मोती को चंद्रहार, पवित्रा, कुमुदनी धरें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>जेठ सुद 12</u>
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र चन्दन के छापा के । श्रंगार पाग-पिछोडा को । सफेद मोरपंख को दोहरो कतरा (सुपेद खण्डेला)। जोडी पडा, श्रंगार हलको । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>जेठ सुद 13</u>
साज-वस्त्र अरगजी (हलको केसरी, बिना किनारी को) । खूंट के दुमाला, मोती को सेहरा ।
हीरा की जोडी, बाकी सब मोती को । मकाराकृति कुण्डल हीरा के धरें । चोटी मोती की । श्रंगार मध्य को । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>जेठ सुद 14</u>
साज-वस्त्र गुलाबी तुई वाले । श्रंगार पाग, सादी चंद्रिका । जोडी पडा, हलका श्रंगार । आडबंध ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग।
* गोपीवल्लभ भोग धरके मंदिर मे स्नान यात्रा निमित्त जल भर्यो जाय है ।
* शयन भोग धरके शय्यामंदिर में सूखी हल्दी को अष्टदल मांडके वापे गागर पधराके जल भरनो।
गुलाबजल, जमुनाजल,चंदन,खस, कली, तुल्सीदल सब पधरावने । अधिवासन होवे ।

जेठ सुद पूर्णिमा
(स्नानयात्रा)
गादी मेहरून मोती भरी भई । पलंगडीजी चांदीके, अधिकचा चंदनी ।
* मंगलभोग निजमंदिर मे आवें, निजतिबारी मे एक आडी स्नान की सब तैयारी राखनी ।
* मंगलभोग सराय, श्रीठाकुरजी कू तिबारी मे पधराने, मंगला आरती करनी, टेरा आवें ।
* मंगला आरती पीछे तिबारी मे स्नान को थाल सूखे हल्दी के अष्टदल करके पधरानो ।
वामे स्नान के पट्टा पे कंकू को अष्टदल, वापे वस्त्र बिछावनो कोर कियो भयो।
* स्नान के जल की गागर, पतुवा थाल पास पधरावने ।
* ठाकुरजी को रात्री को श्रंगार विजय करके पट्टा पर पधरावने ।
* दर्शन खुलें...झालर घंटा शंखनाद होंय । श्रीकूं तिलक-अक्षत करिके बीडा धरने । चरण में महामंत्र सहित तुलसी पधरावनी । संकल्प करिके फेर शंख मे भी तुलसी पधरावनी । शंख मे जल लेके स्नान करावनो ।
* स्नान शुरु होंय तब झालर-घंटा शंखनाद बन्द होजावें । कीर्तन चालू रहें । वेदमंत्र के साथ स्नान होवें ।

साज-वस्त्र सफेद चन्दन छापा के । सफेद कुलह (चन्दन छापाकी),पिछोडा, तीन चंद्रिका को जोड (मोती के पान पे धरें) । कुण्डल मकराकृति हीरा के । मोती की जोडी, श्रंगार भारी । (श्रंगार अक्षय तृतीया जैसो) । अनोसर में कुलह रहे ।

सामग्री- आखो पाटिया । वारा सतुआ के लडुआ । आम, फलफूल की छाब ।
हांडी, मीठो शाक, मूंग की अंकुरी, खोपरा की जलेबी, दोनों पना, दोनों दाल, बीज चारोली के लडुआ, आम को सीरा, आम की बर्फी आवे ।
वडी, तिलवडी, पापड-कचरिया, मूंग की दाल पकोडी की कढी और उत्सव की सब सामग्री ।
* आज पंखा नहीं होय । चन्दन की बरनी नहीं आवे, राजभोग मे छिडकाव नहीं होय ।

अषाढ वद 1
साज- सघन कंदरा के चित्र की ।
वस्त्र गुलाबी किनारी के । गुलाबी गोल पाग लटपटी, लूम की कलंगी । मोती की जोडी, श्रंगार हलको । (ठाडे स्वरुप परदनी धरें) सामग्री- आमरस के मनोहर के लडुआ, नित्यनेग ।
* स्नान यात्रा पीछे फूलवारी आवें ।
* सांझ कू तिबारी में चंदन के सिंहासन पर बिराजें ।

अषाढ वद 2
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र शरबती सादा । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुपन के पाग-पिछोडा)

अषाढ वद 3
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र सफेद (छपमा)। श्रंगार टोपी, जोडी मोती । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुपन के पाग-आडबंध)

अषाढ वद 4
चौथो अभ्यंग - गोपीवल्लभ भोग मे सिखरनभात को डबरा आरोगें ।
साज-वस्त्र गुलाबी सादा (बिना किनारी के) धोती (उपरना नहीं) । श्रंगार पाग, सफेद चंद्रिका ।
श्रीअंग पे 2 माला आवे, 3री माला के ठिकाने जनेऊ धरें । हलका श्रंगार- जोडी पडा ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग । शयन मे - मीठी रोटी ।

अषाढ वद 5
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र (उष्णकालिक छपमा) श्रंगार टोपी, जोडी मोती की। सामग्री- लुचई, नित्यनेग
(ठाडे स्वरुप के पाग-पिछोडा)

अषाढ वद 6
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र चंदनिया छपमा । श्रंगार मोती की टोपी, जोडी पडा । सामग्री-लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुपन के पाग-आडबंध)

अषाढ वद 7
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र हलके चंदनी । श्रंगार मोती के क्रीट की टोपी । जोडी मोती,श्रंगार हलको ।
(ठाडे स्वरुपन के पिछोडा धरें) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ वद 8
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र अरगजी (किनारी वारे)। श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुपन के परदनी, पाग - सफेद रेशम को पंख)

अषाढ वद 9
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र गुलाबी मलमल छपमा के । श्रंगार टोपी, जोडी मोती । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
(ठाडे स्वरुपन के पाग-पिछोडा)

अषाढ वद 10

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र सफेद (कमल के चित्रवाला) । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग । (ठाडे स्वरुपन के पाग-आडबंध)

अषाढ वद 11

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र अरगजी मलमल के छपमा । धोती उपरना, पटुका राजाशाही। अरगजी पाग, श्रंगार मोती को सेहरा । (छोर नहीं आवें) कुण्डल मकराकृति मोती के । जोडी मोती, श्रंगार मध्य के- मोती को चंद्रहार, पवित्रा धरें । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ वद 12

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र बदामी मलमल के छपमा । पाग-परदनी, गोल चंद्रिका । जोडी पडा, हलका श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ वद 13

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र हलके चंदनी (बिना किनारी के) । श्रंगार टोपी, जोडी मोती । सामग्री- लुचई, नित्यनेग (ठाडे स्वरुपन के पिछोडा)

अषाढ वद 14

(ऐच्छिक)

साज-वस्त्र फिरोजा सादा । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग । (ठाडे स्वरुपन के पाग-परदनी)

अषाढ वद अमावस्य

साज-वस्त्र अधरंग बिना किनारी के । अधरंग गोल पाग, लूम की कलंगी । हीरा की जोडी, हलको श्रंगार । सामग्री- लुचई, नित्यनेग । (ठाडे स्वरुप आडबंध धरें)

अषाढ सुद 1

साज-वस्त्र गुलाबी (रुपेरी किनारी के) । गोल गुलाबी पाग, सादी चंद्रिका । जोडी मोती की । सामग्री- लुचई, नित्यनेग । (ठाडे स्वरुप परदनी धरें)

अषाढ सुद 2

(रथयात्रा को उत्सव) * कभी तीज कू भी आवे है ।

साज- सुनहरी किनारी के धोरा को ।
श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें । पलंगडी सोने की, अधिकचा कारचौब के आवे ।
ठाकुरजी की गादी हीरा की । दुहेरो अभ्यंग । अंजन, कमलपत्र होवें । वागा धरें । ओढनी झालर की । (ठाडे स्वरुप पिछोडा धरें, ठाडे वस्त्र अरगजी) श्रंगार कुलह, पांच चंद्रिका को जोड (माणिक की तीन पखडा की कलंगी पे धरें) । जोडी माणिक, बाकी सब हीरा के । जडाऊ छोर माणिक के, कुण्डल मकराकृत हीरा के धरें । सिरपेच एक । बाकी सब मिलमा आभरण धरें । भारी श्रंगार - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमल, कटला धरें । चोटी आवे । अनोसर में कुलह रहे ।
(सुबह दुग्दुगी, सांझ कू बगनखा धरें ।)

रथ यात्रा को क्रम :-
* राजभोग साथ पहिलो भोग आवे ।
* राजभोग आरती होके माला बडी नहीं होवे। राजभोग आरती बाद तुरंत रथ को अधिवासन होय
* झालर घंटा शंखनाद होते भये में प्रभु रथ मे बिराजें ।
* दर्शन खुलें (रथ को मुख उत्तर की तरफ होय) । टेरा आवे, माला बडी होय । झारी भराय, दूसरो भोग आवे । शंखोदक, धूप-दीप होय ।
* रथ मे भोग को समय 24 मिनट । भोग सरें आचमन, मुखवस्त्र बीडा धरके । माला धरें, दर्शन खुलें । (बीडी नहीं आरोगें, चौथे दर्शन में ही बीडी आरोगें) ।
* तीसरा भोग भी इसी प्रकार होवे ।
* चौथा भोग में बालभोग, दूधघर की सब सामग्री आवे । दोनों पना, अंकुरी, आम के टोकरा । जमुनाजल की झारी भराय, भोग आवे । शंखोदक, धूप-दीप होय ।
* समय भये पे भोग सरें । दर्शन खुलें, बीडी आरोगें । वेणु-वेत्र धरिके थाल की आरती होय । न्योछावर होय ।
* आरती बाद वेणु-वेत्र बडे करके गोस्वामी बालक, मुखिया-भीतरिया रथ की परिक्रमा करें । पीछे चौक में रथ निज-तिबारी सन्मुख पधारे । टेरा आवें ।
(रथ निज तिबारी आगल पधारे तब राईनोन होंय)

रथ सु उतरिके श्रंगार बडे होवें । शीतलभोग पास रहे । श्रीमस्तक के श्रंगार वैसे ही रहें, सिर्फ तीन पखडा की कलंगी बडी करके पान धरनो । तीन चंद्रिका को जोड। वागा, चोटी और बत्ती के श्रंगार बडे होजावें । ठाडे स्वरुप को पिछोडा, ठाडे वस्त्र बडे होजावे, आडबंध धरें । श्रीअंग पे हांस, बगनखा और 2 माला धरें । गादी पर दो माला लीली मणी, लाल मणी की, पवित्रा, गुंजा, कटला धरें । उत्थापन भोग आवें शयन तक सेवा नित्यवत होय ।
* शयन मे फूल को रथ (बिना गुम्बज को) । आगल पीछे करिके आरती होय ।

सामग्री- मूंग की दाल, पकोडी की कढी, आधो पाटिया ।
सामग्रीः पहिले, दूसरे, तीसरे भोग मे- बूंदी, सकलपारा, दहींबडा, शिखरनबडी, आम, अंकुरी, लीला मेवा, चलनी मेवा, खोपरा की जलेबी ।

सामग्री- चौथे भोग में :- हांडी, बूंदी, सकलपारा, दहींबडा, शिखरनबडी, आम के टोकरा, अंकुरी, बीज चारोली के लडुआ,
लीला मेवा की छाब, चलनी मेवा, दोनों पना, खोपरा की जलेबी, बालभोग, दूधघर की सब सामग्री आवे ।

अषाढ सुद 3

साज-वस्त्र सब वडते । कुलह-तीन चंद्रिका को जोड । आडबंध धरें, हीरा की जोडी । मकराकृत कुण्डल । श्रीअंग पे हांस, बगनखा और 2 माला धरें । गादी पर दो माला लीली मणी, लाल मणी की, पवित्रा, गुंजा धरें । ठाडे वस्त्र और चोटी नहीं आवे । सामग्री- खिचडिया के नग, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 4

(वापी श्रीबालकृष्णलाल-श्रीदाऊदयाल प्रभु को पाटोत्सव)

श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, पलंगडी सोने की, अधिकचा आवे ।
अभ्यंग-उबटना होय । अंजन कमलपत्र ।
साज- केसरी नेट (फूलवाला) । वस्त्र केसरी रुपेरी किनारी के । पिछोडा धरें ।
श्रंगार केसरी कुलह, पांच चंद्रिका को जोड । जोडी माणिक, बाकी सब हीरा को । मकराकृति कुण्डल । 2 सिरपेच । कस्तूरी की माला धरें- जडाऊ चोटी आवे । भारी श्रंगार- चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला आवे । कटला धरें । अनोसर में कुलह रहे ।
* राजभोग मे कुंजा, आपखोरा, गेंद छडी सब साज (सोना) उत्सव को आवे ।
* वापी गृह मे सोना के चकला पे मंगलस्नान (कच्चे दूध और केसरी जल सू), मीना के चकला पे अभ्यंग होय । राजभोग दर्शन मे तिलक होय, बडी आरसी देखें । ठाकुरजी की माला बडी नहीं होय । सिर्फ श्रीआचार्यजी की माला बडी होय । पूरे दिन थाली की आरती होय ।

सामग्री- हांडी । आखो पाटिया । बूंदी के लडुआ को वारा, जलेबी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, तिनकुडा, पापड-कचरिया । दूधघर को साज, अनसखडी, सखडी सब सामग्री जन्माष्टमी उत्सव वत ।

अषाढ सुद 5

(श्रीमन्मथरायजी महाराज को जन्मदिन / श्रीमुकुन्दरायजी महाराज को उत्सव)

साज-वस्त्र केसरी रुपेरी किनारी के । श्रंगार केसरी छज्जेदार पाग, केसरी दोहरो कतरा ।
हीरा के आभरण - हलको श्रंगार । (ठाडे स्वरुप सूथन पटुका धरें, ठाडे वस्त्र गुलाबी) ।
* सांझ कू फूल के श्रंगार धरें । फूल की सांगामाची पे बिराजें ।
सामग्री- आधो पाटिया । हांडी, जलेबी, बूंदी के (बडे) लडुआ, मेवाभात, मूंग की दाल पकोडी की कढी, सब उत्सव की ।

अषाढ सुद 6

(कसुंबा छठ)

* आज सूं लाल रंग साज-वस्त्र, फूलघर की सेवा मे शुरु होय ।

साज-वस्त्र कसूमल रुपेरी किनारी के । कसूमल पाग,सादी चंद्रिका । 4 कर्णफूल-श्रंगार भारी। मोती की जोडी, मोती को चंद्रहार धरें। (ठाडे स्वरुप के कसूमल पिछोडा, ठाडे वस्त्र सफेद धरें)।
* भोग संध्या आरती मे, डोल तिबारी मे लाल साटन के कसूंबी बंगला में बिराजें । उत्सव भोग धरनें, संध्या भोग के साथ आवे । शंखोदक, धूप-दीप होय । बीडा धरके दर्शन खुलें, थाली की आरती (कुमकुम सू कसूम्बी बंगला बनी भई), न्योछावर होय ।
* आज विशेष शयन के दर्शन बाहर कमल पर बिराजके खुलें (अधकि के बीडा पास बिराजें)। माला को जोड रंगबिरंगी, थाली की आरती कुम्कुम के अष्टदल वाली। न्योछावर होय ।

सामग्री - आधो पाटिया, खीर, नित्यनेग ।
उत्सव भोग में - दही के सेव के लडुआ, बूंदी, फीका, मैदा पूरी, मीठो शाक, बिल्सारू, चलनी मेवा, लीला मेवा ।

अषाढ सुद 7
साज- जंगली छापा को । वस्त्र गुलाबी । श्रंगार टोपी, मोती के आभरण- श्रंगार हलको ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 8
साज-पिछवाई छींट के हाथी वाली । वस्त्र सफेद, हरे हांसिया के । श्रंगार टिपारा, खांचापुर ।
(ठाडे स्वरुप मल्लकाछ धरें, ठाडे वस्त्र अरगजी) मयूराकृत कुण्डल, जोडी माणिक ।
* सांझ कू फूल को श्रंगार मल्लकाछ-टिपारा को होय । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 9
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र पीले (अरगजी) रूपेरी किनारी के । श्रंगार पाग-पिछोडा, मोती की गोल चंद्रिका ।
मोती के आभरण, श्रंगार हलको । (ठाडे वस्त्र नहीं धरें) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 10 - (बेंगन दशमी)
साज-वस्त्र मलमल पीले फूलवाले । श्रंगार टोपी, जोडी पडा । श्रंगार हलको ।
* बेंगन आज तांई आरोगें ।
सामग्री- बैंगन भरता, बैंगन के भजिया-भुजैना, बैंगनभात, बैंगन के शाक, चीरी तथा बेंगन की सब सामग्री आवें । नित्यनेग ।

अषाढ सुद 11
साज-वस्त्र सफेद, गुलाबी हांसिया के। श्रंगार मोती को मुकुट । कुण्डल मयुराकृत, श्रंगार भारी ।
(ठाडे स्वरुप काछनी, रास पटुका धरें, ठाडे वस्त्र सफेद) जोडी आभरण मोती के ।
* सांझ कूं फूल के मुकुट-काछनी के श्रंगार धरें । आज छेल्लो फूल को श्रंगार ।
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 12

साज-वस्त्र खसखसी । श्रंगार टोपी, हलको श्रंगार । जोडी पडा । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
ठाडे स्वरुप आडबंध धरें । * आजसूं ठाडे वस्त्र धरने बन्द ।

अषाढ सुद 13

साज-वस्त्र सफेद हांसिया के । श्रंगार पाग, सादी चंद्रिका । जोडी मोती, श्रंगार हलको ।
ठाडे स्वरुप आडबंध धरें (आज छेल्लो आडबंध)। सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद 14

साज-वस्त्र सादा सफेद मलमल के (बिना किनारी के)। श्रंगार फेंटा, मोरपंख को इकहरा कतरा।
जोडी पडा, हलको श्रंगार । ठाडे स्वरुप परदनी धरें (आज छेल्लो परदनी को सिंगार)
* राजभोग दर्शन सू भोग-संध्या तांई तुलसी की वनमाला धरें ।
सामग्री-लुचई, नित्यनेग ।

अषाढ सुद पूर्णिमा
(कचौडी पूनम / गुरुपूर्णिमा)

साज-ब्रजभक्तन (गोपी वालो) चित्र को । गादी मेहरून मोती भरी भई । पलंगडी चांदी की, अधिकचा आवे ।
* आज से मंगला मे ठाडे स्वरुप उपरना धरें ।
* आज सूं चन्दरवा, परदा, पंखा इत्यादि रंगीन चढे ।
* चन्दन की बरनी मे रंगीन वस्त्र चढे। कुंजा-तूत्यान मे कलात्मक फूल-पत्ती की बेल आदि आवे।
वस्त्र लाल एकदाली चुनरी के । श्रंगार मोती या सींप को मुकुट । श्रंगार भारी, जोडी मोती/पडा के मिलमा । कुण्डल मयुराकृत, चोटी नहीं धरें । मोती को चंद्रहार, पवित्रा, कुमुदनी (नीलकमल माला) धरें । (ठाडे स्वरुप चोली धरें नहीं, काछ्नी लाल-मेघश्याम चुनरी की, लाल चुनरी को पटुका अंतवास को, ठाडे वस्त्र सफेद आवें)
* भोग के दर्शन में सिंहासन तिबारी में आवे । शयन सांगामाची पे खुलें ।
अनोसर में चुनरी की गोल पाग धरिके पोढें ।
सामग्री- आधा पाटिया, हांडी, मूंग की दाल की कचौडी आरोगें । अनसखडी मे मीठी कचौडी । मूंग की दाल, पकोडी की कढी, बाकी सब नित्यनेग ।
* आज सूं दहीभात, सिखरनभात, सतुआ सब बन्द ।
* आज सूं टोपी को श्रंगार बन्द ।

नोंध :- हिंडोला सावन वद 1 कूं होंय तो उष्णकाल की विदागिरि (वनमाला) अषाढ सुद 14 कू होवे ।
और यदि हिंडोला बीज सूं प्रारंभ होंय तो एकम के दिन सफेद वस्त्र, टोपी के हलके श्रंगार धरने ।

सावन वद 1
(हिंडोरा बिराजवे को उत्सव)

साज- लाल साटन को धोरा वारो । श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होंय, पलंगडी सोना की अधिकचा आवे । श्रीठाकुरजी की गादी हीरा की ।
अभ्यंग । वस्त्र कसूमल सुनहरी किनारी के । पाग कसूमल, सादी चंद्रिका ।
कर्णफूल 4, हीरा की जोडी । श्रंगार भारी दुहेरा - चंद्रहार, जूही, कली, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
ठाडे वस्त्र पीले । अनोसर में पाग धरिके पोढें । आज सब साज-खिलोना सोना के ।
* आज से श्रंगार पिछोडा ऊपर शुरु, आज से ठाडो वस्त्र शुरु ।
* आज से आखो महिना भोग-आरती साथे होय । डबरा आरोगके हिंडोला में बिराजें ।
* हिंडोला झूलिके श्रंगार बडे होंय, मुख्य स्वरुप कूं 4 झोंटा हिंडोला मे देके शयनभोग आरोगावे पधरानो ।
* हिंडोरा आरंभ सूं हिंडोरा विजय तांई शयन मे ताईत धरें ।
* आज सूं माला को जोड आधो होय ।

हिंडोरा में बिराजवे को प्रकार :- एकम या दूज को श्रेष्ठ चंद्रमा देख के श्री कूं हिंडोरा में पधरावने । डबरा आरोगायके, हिंडोरा रोप के अधिवासन करनो । झारी-बीडा पधरावने । झालर घंटा बजते भये में प्रभु हिंडोरा में पधारें । थोडो झुलाय के आज विशेष में भोग आवें । यथासमय भोग सरें, दर्शन खुलें । कीर्तन चार होवें - जामें पहिले दो कीर्तन की चलती में हिंडोरा छोड देनो (झुलानो नहीं), तीसरे और चौथे कीर्तन की चलती भी झुलें ।

सामग्री- आखे दिन बूंदी के लडुआ को वारा । आधा पाटिया । मूंग की दाल, पकोडी की कढी बाकी सब नित्यनेग ।
उत्सवभोग मे- बूंदी, सकलपारा, हांडी, चालनीमेवा, मीठो शाक, दहीबडा आवे । शंखोदक-धूप-दीप होय ।

<u>सावन वद 2</u>
साज पीले साटन पर किनारी के लहेरिया को ।
पीले वस्त्र - पीली गोल पाग, सादी चंद्रिका । माणक की जोडी - 4 कर्णफूल । श्रंगार भारी दुहेरा - चंद्रहार, पवित्रा धरें । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र लाल) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>सावन वद 3</u>
साज- सोसनी (बैंगनी/जांबली) साटन को धोरा को ।
वस्त्र और कुलह सोसनी, सोनेरी जोड चमकनो । हीरा के आभरण, मकराकृत कुण्डल । श्रंगार भारी इकहरा । चंद्रहार, पवित्रा धरें । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र हरे)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>सावन वद 4</u>
साज हरे साटन को लाल हांसिया को ।

हरे वस्त्र, हरी पाग - कतरा जमाव को चमकनो । माणक के आभरण - श्रीकर्ण मे कर्णफूल धरें। श्रंगार मध्य को । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र लाल) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 5

साज अमरसी साटन अथवा अमरसी लहेरिया को ।
वस्त्र अमरसी (लहेरिया)। पाग छज्जेदार- फेंटा को सिंगार, चंद्रिका कतरा चमकने । श्रीकर्ण मे लोलकबंदी धरें, फिरोजा की जोडी । श्रंगार मध्य को । (ठाडे स्वरुप के सूथन पटुका, ठाडे वस्त्र श्याम) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 6

साज/वस्त्र - गुलाबी (रुपेरी किनारी के)। गुलाबी खूंट को दुमाला, हीरा को सेहरा । मकराकृत कुण्डल, श्रंगार भारी इकहरो । जोडी हीरा की । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा-पटुका, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 7

साज- श्याम । वस्त्र श्याम मलमल (सोनेरी किनारी के) । श्रंगार ग्वाल पगा, सोनेरी चमकनी चंद्रिका । श्रीकर्ण मे लोलकबंदी धरें- जोडी आभरण सब सोना के । श्रंगार मध्य को ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र लाल) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 8

(जन्माष्टमी की बधाई बैठे)

साज केसरी धोरा को । श्रीआचार्यजी की पलंगडी पे अधिकचा केसरी आवे ।
केसरी मलमल के वस्त्र । कुलह केसरी, पांच चंद्रिका को जोड । कुण्डल मकराकृत ।
जोडी आभरण सब हीरा पन्ना के मिलमा । श्रंगार भारी इकहरा, चोटी धरें ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र मेघश्याम) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 9

साज-वस्त्र पचरंगी लहेरिया के । छज्जेदार पाग, कतरा चमकनो जमाव को ।
4 कलंगी /4 कर्णफूल धरें । नवरत्न के आभरण, श्रंगार भारी - चंद्रहार, पवित्रा धरें ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र हरे)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 10

(तिलकायत श्रीगोर्धनेशजी कृत हांडी उत्सव)

साज-पिछ्वाई : लाल श्याम हासिया की, जाल की ।

गुलेनार वस्त्र | रुपेरी डांक को मुकुट, मकराकृत कुण्डल । चोटी नहीं धरें। हीरा के आभरण, श्रंगार भारी दुहेरा - चंद्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । (ठाडे स्वरुप के काछनी और गाती को उपरना गुलेनार, ठाडे वस्त्र सफेद)। सामग्री- जलेबी, नित्यनेग ।
* आज डोल तिबारी मे रंग-बिरंगी कांच को हिंडोरा झूलें तथा हिंडोरा के आस पास रंग-बिरंगी कांच की हांडी-झूमर की रोशनी होय । हिंडोरा के पीछे और आस पास बडे दर्पन आवें ।

सावन वद 11

साज-वस्त्र गुलाबी मलमल के । श्रंगार गुलाबी वस्त्र को टिपारा । चंद्रिका कतरा चमकने । कुण्डल मकराकृत, जोडी फिरोजा की । श्रंगार मध्य के- चंद्रहार, पवित्रा धरें । चोटी नहीं आवे । (ठाडे स्वरुप के दोहरे मल्लकाछ, पटुका तथा ठाडे वस्त्र मेघश्याम) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 12

साज-वस्त्र- भूपालसाही लहेरिया के । श्रंगार जडाऊ को मुकुट, मयुराकृति कुण्डल । जोडी माणिक की, बाकी सब आभरण गुलाबी मीना के । (ठाडे स्वरुप के गोल काछनी, रास पटुका और ठाडे वस्त्र सफेद) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 13

साज- लहेरिया । श्याम-पीले लहेरिया के वस्त्र । फेंटा को सिंगार, चंद्रिका और बायों कतरा ऐच्छिक । श्रीकर्ण मे लोलकबंदी धरें । फिरोजा के आभरण, श्रंगार मध्य के । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र लाल) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद 14

साज-वस्त्र लहेरिया । श्रंगार गोल पाग, कतरा चमकनो ऐच्छिक। श्रंगार मध्य के । जोडी हीरा की, बाकी सब आभरण नीलम हीरा के मिलमा । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र पतंगी) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन वद अमावस्य

(हरियाली अमावस्य)

साज- हरो (सोनेरी किनारी के धोरा को) । चंदरवा, दिवालगिरि सब हरे चढें ।
श्रीआचार्यजी के पलंगडी सोना वापे हरो अधिकचा आवे ।
श्रीठाकुरजी की गादी हरे मीना की । गादी, तकिया, शय्याजी के अधिकचा, मूढाजी सब हरे ।
हरे धोरा किनारी के वस्त्र, इकनगा पन्ना को मुकुट, पन्ना के आभरण - मकराकृत कुण्डल ।
श्रंगार भारी - चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । चोटी पन्ना की आवे ।
(ठाडे स्वरुप के काछनी-पटुका, ठाडे वस्त्र सब हरे) । अनोसर मे हरी पाग धरिके पोढें ।
* खंड के खिलोना, गेंद-छडी, बंटा-झारी सब सोना के आवें ।
* राजभोग सू संध्या आरती तांई निजतिबारी मे बिराजें । राजभोग आरती थाली की होय ।
* आज हरियाली के हिंडोला झूलें । हरियाली के हिंडोला में शयन नहीं झूलें ।

* दूसरे दिन हरियाली के हिंडोला मे मंगला झूलें ।
सामग्री- मंगलभोग, राजभोग, शयनभोग मे पिस्ता की बर्फी ।
दोपहर के अनोसर मे पिस्ता को मेहसुख और मगफडफडिया । पूरे दिन को वारा हरे मगज को ।
बाकी सब नित्यनेग ।

सावन सुद 1
साज-वस्त्र हरे, लहेरिया के । श्रंगार पाग, कतरा चमकनो ऐछिक । श्रंगार मध्य को ।
जोडी माणिक । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र कत्थई) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन सुद 2
साज-वस्त्र प्रतापसाही लहेरिया के ।
लहरिया को पगा, फिरोजा की जोडी । श्रंगार खांचापुर - पवित्रा धरें ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र पीले) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन सुद 3
(ठकुरानी तीज)
साज- लाल चौफुली चुनरी को ।
श्रीआचार्यजी के श्रंगार होवें, लाल अधिकचा आवे । शईयाजी के भी अधिकचा लाल ।
श्रीठाकुरजी की गादी हीरा की । अभ्यंग-अंजन होंय ।
लाल चौफुली चुनरी के वस्त्र, श्रंगार चुनरी की पाग, सादी चंद्रिका । 4 कर्णफूल धरें ।
आज साल मे एक दिन पाग पे चोटी आवे । हीरा के आभरण, भारी श्रंगार - चंद्रहार, वल्लभी, कमलमाला धरें । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र पीले) ।
* आज रात के अनोसर में शईयाजी झूलती रहे । शईया मंदिर मे हांडी प्रगटे ।
सामग्री- आधो पाटिया । हांडी, बूंदी के लडुआ । चिरोंजी के लडुआ, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।
दिन के अनोसर में केसरी गूंजा दूधघर के तथा रात के अनोसर में चन्द्रकला पास रहे ।

सावन सुद 4
साज-वस्त्र श्याम एकदाली चुनरी के वस्त्र । गोल पाग, चमकनो कतरा, गुलाबी मीना के आभरण ।
श्रंगार मध्य के । सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन सुद 5
(नागपंचमी)
पलंगडी पे अधिकचा आवे । श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की ।
साज-वस्त्र कोयली (सोनेरी किनारी के)। श्रंगार कोयली पाग (सोनेरी बाहर खिडकी की), नागफनी को कतरा । 4 कर्णफूल । जोडी हीरा, भारी श्रंगार - बडो चंद्रहार और पवित्रा धरें । श्रीअंग पे भी सोना की कंठी धरें । अनोसर मे पाग पे सू सोनेरी बाहर खिडकी बडी होयके, कोयली पाग धरिके पोढें ।

(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र लाल)
* आज मोती के हिंडोला झूलें ।
* आज शयन मे हिंडोला नहीं झूलें ।
सामग्री- वारा सेव के लडुआ ।
आधा पाटिया, हांडी । मूंग की दाल, पकोडी की कढी, सेव की खीर, मोरस को शाक, सखडी मे सीरा आवे ।

सावन सुद 6
साज/पिछवाई- लाल बाग के चित्र की ।
वस्त्र धनक के लहरिया के, डांक को मुकुट । हीरा-पन्ना के आभरण, कुण्डल ।
श्रंगार भारी इकहरा। (ठाडे स्वरुप के काछनी-पटुका, ठाडे वस्त्र सफेद)
सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

सावन सुद 7
साज-वस्त्र अमरसी, पाग को सिंगार, फिरोजा के आभरण, मध्य को सिंगार ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र कत्थई) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

सावन सुद 8
(श्रीबालकृष्णजी तात उत्सव)
साज पीरो मखमल । वस्त्र पीली चुनरी (लाल टिपकी के) श्रंगार कुलह पे रुपेरी जोड चमकनो ।
कुण्डल मयुराकृत । जोडी माणिक, भारी श्रंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें ।
पुखराज को कटला । चोटी धरें ।
सामग्री- हांडी, बूंदी के लडुआ, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, बाकी सब नित्यनेग ।

सावन सुद 9
(बगीचा उत्सव)
साज/पिछवाई- लाल बाग के चित्र की । पलंगडी पे अधिकचा आवे ।
श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की ।
वस्त्र गुलेनार (सोनेरी किनारी के लहेरिया के)। श्रंगार जडाऊ के मुकुट को (उकसते मोर वालो) जोडी हीरा की - चोटी आवे, कुण्डल मयुराकृत धरें । भारी श्रंगार दुहेरा - चंद्रहार, पवित्रा, कमलमाला धरें । (ठाडे स्वरुप के काछनी, गाती को उपरना तथा ठाडे वस्त्र सफेद) ।
सामग्री- मनोर के लडुआ को वारा, नित्यनेग ।

बगीचा को प्रकार :- सांझ कू डबरा आरोगायके बगीचा को अधिवासन होय । शंखोदक-धूप-दीप, चार बत्ती की आरती होय । पगमंडा मण्डे । झालर-घंटा-शंखनाद होते भये मे श्रीठाकुरजी कू बगीचा मे पधरावने । आज प्रभु बगीचा मे मचकि झूलें ।
बगीचा में उत्सव-भोग आवें, शंखोदक-धूप-दीप होय ।

बगीचा के उत्सव भोग मे दूधघर मेः- केसरी-सफेद बर्फी - पेडा । केसरी-सफेद खोपरापाक, दोनों बासौंदी,दोनों प्रकार के दही, हांडी, मीठो शाक, माखन-मलाई, बूरा मलाई पूडी, खोवा (पागेला मेवा नहीं आवें)।
अनसखडी मे :- चंद्रकला, दहीबडा, सिखरनबडी, छाछबडा, संजाब की खीर, गुंजा मेवा, चलनी मेवा, कच्चे-पक्के संधाना, लीला मेवा, बूंदी-सकलपारा, बूरा भुरकी।

यथा समय भोग सरें । दोहरे बीडा आरोगें । पेंडा मे बहुजी बेटीजी झुलावें । बीडा की सिखोरी साजके, दर्शन खुलें । तीसरे पद में आरती होय । तीन उपरना न्योछावर होवे । चौथे पद में खुले दर्शन श्रीठाकुरजी कू नित्य के हिंडोला में पधरावने । टेरा आवे ।
नित्य के हिंडोला मे नयो झूमर बंधे, नई माला धरें । झारी नई भराय और दर्शन खुलें ।
दो पद झूलें, फिर टेरा आवे । आगे की सेवा नित्य प्रमाण सू ।

<u>सावन सुद 10</u>
साज-वस्त्र लाल सादा (किनारी के) लाल गोल पाग पे सादी चंद्रिका । 4 कर्णफूल ।
जोडी पन्ना की । श्रंगार मध्य के - चंद्रहार, पवित्रा धरें । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा, ठाडे वस्त्र पीले)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

<u>सावन सुद 11</u>
<u>(पवित्रा ग्यारस)</u>
साज- सफेद किनारी के धोरा को । (राखी तांई आवे)
पलंगडीजी पे अधिकचा कारचौब के आवें । श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की ।
वस्त्र सफेद मलमल के (केसर सू छपे भये), श्रंगार कुलह पे तीन चंद्रिका को जोड, तीन पखडा की कलंगी पे धरें । जोडी माणिक, चोटी नहीं धरें । भारी श्रंगार - जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें ।
अनोसर में कुलह रहे । (आज सू राखी तक श्रंगार मे त्रवल नहीं आवे)
सामग्री- सकलपारा को वारा । हांडी, मूंग की दाल, पकोडी की कढी, उत्सव की सामग्री ।
उत्सव भोग मे - केसरी-सफेद मिश्री, सकलपारा, दहीबडा, मनोहर के लडुआ ।

पवित्रा धरिवे को प्रकार -
* पवित्रा-राखी को भेलो अधिवासन होय । टिप्पणी देख कर अमयानुसार पवित्रा धरें ।
* पवित्रा धरते समय श्रीठाकुरजी निज-तिबारी मे सिंहासन पे बिराजें । खण्ड लगे -खिलोना आवें । मिश्री के कटोरा सिंहासन उपर ढांक के धरने ।
* डबरा आरोगके पवित्रा/राखी को अधिवासन होय । फेर झारी भरें, बीडा धरें, माला धरें और दर्शन खुलें । नेग के पवित्रा धरत समय झालर-घंटा शंख बजते मे ठाकुरजी कू पवित्रा धराने ।
* दण्डवत करिके रेशमी पवित्रा, फेर फूलवारो, फेर सोनेरी-रूपेरी और बादला धरनो ।
फेर लड्डु धरें । तुलसी समर्पनो । श्रीफल भेंट होय । झालर घंटा राखने ।
* अन्य बालक बहूजी-बेटीजी पवित्रा धरें । फेर चनपसी मुखिया भीतरिया यथा अधिकार सब जनें पवित्रा धरें । टेरा लेके उत्सव भोग धरने ।

* आज शयन नहीं झूलें ।
* राखी तांई नित्य पवित्रा धरें ।

सावन सुद 12

(पवित्रा बारस - गुरुन कू पवित्रा धरने) - (श्रीगोपीनाथजी महाराज तात उत्सव)

साज - पवित्रा (चित्रकाम को), श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की ।
* श्रीमहाप्रभुजी के पलंगडीजी जागते ही पवित्रा धरें ।
* फेर श्रंगार सू हिंडोला तांई श्रीठाकुरजी एवं श्रीमहाप्रभुजी नियम के पवित्रा धरके बिराजें ।
* श्रंगार मे आज आभरण के बिच बिच मे पवित्रा धरें ।
* आज गोस्वामी बालक, मुखिया-भीतरियान कू पवित्रा पहनके हिंदोला झुलाने ।
वस्त्र- गुलाबी मलमल तुईवारे । श्रंगार मुकुट काछनी, जोडी आभरण सब पन्ना के -
चंद्रहार, जूही, कली,वल्लभी, कमलमाला धरें । कुण्डल मयुराकृति आवें । चोटी नहीं धरें ।
(ठाडे स्वरुपन के गुलाबी रास पटुका-काछनी धरें तथा ठाडे वस्त्र सफेद)
सामग्री- हांडी, सेव के लडुआ । आधा पाटिया, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

सावन सुद 13

(चतुरा नागा उत्सव - कंटोला तेरस)

श्रीठाकुरजी के गादी सोना की ।
साज-वस्त्र पतंगी लहेरिया । श्रंगार पाग- सादा चंद्रिका । 4 कर्णफूल । जोडी फिरोजा की, मध्य को सिंगार - चंद्रहार, पवित्रा धरें । आभरण के बिच-बिच रंगीन पवित्रा लेने और फेर गादी पे नियम के सब पवित्रा आवें । (ठाडे स्वरुपन के पिछोडा और ठाडे वस्त्र लाल)
* शयन मे कांच के कटोरी के हिंडोला झूलें । बगीचा आवे ।
सामग्री- हांडी, आधा पाटिया,राजभोग मे कंटोला, कठोल के शाक, सीरा अवश्य आवे ।
पकोडी की कढी । बाकी सब नित्यनेग ।

सावन सुद 14

(तिलकायत श्रीविट्ठलेशरायजी टिपारावारेन को उत्सव)

पलंगडीजी पे अधिकचा आवे ।
साज- खीनखाब को (टुकडा वालो), श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की ।
वस्त्र- पीरी चुनरी (एकदाली), श्रंगार कुलह पे सोनेरी जोड चमकनो। जोडी माणिक, मकराकृति कुण्डल, मध्य को श्रंगार- चंद्रहार, जूही, वल्लभी, कमलमाला धरें । त्रवल और चोटी नहीं धरें ।
गादी पे नियम के पवित्रा आवें । (ठाडे स्वरुपन के पिछोडा तथा ठाडे वस्त्र लाल)
अनोसर में कुलह रहे ।
सामग्री- हांडी, बूंदी-जलेबी को वारा । आधा पाटिया, मूंग की दाल, पकोडी की कढी ।

सावन सुद पूर्णिमा

(रक्षाबंधन तथा श्रीगिरिधरजी के पुत्र श्रीदामोदरजी को उत्सव)

* श्रीमहाप्रभुजी के श्रंगार होवें, पलंगडीजी पे अधिकचा आवे । श्रीठाकुरजी के गादी हीरा की । आधी सफेदी के तकिया ।
साज - खीनखाब को (बूटा को)
वस्त्र गुलेनार । श्रंगार पाग- सादी चंद्रिका । जोडी हीरा की - चार कर्णफूल धरें । राखी पे 5 हार हीरा के आवें । भारी श्रंगार- चंद्रहार, जूही,वल्लभी, कमलमाला धरें।
गादी पे नियम के पवित्रा आवें । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा तथा ठाडे वस्त्र पीले)
सामग्री- आखो पाटिया । हांडी-जलेबी, गुडपापडी , मूंग की दाल, पकोडी की कढी, दही बडा आवे

राखी धरवे को प्रकार -
* राखी सवेरे होय तो हिंडोला मे धर सकें, श्रंगार मे धर सकें, ग्वाल मे धर सकें ।
* शाम की राखी होय तो भोग मे धरें ।
* दण्डवत करके, झालर-घंटा-शंख बजते भये मे राखी धरें ।
तिलक होवे । दोनों श्रीहस्त मे राखी धरें । बीडा धरने, चरणारविंद मे राखी को गुच्छ समर्पनो । चरण मे तुलसीजी समर्पनी । * राखी धरते समय गुलाब-कतली पास मे छन्ना सू बांधके रहे । राखी मे आरती नहीं होय ।
* यदि राखी हिंडोला मे धरनी होय तो सोना के अथवा सुरंग हिंडोला मे ही धरनी ।
* श्रंगार बडे होवे तब दोनों श्रीहस्त मे नई राखी धरायके शयनभोग आरोगें । शयन झूलें ।

भादों वद 1

(हेम हिंडोला)

साज- सेवा करते भये ठाडे गोपीजन (चित्रकाम को)
वस्त्र- केसरी मलमल के रुपेरी किनारी के । श्रंगार हीरा को मुकुट, हीरा के आभरण । मयुराकृति कुण्डल, भारी श्रंगार - चंद्रहार, कली, पवित्रा, कमलमाला धरें । आज सू त्रवल धरें। आज अलक धरें, चोटी नहीं आवे । (ठाडे स्वरुप के सूथन, काछनी, गाती को उपरना केसरी तथा ठाडे वस्त्र सफेद) ।
* आज हेम हिंडोला (सोना को हिंडोला झूलें) । आस पास बडे दर्पन-आरसी आवें ।
* हिंडोला मे भोग आरोगें अधकि के । हांडी, दूधघर और अनसखडी के गूंजा, बूंदी-सकलपारा, लीला मेवा की छाब ।
* हिंडोला मे 8 पद गबैं । 4 पद भोग आरोगते समय और 4 सन्मुख मे झूलते मे ।
सामग्री- बूंदी के लड्डुआ को वारा तथा नित्यनेग ।

भादों वद 2

(हिंडोला विजय)

साज-वस्त्र-श्रंगार सब हिंडोला प्रारंभ वारे दिन को ।

हिंडोला विजय को प्रकार -
* हिंडोला विजय जो सवेरे के होय तो श्रंगार दर्शन ही हिंडोरा के होंय ।
वेणु धराय, आरसी दिखाय हिंडोरा मे पधारें । फेर सन्मुख चार पद होंय गोविन्दस्वामी के ।
* हिंडोरा सांझ के होंय तो हिंडोरा के दर्शन मे विजय होय ।
सन्मुख चार पद होंय गोविन्दस्वामी के ही होंय।
चौथे पद की समाप्ती पे वेणु-वेत्र धरें फेर चून के दीवला की आरती होय । वेणु-वेत्र बडे करिके समस्त गोस्वामी बालक, मुखिया-भीतरिया हिंडोला की चार परिक्रमा करें, दण्डौत करनी । खुले दर्शन मे लालन कू पधरावने । आगे सेवा नित्यक्रम वत होय ।
सामग्री - लुचई, नित्यनेग ।

भादों वद 3
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र गुलाबी लहेरिया । श्रंगार पाग, गोल चंद्रिका । जोडी फिरोजा की - हलको श्रंगार ।
(ठाडे स्वरुप के धोती,कटी पे राजाशाही पटुका गुलाबी और ठाडे वस्त्र लाल)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

भादों वद 4
(ऐच्छिक)
साज-वस्त्र पीले लहेरिया । श्रंगार पाग-कतरा । आभरण नीलम के, हलको श्रंगार ।
(ठाडे स्वरुप के पिछोडा तथा ठाडे वस्त्र कत्थई) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

भादों वद 5
(आपके श्रंगार आरंभ)
साज-वस्त्र लाल चौफुली चूनरी के । श्रंगार चुनरी की गोलपाग, लूम की कलंगी । हलको श्रंगार, जोडी हीरा की । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा और ठाडे वस्त्र हरे) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।
* गोपीवल्लभ भोग आये बाद डोल तिबारी मे श्रीठाकुरजी के वस्त्र के थान केसर-बरास सू रंगे जाएँ । वस्त्र रंगते समय शाकघर वारे वैष्णव बधाई गावें तथा बाहर नौबत बजे ।

भादों वद 6
साज-वस्त्र हरे सफेद लहेरिया को । श्रंगार पाग, कतरा सोनेरी ज़री को चमकनो । श्रंगार हलको, जोडी माणिक । (ठाडे स्वरुप के पिछोडा और ठाडे वस्त्र लाल) सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

भादों वद 7
(छट्ठी को उत्सव)
साज-वस्त्र लाल मलमल के किनारी वारे । श्रंगार पाग-सादी चंद्रिका, जोडी हीरा की ।
4 कर्णफूल । श्रंगार मध्य को। (ठाडे स्वरुप के पिछोडा तथा ठाडे वस्त्र पीले)
सामग्री- लुचई, नित्यनेग ।

* आज पीछे छुकमा भिजवा दाल बन्द ।
* कुंजा, तूत्यावंद, चंदन की बरनी सब बन्द ।
* दोपहर कू हिंडोला खाट बन्द । बाहर पोढनो बन्द ।

छट्ठी को प्रकार :-
* सप्तमी के दिन सांझ कू छट्ठी के मध्य मे साथिया मंडे और श्रीठाकुरजी शयन भोग मे सौंठ की भूकी, खाजा, सीरा, तुरिया पकोडी को शाक, पूडी, हांडी, चंद्रकला, बिल्सारू तथा बासौंदी आरोगें । छठी कू प्रसादी भोग आवे ।
* अष्टमी कू छट्ठी के आगे चना की दाल की चावल मिलमा खिचरी पे दीपक धरें, छठी सू टिकाके रई, लठिया, बंसी, तलवार धरि राखें । प्रसादी नग के छबडा भोग आवें । छट्ठी के ऊपर एक कील पर सू केवडा कंडीर तथा वंदनमाल तिकोणी धरनी ।
* नवमी कू सबेरे गोस्वामी बालक तथा नन्दरायजी संग बैठके छट्ठी को पूजन, वसोधारा करें। फेर नन्दमहोत्सव के लिये नन्दरायजी कू हाथ पकड के चौकी पर बिठावें । जसोदाजी कू भी हाथ पकड के पलना पास पधराने । जसोदाजी माला-पीताम्बर धरें, भेंट न्योछावर करें फिर पलना झुलावे बिराजें । सब गोस्वामी बालक, बहूजी बेटीजी जसोदाजी सू आज्ञा मांगके ठाकुरजी कू पीताम्बर धरें, भेंट न्यौछावर करें । नन्दरायजी कू तिलक, अक्षत करिके, चंदन और दूर्वा सू दही छांट के पूजन गोपी-ग्वाल करें । फेर नन्दमहोत्सव आरंभ होय !